॥ ओ३म् ॥

वैदिक संसार

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

वर्ष-६ | अंक-७ | मासिक-हिन्दी | मई-२०१७ | इन्दौर(म.प्र.) | मूल्य-२५/- | कुल पृष्ठ-४४

आर्य समाज क्रान्तिकारियों की जननी है...

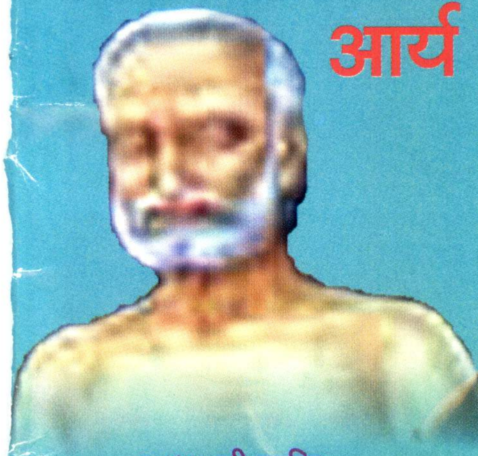

१८५७ की क्रान्ति
के महानायक
गुरु विरजानन्द जी

स्वराज्य के
प्रथम प्रणेता
स्वामी दयानन्द सरस्वती

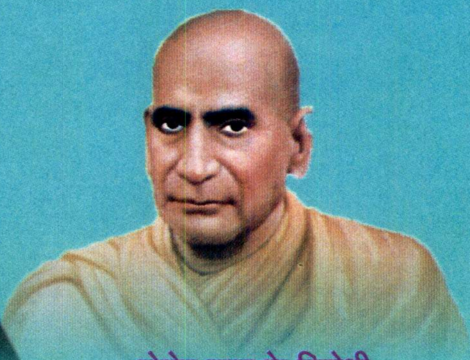

रोलेट एक्ट के विरोधी
शुद्धि आंदोलन के जनक
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

ऋषि दयानन्द को
धर्म पिता मानने वाले
लाला लाजपत राय

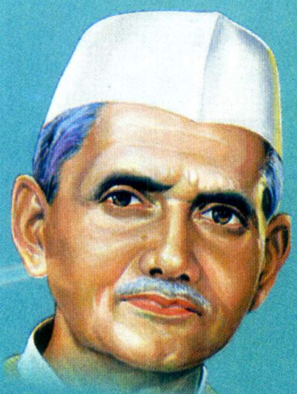

आर्य समाज के उपदेशक
पूर्व प्रधानमन्त्री
लाल बहादुर शास्त्री

कौन कहता है, स्वतन्त्रता बगैर खड्ग-ढाल के उपहार में मिल गई? ऋषि दयानन्द न होते तो स्वतन्त्रता तो दूर तथाकथित हिन्दू जाति नष्ट प्रायः हो गई होती। सुभाषचन्द्र बोस द्वारा कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव जीत जाने पर गान्धीजी ने कहा था सीता पट्टाभी रमैया (बोस के प्रतिद्वंदी) की हार मेरी हार है। इससे व्यथित हो बोस ने अध्यक्ष पद छोड़ दिया। सीता पट्टाभी रमैया कांग्रेस के अध्यक्ष बने। उन्होंने कांग्रेस का इतिहास लिखा, जिसमें उन्होंने लिखा-स्वतन्त्रता आंदोलन में सर्वाधिक (लगभग ८०-८५ प्रतिशत) जेल जाने वाले आर्यसमाजी थे।

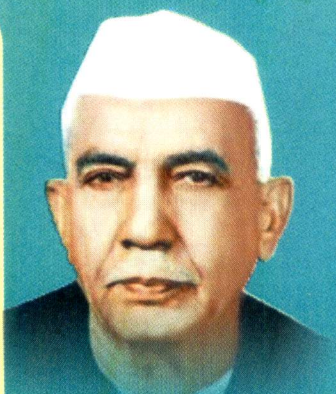

पक्के दयानन्दी
पूर्व प्रधानमन्त्री
चौधरी चरणसिंह

पूर्वजों की बलिदानी
परम्परा के वाहक
भाई परमानन्द

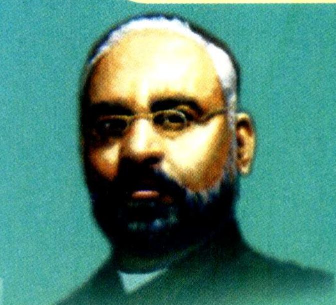

लंदन में इण्डिया हाउस के
द्वारा क्रान्तिकारियों के निर्माता
पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा

सत्यार्थ प्रकाश और पिता में
से सत्यार्थ प्रकाश के प्रेमी
पं. रामप्रसाद बिस्मिल

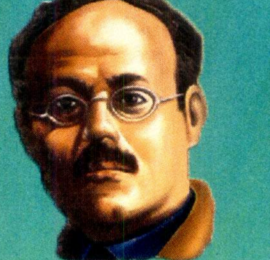

गदर पार्टी के प्रथम मन्त्री
क्रान्तिकारियों के जनक
लाला हरदयाल एम ए

आर्य समाज में जिन्हें जनेऊ
उनके दादा ने पहनवाया
अमर शहीद भगतसिंह

आर्य समाज खेड़ा अफगान का ११९वां वार्षिकोत्सव तथा व्यक्तित्व विकास शिविर-२०१७ सम्पन्न

आर्य समाज खेड़ा अफगान जनपद सहारनपुर (उ.प्र.) का ११९वां वार्षिकोत्सव एवं व्यक्तित्व विकास शिविर-२०१७ के अवसर पर १६ जोड़ों (पति एवं पत्नि) ने यज्ञ में भाग लिया, जिसमें मुख्य यजमान श्री नेमचन्द जी गर्ग बने। पं. शिवकुमार जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। आपने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला। श्री सुमित्र कुमार आर्य भजनोपदेशक ने भजनों के माध्यम से जनता का मनमोह लिया। इस अवसर पर अजमेर से पधारे आचार्य सोमदेव जी ने कहा कि वेद वाणी ईश्वर ने वेदवेत्ताओं को संसार के

सुख के लिए निधि के समान सौंपी है। मनुष्य वेद के द्वारा परमार्थ से लेकर ईश्वर पर्यन्त खोज कर ज्ञान प्राप्त करें। वेदवाणी न्यायकारी परमेश्वर की प्राप्ति का साधन है जो सर्वत्र विद्यमान है। परोपकारी साधक लोग वेदवाणी पर चिन्तन करके संसार का सुधार करते हैं। जितेन्द्रिय पुरुष ही उसे प्राप्त कर आनन्द पाते हैं और संसार का उपकार करते हैं।

आचार्य जी ने आगे कहा कि वेदवाणी पर चिन्तन कर अनुसन्धान करने से विज्ञान बढ़ता है वेद का ज्ञान संसार के सभी मनुष्यों के लिए है जितना मनुष्य को आवश्यक है वह सम्पूर्ण ज्ञान परमात्मा ने सभी मनुष्यों के हितार्थ वेद में उपदेश किया है वेद मनुर्भव का उपदेश करते हैं। ऐसा कोई विषय नहीं है जिसका ज्ञान वेदों में न हो। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने हमें 'वेदो की ओर लौटो' का सन्देश दिया। मानवता-समानता से बढ़कर कोई धर्म नहीं है अतः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के लिए वेद का ज्ञान है कोई भी ब्राह्मण आदि जन्म से नहीं होता कर्म से ही होता है।

अन्तिम सत्र में डॉ. धीरजसिंह जी आर्य ने कहा कि परिवार में मिलकर रहने से सभी को सुख प्राप्त होता है। उदाहरण देकर गृहस्थ में जीने की कला का बड़ा ही सारगर्भित उपदेश दिया और कहा कि मनुष्य इस मार्ग का अनुसरण करके ही स्वर्ग (सुख विशेष) को प्राप्त कर मानव जीवन को सफल बना सकते हैं और आगे कहा कि हम सभी को अपने दुर्गुणों को चुन-चुनकर दूर करते रहना चाहिए। दूसरे के गुणों का

चिन्तन कर अपने को सुधारने के लिए सदैव प्रयासरत् रहना चाहिए। संचालन श्री वेदभूषण जी गुप्त ने किया। अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री आदित्य प्रकाश जी गुप्त सभी विद्वानों एवं आगन्तुकों और जिसने भी इस कार्यक्रम में किसी भी प्रकार का सहयोग दिया है सभी को धन्यवाद दिया। सभी युवकों को महर्षि दयानन्द जी से प्रेरणा लेकर उनके द्वारा प्रदत्त साहित्य का स्वाध्याय कर अपने जीवन में उतारने का अनुरोध किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवकों ने भाग लिया। डॉ. अशोक कुमार जी (व्यायाम शिक्षक) सहारनपुर, श्री श्यामसिंह जी आर्य उमाही कलां, श्री श्यामसिंह जी आर्य जाजवा, श्री शशिकान्त जी आर्य, श्री प्रशपाल जी गुप्त, डॉ. प्रमोद कुमार, श्री राजेश कुमार जी आर्य मच्छरहेड़ी आदि बड़ी संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे। ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

नव संवत्सरोत्सव तथा आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास सहारनपुर (उ.प्र.) द्वारा नव संवत्सरोत्सव तथा आर्य समाज स्थापना दिवस का आयोजन आयोजित किया गया। सर्वप्रथम यज्ञ किया गया।पश्चात् न्यास के अध्यक्ष श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त ने कहा कि आज २३ मार्च को भारतीय नववर्ष विक्रम संवत् का प्रथम दिन है। आज ही के दिन ईश्वर ने इस पृथ्वी पर मानव को उत्पन्न किया था। आज ही के दिन श्री रामचन्द्र जी तथा युधिष्ठिर जी का राज्यारोहण हुआ था। बौद्ध, महावीर, शालीवाहन, फसली बंग, नानक शाही संवतों का प्रचलन भी आज ही के दिन हुआ। आज ही के दिन अज्ञानता, जातिवाद एवं परतन्त्रता से ग्रसित आर्य सन्तानों को सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भविष्य में वेद प्रचार के उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना की थी।आर्य समाज का उद्देश्य अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, शुद्धि आंदोलन आदि का प्रचार कर समाज में व्याप्त कुरीतियों, बालविवाह, सती प्रथा, अन्ध विश्वास, पाखण्ड, अज्ञानता को मिटाने हेतु 'वेदो की ओर लौटो' का सन्देश दिया। हमारी समस्त समस्याओं का समाधान वेद मार्ग पर चलकर ही हो सकता है। वेद ज्ञान-विज्ञान, गणित, भूगोल, खगोल, शिल्प, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि समस्त सत्य विद्याओं का पुस्तक है।कार्यक्रम में श्री अमित कुमार आर्य ने सारगर्भित भजन सुनाए।महर्षि ने आर्य समाज का छठां नियम संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना बताया।कार्यक्रम में बड़ी संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे।

वेदभूषण गुप्त, सचिव-वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास, सहारनपुर

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
वैदिक संसार

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७
वर्ष-६, अंक-७
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ मई, २०१७
आर्ष तिथि-ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या
सृष्टि संवत्-१,९७,२९,४९, ११९
शक संवत्- १९३९
विक्रम संवत्- २०७४, दयानन्दाब्द-१९४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रात: ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन
लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति	२५/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
करंट खाता क्रमांक- ३२८५९५९२४७९
आईएफएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
टाईम किसके पास है? टाईम किसी के पास...	सम्पादकीय	०५
इन्सान रोता ही रोता है	गंगाराम जांगिड	०५
हमारी महान् विभूतियां- महात्मा हंसराज	आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री	०७
आर्य समाज क्रांतिकारियों की जननी है	खुशहालचन्द्र आर्य	०८
अथर्ववेद में वर्षा का वर्णन	शिवनारायण उपाध्याय	११
गुरु का वरण	उमाकान्त उपाध्याय	१३
मानव जीवन मोक्ष की पाठशाला	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	१४
गुरु	रामचन्द्र कारपेन्टर	१५
शास्त्रों का सौन्दर्य	आचार्य रामगोपाल सैनी	१५
... प्रशिक्षण शिविर में स्वामी सत्यपति जी...	वैदिक संसार	१७
यज्ञ क्या और किसलिए?	आचार्य ज्ञानेश्वरार्य	१९
आर्य समाज एक सुसंस्कृत जीवन शैली है	डॉ. लक्ष्मी निधि	२१
राष्ट्रप्रेम	डॉ. सुभाष नारायण	२१
संस्कृत वांङ्मय के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण...	आचार्य सोमेन्द्र श्री	२२
सुख-दुःख इसी जन्म में भोगना है	प्रो. रामसिंह रमदा	२३
संसार में सुख शान्ति का एकमात्र उपाय-...	उम्मेदसिंह विशारद	२५
ईश्वर के मुख तो है नहीं, फिर उसने वेदज्ञान...	आदित्य प्रकाश गुप्त	२५
विवाह के सम्बन्ध में युवक-युवतियों के...	स्वामी हरिश्वरानन्द	२७
धर्म की दुकान, वैदिक मान्यताएं-सुखी...	मोहनलाल आर्य	२९
आओ! कुछ ऐतिहासिक तथ्य जानें	इन्द्रदेव गुलाटी	३०
हमारे देश में लोकतन्त्र नहीं है	स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती	३१
'खेल' संसद का	डोंगरलाल वर्मा	३१
अरमानों की बस्ती में	राधेश्याम गोयल	३२
ईश्वर का सच्चा स्वरूप	नरसिंह सोनी	३३
सुबह का भुला, तीर्थयात्रा	दिलीप भाटिया	३३
वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ तकनीकी...	वैदिक संसार	३४
आधुनिक यमदूत-प्रतिक्रिया	ओमप्रकाश बजाज	३५
समर्पण करो स्वीकार	महात्मा चैतन्य मुनि	३५
सतर्क-सचेत, अकारण हानि,झुग्गी-झोपड़ी	ओमप्रकाश बजाज	३६
सरयूबाग, अयोध्या में बनेगा ऋग्वेदादि भाष्य..	संकलित	३७
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियां	संकलित	३८
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	३९
वैदिक संसार को आपका आर्थिक सहयोग	वैदिक संसार	४१
शोक-सूचनाएं	संकलित	४२

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

अतः परिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि।
समस्मिन्नृञ्जते गिरः॥ ऋ. १:६:९

भावार्थ- यह बलवान् वायु अपने गमन-आगमन गुण से सब पदार्थों के गमन-आगमन धारण तथा शब्दों के उच्चारण और श्रवण का हेतु है।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के जून २०१७ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

१४ गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ शुक्ल दशमी २०७४	४ जून	हस्त- २८:३३, चित्रा - २९:१९
१५ गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ शुक्ल एकादशी २०७४	५ जून	विश्व पर्यावरण दिवस
१६ गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ शुक्ल द्वादशी २०७४	६ जून	प्रदोष
१८ गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी २०७४	८ जून	अनुराधा- २४:४३
१९ गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा २०७४	९ जून	गुरुपूर्णिमा, सच्चिदानन्द हीरानन्द पुण्यतिथि
२० गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा २०७४	१० जून	मूल-२६:५१
२१ गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ कृष्ण द्वितीया २०७४	११ जून	उत्तराषाढ़-२४:२६, रामप्रसाद बिस्मिल जयन्ति
२४ गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ कृष्ण पंचमी २०७४	१४ जून	पंचक प्रारम्भ- १३:५५
२८ गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ कृष्ण नवमी २०७४	१८ जून	रानी लक्ष्मीबाई पुण्यतिथि
२९ गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ कृष्ण दशमी २०७४	१९ जून	गुरु हर गोविन्द जयन्ति
३० गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ कृष्ण एकादशी २०७४	२० जून	पंचक समाप्त-१०:२५
३१ गते	शुचि मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ कृष्ण द्वादशी २०७४	२१ जून	भरणी-२८:३८, कर्क संक्रान्ति-०९:५४, दक्षिणायन वर्षा ऋतु प्रारम्भ दिनमान अधिकतम/रात्रिमान न्यूनतम (दक्षिणी गोलार्द्ध में विपर्यय), सूर्य भोगांश ९० अंश सूर्य उत्तर परम क्रान्ति पर, अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस
०१ गते	नभस् मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी २०७४	२२ जून	प्रदोष
०२ गते	नभस् मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी २०७४	२३ जून	श्यामाप्रसाद मुखर्जी पुण्यतिथि
०३ गते	नभस् मास	१९३९ शक स.	आषाढ़ कृष्ण अमावस्या २०७४	२४ जून	क्षयतिथि प्रतिपदा-०८:२३, रानी दुर्गावती पुण्यतिथि
०५ गते	नभस् मास	१९३९ शक स.	श्रावण शुक्ल तृतीया २०७४	२६ जून	पुष्य- २६:३७
०६ गते	नभस् मास	१९३९ शक स.	श्रावण शुक्ल चतुर्थी २०७४	२७ जून	वराह जयन्ति, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय जयन्ति, विश्व मधुमेह दिवस
०७ गते	नभस् मास	१९३९ शक स.	श्रावण शुक्ल पंचमी २०७४	२८ जून	मघा-२६:४१
०८ गते	नभस् मास	१९३९ शक स.	श्रावण शुक्ल षष्ठी २०७४	२९ जून	कल्कि जयन्ति
०९ गते	नभस् मास	१९३९ शक स.	श्रावण शुक्ल सप्तमी २०७४	३० जून	नागार्जुन जयन्ति, दादाभाई नौरोजी पुण्यतिथि

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

नया पंचांग उपलब्ध

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

‘जांगिड ब्राह्मण’ मासिक पत्र के मई १९७३ के अंक में प्रकाशित, आज भी प्रासंगिक

इन्सान रोता ही रोता है

जो होना है वही तो होता है
आदि-आदि व्यर्थ वाक्य कह
जहां देखो इन्सान रोता ही रोता है।
तन की सजधज और
फैशन में कितना ही समय खोता है
पेट बांध कर भी
अपनी परिश्रम की कमाई
व्यर्थ पिक्चर में खोता ही खोता है
(बाहुबली-०२ ने एक हजार करोड़
का कारोबार किया- सम्पादक)
जहां देखो
इन्सान रोता ही रोता है।।१।।
खाली समय
बेकार ही फिरता है
व्यर्थ ही बेकारी का
शोर मचाता है
जीवन के अमूल्य क्षणों को यों ही खोता है,
जहां देखो
इन्सान रोता ही रोता है ।।२।।
मजदूर बनकर भी मजदूर न रहा
वह सपना देखता है,
‘बंगला’ और ‘कार’ का
इसने भी धन्धा छोड़ दिया
सच्चे व्यवहार का
हर मानव को लगी ऐसी बीमारी है
फिर कहता जो होना हो सो होता है
जहां देखो
इन्सान रोता ही रोता है ।।३।।
व्यापार करके भी
जो धनवान न बन सका
धनवान बनकर
किसी को कुछ न दे सका
पास रखकर भी
तसल्ली नहीं, कितनी भूख है?
जिसकी सीमा नहीं
खुद भी रोता रहता है

टाईम किसके पास है? टाईम किसी के पास नहीं होगा...

समादरणीय श्री रमेशचन्द्रजी चन्देल ‘**अधिवक्ता**’, निवासी - नागदा जंक्शन, जिला उज्जैन (म.प्र.) की काव्य रचना ‘**टाईम किसके पास है**’ वैदिक संसार के अक्टूबर २०१५ के पृष्ठ २३ पर प्रकाशित की गई थी। उसे और आगे वास्तविक स्थान पर पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है।

यह भी निवेदन है कि ना तो मुझमें काव्य रचना के नियम सिद्धान्तों का कोई ज्ञान है, ना मैं कोई साहित्यकार हूं। मुझ किंचन के अन्तरमन के उद्गारों को काव्य की टूटी-फूटी शैली में आप पाठक महानुभावों के समक्ष रखने का प्रयास है। आशा करता हूं कि कोई अल्पता तथा त्रुटि हो तो उसकी ओर ध्यान अवश्य दिलवायेंगे तथा अन्तरमन के भावों एवं देव दयानन्द की विरासत को समझने का प्रयास करेंगे। रचनाकार महानुभाव इस रचना को और उत्कृष्ट रूप में संशोधित कर प्रस्तुत करेंगे तो उसका स्वागत होगा। तथा उसे भी प्रकाशित करने का प्रयास किया जावेगा।

परमपिता परमात्मा की श्रेष्ठ कृति, मानव जाति को लगा भयानक रोग
बात-बात ही नहीं, अपने हित की बात पर भी कहता टाईम किसके पास है...

देव दयानन्द विभूति ने जन्म लिया इस पावन धरा पर।
माता-पिता, परिवार तक सीमित न रहकर।।
एकमेव परमपिता परमात्मा को समर्पित रहकर।
सम्पूर्ण संसार के समस्त प्राणियों का बनाया परिवार।।
ईंट-पत्थर खाये, गये पावन धाम करके विषपान
किन्तु मानव जाति को करवाया वेदामृत पान।।
दिया सन्देश जगती भर को लौट चलो वेदों की ओर
भूल गया निखट्टू मानव, कहता टाईम किसके पास है....

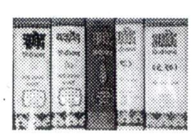

भाँप लिया था मेरे ऋषि ने, पतन के गर्त में गीरी मानव जाति।
नहीं ग्रहण कर पायेगी परम पिता के वेदज्ञान की अनुपम थाति।।
वेद तथा वेदानुकूल शास्त्र अकूत ज्ञान भण्डार है।
हमारी गौरव गाथा गाता हमारा गौरवशाली इतिहास है।।
अब दृष्टि में नहीं आता कोई खेवनहार है।
चारों ओर लूट-खसोट का साम्राज्य है।।
भाग रहे पतन की ओर, भविष्य अन्धकारमय है,
कोई समझाये तो न समझे, कहते टाईम किसके पास है....

ईश्वर को बना दास, पूजते जड़ पत्थर को।
मैकाले के मानस पुत्र बन, छोड़ दिया पीछे गोरों को।।
त्याग तप से नहीं रहा सरोकार, भोग-भोग-भोग याद रहा।
विश्वगुरु की कर दी दयनीय दशा, कोई ठौर ना रहा।।

और दूसरों को भी रुलाता है
जहां देखो
इन्सान रोता ही रोता है।।४।।
कोई साधु बनकर
जंगल में शोर मचाता है
कोई गंगा स्नान कर
पापों को धोता है,
कोई मन्दिर और मस्जिद में जाकर
लौ लगाता है
कोई अपने पापों को छिपाने
राम,कृष्ण की रट लगाता है
कोई कुकर्म कर
मुश्किल से नींद लेता ही लेता है
जहां देखो
इन्सान रोता ही रोता है ।।५।।
धर्म और ईमान खोता है
सच पूछो?
तो
पता नहीं
इन्सान इतना बदल गया
कि कुछ पाने की बजाय
दिन रात खोता ही खोता है
जहां देखो
इन्सान रोता ही रोता है।।६।।

जांगिड कुल गौरव, शतायु अवस्था को प्राप्त, वैदिक धर्मनिष्ठ, प्रतिदिन चार बार यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का पाठ करने वाले, अनेक यज्ञों के ब्रह्मा, जांगिड वैदिक संस्कृत विद्यालय फतेहपुर को जीवन के चालीस वर्ष समर्पित कर सेवा देने वाले

- गंगाराम जांगिड
नेहा सेल्स कार्पोरेशन,
माधो बिहारी का अहाता,
स्टेशन रोड, जयपुर (राज.)
दूरभाष - ०१४१-२३६९१८३

भूल गये बलिदानियों की गाथा, स्वतन्त्रता को समझ स्वच्छन्दता।
धर्म-संस्कृति, राष्ट्र सब करके हवाले, वेद ज्ञान विहिन नेता।
कमाना-खाना, सोना और मर जाना भर याद रहा,
और किसी बात के लिए कहता टाईम किसके पास है....

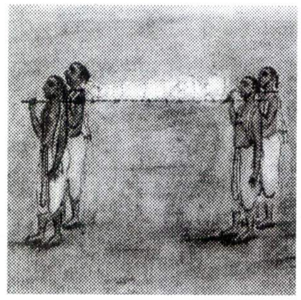

जैसा नेता वैसा बना मतदाता।
खुदगर्जी, धूर्तता, मक्कारी से जोड़ा नाता।।
रहे अवसर की ताक में, लगे मौका जो हाथ।
फिर कहे टाईम ही टाईम है, कहो जरा तो।।
इसी आपा-धापी में भूला, उस सर्व व्यापी प्रभु को।
बांध ली पापों की गठरी, बोझ तले दबा जा रहा।।
अब चलने का समय आ गया, संगी साथी सब छूटे,
यह कहने का भी समय नहीं रहा, टाईम किसके पास है....

यूं ही पशुवत गंवाया, श्रेष्ठ मानव तन चोला।
परम लक्ष्य मोक्ष को पाने का था, समय मिला।।
परम पिता के आनन्द को पाने, कुछ न कमाया।
ना कुछ आगामी जीवन यात्रा की तैयारी कर पाया।।
टाईम किसके पास है - कहते-कहते अनमोल जीवन गंवाया।
आखिर इसके लिये टाईम किसी के पास नहीं है पाया।
पत्नी ने देहरी से बिदाकर दिया, संगी-साथी मरघट में छोड़ चले।
कृपा कैसे मिले उस प्रभु की, उसके लिए भी तो टाईम नहीं था।।

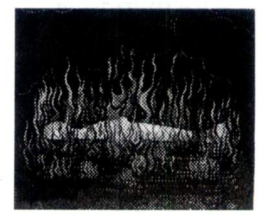

जाग भी जा ओ मूरख बन्दे, जीवन बीता जा रहा।
कहे 'सुखदेव' बात मान ले देव दयानन्द की वेदपथ पर अब लौट भी आ।।

वैवाहिक आवश्यकता

मेरी अपनी सुपुत्री जिसका जन्म-दिनांक २०-१०-१९९३ को तथा शिक्षा-बी. कॉम., फैशन डिजाईनिंग डिप्लोमा, ए.बी. डब्ल्यू. डी.डी. कम्प्यूटर कोर्स के साथ हिन्दी टाईपिंग में पूर्णदक्ष, कद ५.५, गौर वर्ण, संध्या दैनिक अग्निहोत्र के मन्त्र कंठस्थ है के विवाह संस्कार हेतु दुर्गुण-दुर्व्यसन रहित उच्च कुल शाकाहारी परिवार के वैदिक धर्म सिद्धान्त निष्ठ, उच्च शिक्षित, रोजगाररत् युवक की आवश्यकता है, विवाह पूर्ण वैदिक पद्धति से, रूढ़ियों एवं भौंडे प्रदर्शन से मुक्त होगा। जन्मना जाति बन्धन से मुक्त होकर प्रस्ताव आमंत्रित है। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें।

सुखदेव शर्मा, प्रकाशक-वैदिक संसार
इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष- ९४२५०-६९४९१

साहस, सेवा, समर्पण के साकार रूप-महात्मा हंसराज

महात्मा हंसराज जी

- आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
अन्तरराष्ट्रीय वेद कथाकार
फ्लेट नं. सी-१, पूर्ति अपार्टमेन्ट
(एफ. ब्लाक) विकासपुरी नई दिल्ली-१८
चलभाष-९८१००८४८०६

सुरभि फल-पुष्पैः प्रीठायन्त्रद्य लोकं
विलसति विटपी यद् रोपितो ज्ञान रूपः।
जगति यदभिधानं त्याग- पर्याय भूतम्
जयतु स यतिवर्यो हंसराजो महात्मा।।

ज्ञान- सौरभ से पूरित अध्येता रूपी फल-फूलों से विश्व को प्रसन्न करने वाला विद्या रूपी वृक्ष (डीएवी) जिन्होंने रोपा. संसार में जिनका नाम त्याग का पर्याय है उन यतिवर्य महात्मा हंसराज की जय हो।

धन्य है वे लोग जो भारतभूमि के किसी भाग में उत्पन्न हुए। यह भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है, क्योंकि यहां स्वर्ग के अतिरिक्त मोक्ष की साधना भी की जा सकती है। स्वर्ग में देवत्व भोग लेने के बाद देवता मोक्ष की साधना के लिए कर्मभूमि भारत में फिर जन्म लेते हैं।

ऐसे ही पुण्यभूमि में पंजाब के प्रसिद्ध नगर के होशियारपुर से तीन मील दूर कस्बा बजवाड़ा में १९ अप्रैल १८६४ को महात्मा हंसराज का जन्म हुआ। वे बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। स्वामी दयानन्द जी से दिव्य प्रेरणा पा करके सामाजिक कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लेने लगे। जीवनभर गरीबों, दुःखियों, विधवाओं, अनाथों की सेवा में लगे रहे।

डी.ए.वी. जो एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है, जिसकी कीर्ति देश-विदेश में फैली हुई है, उस सबका श्रेय त्याग तपस्या के साक्षात् मूर्ति महात्मा हंसराज जी को है। महात्मा हंसराज जी परगुण प्रकाशन के सूर्यमुखी, परादर के हरसिंगार, विनम्रता की बेला, कृतज्ञता की मालती, शालीनता की चम्पा एवं देदीप्यमान सूर्य की तरह थे।

वह ऐसे कमल हैं जो स्वगुण श्रवण की रात्रि में संकुचित हो जाते हैं तो परगुण कथन के दिवस में विस्तृत हैं।

एक बार की बात है कि किसी ने हंसराज जी को कहा कि अमुक आदमी ने पाप से खूब पैसा कमाया है। इस पर महात्मा जी कहने लगे-मैं उनके जीवन के विषय में कुछ नहीं जानता, परन्तु इतना तो अवश्य पता है कि उस व्यक्ति ने कालिज के लिए २५०० रुपए दान दिया है। किसी व्यक्ति के क्रोध पर जब बात चली तब महात्मा हंसराज जी कहने लगे कि वह व्यक्ति बहुत उत्साही है, कठिनाई को कठिनाई नहीं समझता। वे किसी की कभी भी निन्दा नहीं करते थे, अपितु दूसरों के गुणों की प्रशंसा करने में थकते नहीं थे। वे एक सच्चे सन्त पुरुष थे।

परगुण परमाठून् पर्वती कृत्य नित्यम् ।
निज हृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।

महात्मा हंसराज सादे कपड़े में एक सच्चे संन्यासी थे, एक दिन वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के समीप आर्य समाज के कुछ संन्यासी पहुंचे और निवेदन करने लगे कि हम महात्मा हंसराज जी से कहना चाहते हैं कि वे संन्यास की दीक्षा लें। कृपया आप हमारे अगुवा बनकर महात्मा जी के पास चलें। इस पर स्वामी सर्वदानन्द जी ने बड़े गंभीर होकर कहा- महात्मा हंसराज तो हमसे भी बड़ा संन्यासी है। सफेद कपड़ा पहनता है तो क्या हुआ हम तो कपड़े से संन्यासी हैं, वह मन से संन्यासी है। भला मैं उनसे संन्यास लेने को कैसे कहूं? स्वामीजी की इस बात को सुनकर अन्य संन्यासियों ने अपना विचार छोड़ दिया और वे वापिस लौट गए। महात्मा हंसराज जी महान् ईश्वर भक्त थे, वे गायत्री का जाप एवं दोनों काल संध्या करते थे, यही कारण है कि वे पहाड़ जैसे दुःखों का सामना कर पाये। महात्मा हंसराज जी की पत्नी का देहावसान हो गया। पुत्र बलराज कारावास में था। उनके भाई को आर्थिक संकट ने आ दबोचा। ऐसी विषम परिस्थिति में महात्मा जी धैर्यपूर्वक आर्य समाज की सेवा में संलग्न थे।

हरति कलुषमस्तच्चेत सो यच्चरित्रम्।
भवति भुवन मध्दा यस्य कीर्त्यापवित्रम् ।।
पर-हित रत-चित्तो यो हि धर्मैकवित्तो।
जयतु स यति-वृत्तो हंसराजो महात्मा।।

जिनका पावन चरित्र हमारे हृदय की कालिमा को दूर करता है, जिनकी कीर्ति से संसार पवित्र होता है, जिनका चित्त् सदा परोपकार में रत् था, धर्म ही जिनका धन था वे यति तुल्य आचरण वाले महात्मा हंसराज जयी हों।

महात्मा हंसराज जी कथन है- ईर्ष्या तथा द्वेष की प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं होती। अपने मन की शुद्धि, ज्ञान की प्राप्ति तथा शुभकामनाओं के लिए परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए। प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने नगर, कस्बा ग्राम तथा कुल में एक बढ़िया उदाहरण बने और वेदों के प्रकाश को सामने रखे जो सहस्रों वर्षों के पश्चात् स्वामी दयानन्द ने पुनः प्रसारित किया है।

यदि हमारे कर्म ऊँचे होंगे तो हम मुक्ति पायेंगे, अन्यथा नहीं। आर्य समाज की सदस्यता हमें मुक्ति नहीं दिलाएगी। मुक्ति तो हमारे शुभ कर्मों तथा पवित्र आचरण पर निर्भर है। कर्म भी एक यज्ञ है।

जिस प्रकार मणियों का मूल्य पृथक रहने पर कम होता है, माला के रूप में उनका मूल्य बढ़ जाता है, इसी प्रकार जाति जब एक होती है तो उसका विशेष आदर व महत्व होता है, परन्तु उसी जाति के पृथक-पृथक टुकड़े वह सम्मान तथा मूल्य नहीं पा सकते। ऐसे महान चिन्तक, ईश्वर भक्त, त्यागी, तपस्वी, कर्मयोगी, समाज सुधारक, ऋषि भक्त, डी.ए.वी. के सजर्क, अनेक संस्थाओं के प्राण, महान् शिक्षाविद् अनेक शिष्यों के जीवन निर्माता, निष्काम सेवा के मूर्ति, परोपकारी महात्मा हंसराज जी को सादर प्रणाम।

जीवन उन्हीं का धन्य है, जीते हैं जो सबके लिए।
धिक्कार है उनके लिए, जीते हैं जो अपने लिए,
जन्म होता है सुजन का विश्व के उद्धार को,
विश्व सेवा, विश्वमंगल, विश्व के उपकार को। ■

आर्य समाज क्रान्तिकारियों की जननी है

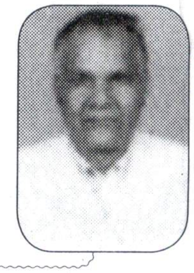

- खुशहालचन्द्र आर्य -
१८० महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला)
कोलकत्ता (पश्चिम बंगाल)
चलभाष - ०९८३०१६५७९४

आर्य समाज क्रान्तिकारियों की जननी क्यों न हो, जिसके संस्थापक महर्षि दयानन्द स्वयं देशभक्त व क्रान्तिकारी थे, जिन्होंने सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में कार्य किया था। उनके गुरु स्वामी विरजानन्द जी प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में एक विशेष भूमिका निभाई थी और विरजानन्द जी के गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी भी एक अच्छे बड़े क्रान्तिकारी थे, उनके बारे में भी इतिहास बतलाया है कि उन्होंने भी १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में काफी भाग लिया था। जिस संस्था के संस्थापक ने सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में केवल भाग ही नहीं लिया, बल्कि अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में यह लिखकर कि विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, यानि माता-पिता के समान सुखदायक हो, फिर भी उससे अपना स्वदेशी राज्य कहीं अच्छा होता है। इस उद्घोष से क्रान्तिकारियों ने बहुत प्रेरणा ली। बाल गंगाधर तिलक ने तो सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर यहां तक कह दिया कि आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। इसी प्रकार स्वामीजी ने सत्यार्थ प्रकाश में यह भी लिखा है कि पारस पत्थर हो या नहीं, परन्तु भारत प्राचीन काल में पारसमणि जरूर था जिसके सम्पर्क में आने से विदेशी सोना यानि शिक्षित व सभ्य बन जाते थे। तीसरी घटना स्वामीजी की जीवनी में भी आती है। कि अजमेर में लार्ड ब्रुक ने स्वामीजी से पूछा कि आपको अपने प्रचार कार्य को करने में किसी प्रकार की तकलीफ तो नहीं है, तब स्वामीजी ने कहा कि अंग्रेजी राज्य में कोई तकलीफ नहीं है। मैं अपना प्रचार अच्छी प्रकार से कर पा रहा हूं। तब लार्ड ब्रुक ने कहा कि जब अंग्रेजी राज्य इतना अच्छा है तो आप जब ईश्वर से प्रार्थना करते हैं तब आप अंग्रेजी राज्य के विस्तार करने की भी प्रार्थना कर दिया करें। तब स्वामी जी ने कहा कि मैं तो नित्य ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि अंग्रेजी राज्य जल्दी से जल्दी नष्ट हो और भारत आजाद हो। यह उत्तर सुनकर लार्ड ब्रुक आवाक् रह गया और उसने इग्लैण्ड में समाचार भेजा कि स्वामी दयानन्द तो कोई साधारण संन्यासी नहीं है, यह तो कोई बागी फकीर है, इसके ऊपर हमें कड़ी नजर रखनी चाहिए। इसके बाद स्वामीजी के ऊपर अंग्रेजों की कड़ी नजर रहने लगी और उनकी मृत्यु में भी अंग्रेजों का पूरा हाथ था। इससे सिद्ध होता है कि स्वामीजी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान और महान् चरित्रवान तो थे ही साथ ही क्रान्तिकारी विचार भी उनमें कूट-कूट कर भरे थे।

जिस संस्था के संस्थापक स्वामी दयानन्द जैसे क्रान्तिकारी हो तो वह संस्था कितनी क्रान्तिकारी होगी, इसकी कल्पना स्वयं ही कर सकते हैं। भारत के सन् १९४२ के स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज ने जिस ढंग से बढ़-चढ़कर भाग लिया। उसका वर्णन पट्टाभि सीतारमैय्या जो कांग्रेस के अध्यक्ष थे, उन्होंने स्वयं कांग्रेस का इतिहास लिखा है, उसमें लिखते हैं कि सन् १९४२ की स्वतन्त्रता की लड़ाई में आर्य समाज सबसे आगे था और ८५ प्रतिशत आर्य समाजी ही जेलों में थे। वैसे तो अनेकों आर्य समाजी क्रान्तिकारी हुए हैं जिन्होंने भारत माता को गुलामी की जंजीरों से निकालने के लिए अपना पूरा जीवन देश के लिए न्यौछावर कर दिया और अनेकों ने फाँसी के फन्दे को चूमा। उन अंसख्य बलिदानियों में पांच आर्य समाजी क्रान्तिकारियों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है, जिनका नाम क्रान्तिकारियों की श्रृंखला में बहुत ऊंचे स्थान पर आता है। वे नाम इस भाँति हैं। **(१) अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, (२) श्यामजी कृष्ण वर्मा, (३) लाला लाजपतराय, (४) भाई परमानन्द, (५) लाला हरदयाल, एम.ए.**

इनका संक्षिप्त जीवन चरित्र इसी भाँति है-

राम प्रसाद बिस्मिलः- रामप्रसाद बिस्मिल एक बड़ा चरित्रवान, बलिष्ठ,परम साहसी व देश के प्रति समर्पित भाव वाला क्रान्तिकारी था। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर नगर मे सन् १८९७ में हुआ था। इनके पिताजी का नाम मुरलीधर था। आर्य समाज मन्दिर इनके घर के पास ही था इसलिए वे आर्य समाज मे जाने-आने लगे । फिर इनका सम्पर्क स्वामी सोमदेव जी से हुआ और उनसे सत्यार्थ प्रकाश पढा जिससे वे पक्के आर्य समाजी हो गये। उनके पिताजी आर्य समाज के विरोधी थे, इसलिए ये बिस्मिल का आर्य समाज में जाना पसन्द नहीं करते थे। एक दिन पिता ने कहा कि बिस्मिल! या तो तुम आर्य समाज मे जाना छोड़ दो या फिर घर छोड़ दो। बिस्मिल ने घर छोड़ दिया और आर्य समाज में रहने लगे। कुछ दिनों बाद पिताजी ने घर पर बुला लिया। यह थी बिस्मिल की आर्य समाज के प्रति भक्ति व आस्था । क्रान्तिकारियों में बिस्मिल का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। क्रान्तिकारियों के मुख्य कार्यों में काकोरी काण्ड को प्रमुखता दी जाती है कारण जिस समय क्रान्तिकारियों के पास धन का अभाव था। हथियार खरीदने में तकलीफ हो रही थी, तब काकोरी स्टेशन पर सरकारी खजाने को लूटा गया था। यह काण्ड बिस्मिल की प्रधानता में किया गया था जो अति सफल रहा । इसी काण्ड के कारण बिस्मिल को गोरखपुर जेल में रखा गया और इसी जेल में फाँसी दी गई । बिस्मिल का आर्यत्व इसी में झलकता है कि बिस्मिल जेल में रहते हुऐ नित्य हवन करके ही भोजन करते थे और फाँसी के फन्दे को चूमने से पहले उसने स्तुति प्रार्थनोपासना के आठों मन्त्रों का पाठ किया था । इससे बढ़कर आर्य समाजी होने का क्या प्रमाण हो सकता है।

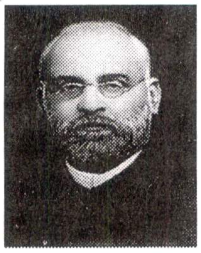

श्याम जी कृष्ण वर्मा- वर्मा जी एक बहुत ही तीव्र बुद्धि के होनहार नवयुवक थे। इनका जन्म ४ अक्टूबर १८५७ में हुआ था । इनके माता-पिता का निधन इनकी छोटी अवस्था में हो गया था। ये निर्धन परिवार के होने पर भी एक मेधावी छात्र होने से धनाढ्य लोगों ने इनको अपने पास काम करने के लिए रखा और उनके पढ़ने की व्यवस्था भी उन्होनें ही की । सन् १८७४ में महर्षि दयानन्द वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए मुम्बई आये थे तब वर्माजी स्वामीजी के एक व्याख्यान से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने स्वामीजी को अपना गुरु मान लिया और वे केवल आर्य समाजी ही नहीं बने बल्कि आर्य समाज के उपदेशक भी बन गए। वर्मा जी हिन्दी, संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेजी के भी बड़े विद्वान बन गए। मोनियर विलियम के कहने पर महर्षि दयानन्द जी ने ही वर्मा जी को ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में संस्कृत के अध्यापन हेतु लन्दन भेजा था। स्वामी जी का श्यामजी कृष्ण वर्मा को लन्दन भेजने का उद्देश्य वेद प्रचार करना तथा क्रान्तिकारी भावना को फैलाने का भी था। वर्माजी ने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में रहते हुए एक '**इण्डिया हाउस**' की स्थापना सन् १९०५ में की जिसमें भारतीयों को क्रान्तिकारियों बनने की शिक्षा दी जाती थी और वह क्रान्तिकारियों का निवास स्थल बन गया था। अंग्रेजी सरकार की सी.आई.डी. के अधिक पीछा करने से वर्माजी वीर सावरकर को पूरी जिम्मेदारी दे कर स्वयं पेरिस (फ्रांस) १९०७ में चले गए। भारत के सभी क्रान्तिकारी नेता लाल लाजपतराय, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, एम.ए. आदि इसी इण्डिया हाउस में ठहरा करते थे और इसी में रह कर मदनलाल धींगड़ा ने विलियम कर्जन वाइली को मारा था और उधमसिंह ने जनरल डायर जिसने जलियांवाले बाग का हत्याकाण्ड करवाया था उसके मर जाने से उधमसिंह ने जनरल डायर को प्रोत्साहन देने वाले माइकल ओ ड्वायर को मारा था। वर्मा जी सन् १९१४ तक पेरिस में रह कर फिर स्विटजरलैण्ड होते हुए जेनेवा चले गए। वहां उनकी मृत्यु ३१ मई सन् १९३० में हो गई। क्रान्ति की आग सबसे पहले वर्माजी ने ही लगाई थी, इसलिए इनको क्रान्तिकारियों का गुरु भी कहा जाता है। गुजरात के मुख्यमन्त्री के देश के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने इस क्रान्तिकारी की अन्तिम इच्छा को पूर्ण करते हुए इनकी अस्थियों को २४ अगस्त २००३ को भारतवर्ष की पावन धरती पर लाने का पुण्य कार्य किया है।

लाला लाजपत राय- लाला जी एक पक्के आर्य समाजी थे। उन्होंने ही कहा था कि **महर्षि दयानन्द मेरे धर्म के गुरु हैं और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है।** मैंने आर्य समाज से ही देशभक्ति सीखी है। ऐसे महामानव का जन्म २८ जनवरी १८६५ में लुधियाना जिला में जगरांव ग्राम में पिता राधाकृष्ण, माता गुलाबी देवी के घर हुआ। लाला जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, वे एक अच्छे ओजस्वी वक्ता, समर्पित समाज सेवी, सिद्ध लेखक, कुशल सम्पादक, कट्टर राष्ट्रवादी शिक्षाशास्त्री एवं निर्भिक क्रान्तिकारी नेता थे। उनके कारनामों को देखकर सभी लोग उन्हें '**पंजाब केसरी**' कहने लगे। लालाजी अपने प्रारम्भिक शिक्षा पास करके लाहौर आ गए। यहां पर उन्होंने गर्वमेन्ट कालेज में प्रवेश लिया तथा १८८२ में एम.ए. और कानून की परीक्षा भी साथ-साथ ही कर ली। यहां पर उनके सहपाठी हंसराज तथा गुरुदत्त थे। उन्हीं के माध्यम से उनका सम्पर्क आर्य समाज से हुआ।

लालाजी ने वकालत पास करके रोहतक और हिसार में वकालत की। साथ ही राजनीति का कार्य भी करते थे। वे १८८८ में कांग्रेस के अधिवेशन में इलाहाबाद गए। इसके बाद वे १९०७ में पं. गोपालकृष्ण गोखले के साथ एक शिष्ट मण्डल के सदस्य के रूप में इग्लैण्ड गए और वहां से अमेरिका चले गए। वहां अनेकों क्रान्तिकारियों से सम्पर्क किया। इससे पहले यहां १९०५ में जब बनारस में कांग्रेस अधिवेशन था, तब ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया, तब स्वाभिमानी लालाजी ने इसका डटकर विरोध किया। तभी से कांग्रेस में दो दल हो गए। एक गर्म दल जिसके नेता थे लालाजी, तिलक जी व सुरेन्द्रनाथ पाल और नरम दल के नेता थे-गोपाल कृष्ण गोखले व गोविन्द रानाडे। गोविन्द रानाडे भी महर्षि दयानन्द के पक्के शिष्य थे। इन्होंने आर्य समाज की मुम्बई में स्थापना के बाद महर्षि के स्वागत में पूना में बहुत बड़ा जुलूस निकाला था। उससे महर्षि की प्रसिद्धि बहुत बढ़ी। कांग्रेस में हुए दो दलों में गर्म दल का मानना था कि आजादी केवल गिड़गिड़ाने से नहीं मिलेगी, बल्कि उसके लिए बलिदान देना पड़ेगा। नरम दल वाले इसके विरोधी थे, परन्तु कांग्रेस में प्रभाव गरम दल वालों का ही था।

पंजाब के १९०७ वाले किसान क्रान्ति में लालाजी तथा अजीत सिंह (जो अमर शहीद भगतसिंह के चाचा जी थे) खुला साथ दिया, जिससे इन दोनों को ब्रह्मा की माण्डले जेल में अलग-अलग बन्दी बनाकर रखा। परन्तु जनता के रोष से उनको छह महीने बाद ही छोड़ दिया गया। जेल में लालाजी ने कई ग्रन्थों की रचना की जिनमें भारत का इतिहास (प्रथम भाग) महाराज अशोक, छत्रपति शिवाजी, आर्य समाज, महर्षि दयानन्द, योगीराज श्रीकृष्ण आदि मुख्य हैं। माण्डले जेल से आने के बाद भारत में उनका भरपूर स्वागत हुआ और उनकी क्रान्तिकारी गतिविधियाँ और अधिक तीव्रगति से चलने लगी। इसके बाद लालाजी फिर इंग्लैण्ड गए, वहां आने का वीजा न मिलने से वहां से जापान और अमेरिका आदि देशों में जाकर भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपना प्रबल प्रयास किया। फिर देश में आकर गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। परन्तु गांधी तथा कांग्रेस की मुस्लिम संतुष्टि से रुष्ट होकर कांग्रेस छोड़ दी। फिर १९२४ में स्वामी श्रद्धानन्द व मालवीय जी के साथ हिन्दू महासभा की स्थापना की और इसका पहला अधिवेशन १९२५ में कलकत्ता में किया जिसकी अध्यक्षता लालाजी ने की। इसके बाद ८ नवम्बर १९२७ में ब्रिटिश प्रधानमन्त्री ने भारत के भावी संविधान पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक आयोग का गठन किया, जिसके अध्यक्ष जॉन साइमन थे।

इस आयोग में कोई भी भारतीय न होने से इस आयोग का भारत में विरोध हुआ और यह साईमन आयोग ३० अक्टूबर १९२८ को लाहौर पहुंचा। इसका विरोध करने के लिए लालाजी ने एक जुलूस निकाला जिसमें '**साइमन गो बैक**' के गगन चुम्बी नारे लगाए गए। सरकार ने १४४ वीं धारा लगा दी फिर भी जुलूस आगे बढ़ता गया। इस शान्तिपूर्ण ढंग से विरोध प्रदर्शन करते हुए इस जुलूस पर सांडर्स ने क्रूरता से लाठी चलवा दी और लालाजी को लाठियों से इतना पीटा कि वे बुरी तरह घायल हो गए। **तब लालाजी ने सिंह गरजना करते हुए कहा कि मेरे सीने पर लगी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में कील का काम करेगी** और लालाजी का स्वर्गवास १७ नवम्बर १९२८को हो गया। **लालाजी की मृत्यु का बदला सरदार भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव ने ''सांडर्स'' को गोली मार कर लिया।**

भाई परमानन्द- भाई परमानन्द का जन्म ४ नवम्बर १९७६ में पिता भाई ताराचन्द, माता मथुरा देवी के घर करिवाल (पंजाब) में हुआ। ये अमर बलिदानी भाई बालमुकुन्द के चरेरे भाई थे, जिनको लार्ड हार्डिंग के जुलूस पर बम फेंकने के केस में फांसी की सजा मिली थी। भाई जी बचपन से ही बड़े प्रतिभा सम्पन्न तथा मेधावी छात्र थे। उस समय आर्य समाज का बड़ा जोर था। ये सत्यार्थ प्रकाश तथा पं. लेखराम के लेखों को पढ़कर पक्के आर्य समाजी बन गए थे। ये केवल आर्य समाज के सदस्य ही नहीं थे, पर एक बड़े उपदेशक भी थे, इनमें वैदिक मिशनरी के भाव कूट-कूट कर भरे थे। उन्होंने १९०२ में पंजाब विश्वविद्यालय में एम.ए. की परीक्षा पास की, फिर वे वेद प्रचार के लिए १९०५ में अफ्रीका चले गए। प्रचार करते-करते वे जोहान्सबर्ग पहुंचे तो वहां महात्मा गांधी भी उनसे मिलने आए। उसी समय लाला लाजपतराय भी क्रान्तिकारियों में स्वतन्त्रता के भाव जगाने के लिए लन्दन आए हुए थे। लालाजी ने भाई जी को लन्दन बुला लिया और वहां '**इण्डिया हाऊस**' में वे लाला हरदयाल और वीर सावरकर से मिले। अब भाई जी वेद प्रचार के साथ-साथ क्रान्तिकारी भावना फैलाने का काम भी बहुत जोर-शोर से करने लगे। भाईजी १९०७ में एक बार भारत आकर फिर अमेरिका चले गए। वहां करतार सिंह सराबा तथा अन्य कई क्रान्तिकारियों से मिलकर उनके दिलों में स्वतन्त्रता की आग जलाई और वे १९१३ में पुन: भारत आ गए। अगस्त १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध आरम्भ हो गया था। भाई परमानन्द जी तथा गदर पार्टी के क्रान्तिकारियों द्वारा एक बैठक बुलाई गई, जिसमें करतारसिंह सराबा, भाई परमानन्द, रास बिहारी बोस, शचीन्द्रनाथ सान्याल व गणेश पिंगले मुख्य थे। इन्होंने मिलकर एक योजना बनाई कि सन् १८५७ की तरह ही हमें देश में विद्रोह करके देश को स्वतन्त्र करवाना चाहिए। इसके लिए २१ फरवरी १९१५ का समय भी निश्चित कर दिया। इन क्रान्तिकारियों ने आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ, लाहौर, फिरोजपुर आदि छावनियों में जाकर सैनिकों से समर्थन भी प्राप्त कर लिया। बगावत करने की पूरी तैयारी हो गई थी परन्तु गदर पार्टी का ही एक क्रान्तिकारी कृपालसिंह ने गद्दारी की और पूरा भेद पुलिस को दे दिया, जिससे योजना का भण्डाफोड़ हो गया और चारों तरफ पुलिस का दमन चक्र चालू हो गया। खोज-खोज कर रासबिहारी बोस जो छुपकर जापान चला गया था, को छोड़कर सभी क्रान्तिकारियों को पकड़ लिया गया और छावनियों से सबसे हथियार ले लिए गए और योजना को नष्ट कर दिया गया। इस योजना के तहत् ६१ अभियुक्तों पर अभियोग चला, जिनमें १५ नवम्बर १९१५ को भाई परमानन्द समेत १७ क्रान्तिकारियों को फाँसी की सजा सुनाई गई, भाईजी को फाँसी की सजा को कालापानी की कारावास में बदल दिया गया और २० अप्रैल १९२० को भाई जी को रिहा कर दिया गया। तत्पश्चात् भाई जी अपनी पत्नी जो आर्य कन्या पाठशाला में पढ़ाती थी, उसके साथ बाकी जीवन लाहौर में रहकर बिताया। आगे भी भाई जी राजनीति में भाग लेते रहे। १९२० में तिलक की मृत्यु के बाद कांग्रेस की बागडोर गांधी के हाथ में आ गई। उनकी मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति भाई जी को पसन्द नहीं थी, इसलिए कई हिन्दू नेता जिनमें डॉ. बी,.एस. मुंजे, पं. मदनमोहन मालवीय, स्वामी श्रद्धानन्द व लाला लाजपत राय मुख्य थे। उनसे मिलकर हिन्दू महासभा की स्थापना की, जिससे हिन्दुओं का पक्ष कुछ मजबूत बनने लगा। सन् १९३४ में भाई जी हिन्दू महासभा के अध्यक्ष भी चुने गए। वीर सावरकर को १९३७ में रत्नागिरी जेल से मुक्त कर दिया गया, तब १९३७ में वीर सावरकर को हिन्दू महासभा का अध्यक्ष बनाया गया, तब से इस संस्था में जान आ गई। परन्तु पाकिस्तान बन जाने पर इनको बड़ा आघात पहुंचा और ८ दिसम्बर १९४७ को वे सदा-सदा के लिए इस संसार को छोड़कर चले गए।

लाला हरदयाल- लाला हरदयाल जी. एम.ए. एक अद्‌भुत प्रतिभा के धनी तथा आदर्श क्रान्तिकारी थे। उनका जन्म दिल्ली के श्री गौरी दयाल माथुर जी के यहां १४ अक्टूबर १८८४ में हुआ। लाला हरदयाल अपनी अद्‌भुत प्रतिभा का प्रमाण अपनी प्रारम्भिक विद्यार्थी जीवन में ही दिखाना आरम्भ कर दिया था। हरदयाल जी दिल्ली के एक कालेज में बी.ए. करने के बाद उन्होंने लाहौर कालेज से अंग्रेजी भाषा और साहित्य में एम.ए. किया। वहां पर भी उन्होंने दो साल की पढ़ाई केवल एक साल में पूरी कर ली और वह भी ९७ प्रतिशत अंक लेकर तथा उनकी उत्तर पुस्तिका देखकर परीक्षकों ने कहा कि इस विद्यार्थी को आगे पढ़ाने के लिए हमारे पास कुछ भी नहीं है। उनकी इस प्रतिभा के कारण ही उन्हें सरकार की ओर से छात्रवृत्ति मिली तथा उन्हें अध्ययन के लिए लन्दन ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में भेजा गया।

शेष भाग पृष्ठ १६ पर

अथर्ववेद में वर्षा का वर्णन

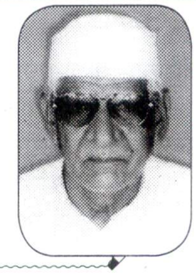

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

वेद के ऋषि प्रकृति की गोद में रहना पसन्द करते थे। प्रकृति से उनका गहरा लगाव था। इसकी प्रतीति हमें तब होती है जब हम वेद का अध्ययन करते हुए किसी ऐसे स्थल पर पहुंचते जहां वे प्रकृति की गोद में बैठकर उसके सौन्दर्य का पान कर रहे हों।

अथर्ववेद में ऐसे स्थलों की बहुलता है। हम यहां अथर्ववेद में वर्णन किए गए वर्षा ऋतु की एक झलक पाठकों के सम्मुख रख रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि हमारा ही नहीं वरन् सभी प्राणियों का जीवन वर्षा पर अवलम्बित है। यदि कभी वर्षा के आने में तनिक सा विलम्ब हो जाता है तो जगत् में हाहाकार मच जाता है। किसान की दृष्टि वर्षाकाल के प्रारम्भ में ऊपर बादलों की ओर ही टिकी रहती है। आसमान में घने बादल देखकर उसका चेहरा खिल जाता है। पशु-पक्षी भी अपने ढंग से प्रसन्नता प्रकट करने लगते हैं। वनों में मयूर पक्षी नृत्य करने लग जाता है।

किसान वायु द्वारा शीघ्र जल वर्षा के लिए उसे सम्बोधन कर कहता है-

उदीययत मरुतः समुद्रस्त्वेषो अर्को नभ उत् पातयाथ।
महऋषभस्य नदतो नभःस्वतो वाश्रा आपः पृथिवी तर्पयन्तु।।

अथर्व ४.१५.५

पदार्थ-(मरुतः) हे वायु वेगो। (**अर्कः**) सूर्य के (**त्वेष**) प्रकाश द्वारा (**नभः**) जल को (**समुद्रतः**) समुद्र से (उदीरयत) उठाओ और (**उत् पातयाथ**) ऊपर ले जाओ। (**मह ऋषभस्य**) बड़े गमनशील (**नदतः**)गरजते हुए (**नभस्वतः**) आकाश में छाये (**बादल**) की (**वाश्राः**) धड़धड़ाती (**आपः**) जल धाराएं (**पृथिवीम्**) पृथ्वी को (**तर्पयन्तु**) तृप्त करें।

वर्षा होने पर दिशाएं निर्मल और पृथ्वी अन्न उपजाने के योग्य हो जाती है।

समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः समभ्राणि वातजूतानि यन्तु।
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु।।

अथर्व- ४.१५.१

पदार्थ- (**नभस्वतीः**) बादल से छायी हुई (**प्रदिशाः**) दिशाएं (**समुत्पतन्तु**) भले प्रकार से उदय हो। (**वातजूतानि**) पवन से चलाए गए (**अभ्राणि**) जल भले बादल (**संयन्तु**) छा जावें। (**महऋषभस्य**) बड़े गमनशील (**नदतः**) गरजते हुए (**नभ स्वतः**) आकाश में छाए (**बादल**) के (**वाश्राः**) धड़धड़ाती (**आपः**) जल धाराएं (**पृथिवीम**) पृथ्वी को (**तर्पयन्तु**) तृप्त करें।

भावार्थ- बादल से छायी हुई दिशाएं भले प्रकार उदय हों। पवन द्वारा चलाए गए जल भरे बादल छा जावें। बड़े गमनशील गरजते हुए बादल आवाज करती हुई जल धारा के रूप में वर्षा करें तथा अपने इस कार्य से पृथ्वी को तृप्त करें।

वर्षा के दिनों में गुजरते हुए मेघों की आवाज से ही मनुष्यों को आनन्द मिलता है। इसे अगले मन्त्र में बतलाया गया है।

समीक्षयन्तु तविषाः सुदानवोऽपां रसा ओषधीभिः सचन्ताम् ।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमि पृथग् जायन्तामोषधयो विश्वरूपाः।।

- अथर्व- ४.१५.२

पदार्थ- (**तविषाः**) विशाल गुण वाले (**सुदानवः**) बड़े दान करने वाले **मेघ हमें** (**वृष्टि**) वर्षा (**समीक्षयन्तु**) दिखावें। (**अपाम्**) जल के (**रसाः**) रस (**ओषधिभिः**) अन्नादि औषधियों से (**सचन्ताम्**) एक रस हो जावें। (**वर्षस्य**) वर्षा की (**सर्गाः**) धाराएं (**भूमिम्**) भूमि को (**महयन्तु**) समृद्ध करें। (**विश्वरूपाः**) नाना रूप वाली (**ओषधयः**) यवा चावल आदि औषधियां (**पृथक**) नाना प्रकार से (**जायन्ताम्**) उत्पन्न होवें।

भावार्थ- जल से भरे हुए विशाल बादल जल धाराओं के रूप में वर्षा कर पृथ्वी को तृप्त करें और अन्नादि को उत्पन्न करने का कारण बने। वर्षा के दिनों में किसान लोग रात को बैठकर वर्षा के लिए प्रार्थना करते हैं। उसका वर्णन भी वेद में किया गया है।

गणस्त्वोप गायन्तु मारुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक् ।
सर्गां वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु।।

अथर्व- ४.१५.४

पदार्थ- (**पर्जन्य**) हे मेघ! (**घोषिणः**) आनन्द की ध्वनि करने वाले (**मारुताः**) ऋत्विज् लोगों के (**गणाः**) समूह (**त्वा**) तेरा (**पृथक्**) नाना प्रकार से (**उप**) आदरपूर्वक (**गायन्तु**) गान करें। (**वर्षतः**) बरसते हुए (**वर्षस्य**) वृष्टि जल की (**सर्गाः**) धाराएं (**पृथिवीम्**) पृथ्वी पर (**अनु**) अनुकूल (**वर्षन्तु**) बरसें।

भावार्थ- वर्षा से आनन्दित होकर ऋत्विज् गण वृष्टि के गुणों को गाते हैं और यज्ञ के पदार्थ उत्पन्न होने लगते हैं। वर्षा से ही सब जगह हरियाली छा जाती है। पशुओं के लिए हरी घास उत्पन्न हो जाती है। किसान प्रसन्न मन से पशुओं को चराते हैं।

अभिक्रन्द स्तनयार्दयादधिं भूमिं पर्जन्य पवसा समड्धि।
त्वया सृष्टं बहुलमैतु वर्षमाशारैषी कृषगुरेत्वस्तम् । ।

- अथर्व- ४.१५.६

पदार्थ- (**पर्यन्य**) हे मेघ (**तू**) (**अभि**) सब और (**क्रन्द**) गड़-गड़ कर (**स्तनय**) गरज(**उदधिम्**) समुद्र को (**अर्दम**) हिला दे। (**भूमिम्**) भूमि को (**पयसा**) जल से (**समड्धि**) भर दे। (**त्वया**) तेरे द्वारा (**सृष्टम्**) भेजा गया (**बहुलम्**) बहुत पदार्थ लाने वाला (**वर्षम्**) वृष्टि जल (**ऐतु**) आवे। (**आशारैषी**) शरण चाहने वाला (**कृशगुः**) दुर्बल गौ, बैल वाला किसान (**अस्तम्**) अपने घर (**एतु**) जावे।

भावार्थ- मेघ को सम्बोधन कर कहा गया है कि है मेघ। तू सब ओर गड़-गड़ाते हुए, गरजते हुए समुद्र को हिला दे। भूमि को जल से भर दे। तेरे

द्वारा भेजे गए जल से अन्नादि की भरपूर फसल पके। किसान के दुर्बल बैल और गाय भी हरा घास चरकर पुष्ट हो जावें।

वर्षा के प्रारम्भ होते ही मेंढ़कों में प्राण आ जाते हैं। वर्षा के जल से सन्तुष्ट होकर वे टर्राने लगते हैं।

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मण व्रतचारिणः।
वाचं पर्जन्य जिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः ।।

– अथर्व ४.१५.१३

पदार्थ- (**संवत्सरम्**) बोलने से समय तक (**शशयानाः**) शयन करने वाले (**मण्डूकाः**) डुबकी लगाने वाले मेडुके (**व्रतचारिणः**) व्रतधारी (**ब्राह्मणः**) ब्राह्मणों के समान (**पर्जन्यजिन्विताम्**) मेंह से तृप्त की हुई (**वाचम्**) वाणी को (**प्र**) अच्छे प्रकार (**अवादिषुः**) बोलें।

भावार्थ- जैसे वेदज्ञ ब्राह्मण पहले मौन साधकर वेदों का ज्ञान प्राप्त कर फिर वेद मन्त्रों को गाते हुए उपदेश देते हैं वैसे ही मेंढ़क वर्षा से संतुष्ट होकर बोलने लगते हैं। इसी विषय को विस्तार देते हुए अगले मन्त्र में बताया गया है कि ब्रह्मज्ञानी लोग भी इस ऋतु में इस प्रकार मग्न होकर विचरण करते हैं।

उपप्रवद मण्डूकि वर्षमा वद तादुरि।
मध्ये ह्रदयस्य प्लवस्व विग्रह्य चतुरः पदः ।।

अथर्व ४.१५.१४

पदार्थ- (**मण्डूकि**) हे डुबकी लगाने वाली मेंडकी। (**उप प्रवद**) पास आकर बोल (**तादुरि**) हे तैरने वाली (**वर्षम्**) वर्षा को (**आवद**) बुला (**ह्रदस्य**) पोखर के (**मध्ये**) बीच में (**चतुरः**) चारों (**पदः**) पदों को (**विग्रह्य**) फैलाकर (**प्लवस्व**) तैर।

भावार्थ- वर्षाकाल में मेंढ़क की आवाज सुनने का मन होता है। अब हम विषय को दूसरे ढंग से रखने का प्रयास कर रहे हैं। नदी का नामकरण कैसा हुआ? इस पर वेद का उत्तर है-

यददः संप्रयतीरहावनदता हते।
तस्मादा नद्यो नानस्थ तावो नानानि सिन्धवः।।

अथर्व. ३.१३.१

पदार्थ- हे बहने वाली नदियों। मिलकर आगे बढ़ती हुई तुमने मेघ के ताड़े जाने पर यह जो नाद किया है, इसलिए ही नाद करने वाली नदी नाम तुम हो। वैसे ही तुम्हारा नाम है। वर्षा का मूल कारण सूर्य ही है, वही समुद्र के पानी को वाष्प बनाकर उड़ाता है। पवन उन्हें मिलाकर बादल का रूप दे देती है और सूर्य ही बादलों पर किरणों द्वारा प्रहार कर वर्षा करता है।

यत् प्रेषिता वरुणेनाच्छीमं समवल्गत ।
तदाप्नोदिन्द्रो वो यतीस्तस्मादापो अनुष्ठन।।

अथर्व. ३.१३.२

पदार्थ- (**यत्**) जब (**आत्**) फिर (**वरुणेन**) सूर्य के द्वारा (**प्रेषिताः**) भेजे हुए तुम (**शीभम्**) शीघ्र (**समवल्गत**) मिल कर चलो, (**तत्**) तब (**इन्द्रः**) सूर्य ने (**यतीः**) चलते हुए (**वः**) तुमको (**आप्नोत्**) प्राप्त किया (**तस्मात्**) उससे (**अनु**) पीछे (**आपः**) प्राप्ति योग्य जल नाम (**स्थन**) तुम हो।

भावार्थ- इस मन्त्र में कहा गया है कि जब सूर्य की शक्ति से जल भूमि पर आकर फैलता है तब प्राणी उसे प्राप्त करते हैं और सूर्य भी फिर ले लेता है। इससे जल का नाम '**आपः**' पाने योग्य वस्तु है। आपःशब्द नित्य स्त्रीलिंङ्ग बहुवचनान्त है। फिर जल का दूसरा नाम '**वार**' कैसे बना इस पर अगला मन्त्र कहता है-

अपकामे स्यन्दमाना अवीवरत वो हि कम् ।
इन्द्रो वः शक्तिभिर्देवीस्तस्माद् वार्नाम वो हितम् ।।

- अथर्व. ३.१३.३

पदार्थ- (**वः**) वेगवान् वा वरणीय (**इन्द्रः**) सूर्य ने (**हि**) ही (**अपकामम्**) व्यर्थ (**स्यन्दमानाः**) बहते हुए (**वः**) तुमको (**शक्तिभिः**) अपनी शक्तियों के द्वारा (**कम्**) सुख से (**अवीवरत**) वरण (**स्वीकार**) अथवा वारण (**रोकना**) किया। (**तस्मात्**) इससे (**देवीः**) हे दिव्य गुणवाली वा खेल वाली धर धारणाओं (**वः**) तुम्हारा (**नाम**) नाम (**वार**) वरण करने योग्य जल (**हितम्**) रक्खा गया है।

भावार्थ- मनुष्य भूमि पर अन्नादि के लिए और सूर्य आकाश में वृष्टि के लिए जल को चाहता है, अतः उसे रोकता है, इसीलिए जल का नाम '**वार्**' है। 'अवीवरत' क्रिया और '**वार्**' शब्द दोनों '**वृञ्**' चाहना वा रोकना धातु से बने हैं। जल समुद्र से सूर्य द्वारा सोखा जाने पर वाष्प रूप में ऊपर चढ़ता है। इसलिए '**उदक**' भी जल का नाम है। वेद का कथन है-

एको वो देवोऽप्यतिष्ठत् स्यान्दमाना यथावशम् ।
उदानिषुर्महीरिति तस्माद् उदकमुच्यते।।

अथर्व. ३.१३.४

पदार्थ- अकेला जयशील परमात्मा इच्छानुसार बहते हुए तुम्हारा अधिष्ठाता हुआ। शक्ति वाले (**जल**) ने इस प्रकार ऊपर को श्वास ली। इसलिए वेद को श्वास लेने वाला उदक व जल कहा जाता है। जल के यथावत् प्रयोग से प्राणी में दर्शन शक्ति और श्रवण शक्ति तथा वाक् शक्ति प्रभावी बन जाती है।

आदित् पश्याम्युत वा श्रृणोम्या मा घोषो गच्छति वाङ्.मासाम्।
मन्ये भेजानो अमृतस्य तर्हि हिरण्यवर्णा अतृपं यदा वः।।

अथर्व. ३.१३.६

पदार्थ- (**आत्**) तब (**इत्**) ही (**पश्यामि**) मैं देखता हूँ, (**उत**) और (**वा**) अथवा (श्रृणोमि) मैं सुनता हूँ, (**आसाम्**) इसकी जल के रस की (**घोषः**) ध्वनि (**मा**) मुझे (आगच्छति) आती है और (**वाक्**) वाक् शक्ति (**मा**) मुझे आती है। (**हिरण्यवर्णाः**) हे सुवर्ण का विस्तार करने वाले जल (**तर्हि**) तभी (**अमृतस्य**) अमृत का (**भेजानः**) भोग करता हुआ मैं (**मन्ये**) अपने को मानूं, (**यदा**) जब (**वः**) तुम्हारी (**अतृपम्**) तृप्ति मैंने पाई है।

अब विषय को अधिक विस्तार न देकर केवल एक मन्त्र और देकर विराम देते हैं। अधिकांश नदियां हिमयुक्त पर्वतों से निकलकर मैदानों में बहती हुई प्राणियों को तृप्त करती हुई समुद्र में जाकर आश्रय प्राप्त करती है। इस विषय में वेद का कथन है-

हिमवतः प्रस्त्रवन्ति सिन्धो समह संगमः।
आपो ह मह्यं तद् देवीर्रदन् ह्रदद्योत भेषजम् ।।

अथर्व- ६.२४.१

पदार्थ- (**आपः**) व्यापक जल धाराएं (**हिमवतः**) हिम वाले पहाड़ से (**प्रस्त्रवन्ति**) बहती रहती है और (**समह**) हे महिमा के साथ वर्तमान पुरुष। (**सिन्धो**) बहने वाले समुद्र में (**सङ्गम**) उनका संगम है। (**देवीः**) हे दिव्यगुण वाली जल धाराओं (**ह**) निश्चय करके (**मह्याम्**) मेरे लिए (**ह्रदद्योत भेषजम्**) ह्रदय का भय जीतने वाला ओषध (**ददन्**) देवे। ■

गुरु का वरण- तस्मै श्री गुरुवे नमः

स्मृति शेष -प्रो. उमाकांत उपाध्याय
आद्य सम्पादक-आर्य संसार
आर्य समाज- विधान सरणी, कोलकाता (प.बंगाल)

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया,
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः

भारतवर्ष की महिमामयी संस्कृति में, ऋषियों की परम्परा में तीन गुरु माने जाते हैं। ''**शतपथ ब्राह्मण**'' में कहा गया है- ''**मातृमान् पितृमान, आचार्यवान् पुरुषो वेद**'' मनुष्य का प्रथम गुरु माता है, द्वितीय गुरु पिता है और तृतीय गुरु आचार्य है। माता-पिता का चुनाव संतान के वश में नहीं होता है, सन्तान का चुनाव भी माता-पिता के वश में नहीं होता। किस माता-पिता को कौन सी संतान मिलेगी और किस संतान को कौन से माता-पिता मिलेंगे। यह परम प्रभु परमेश्वर की व्यवस्था से जीवों के कर्मानुसार होता है। संसार में बिना गुरु-विहीन व्यक्ति तो होते हैं किन्तु बिना माता-पिता के कोई प्राणधारी नहीं होता, अतः मातृमान और पितृमान का ऋषियों ने अर्थ बताया है कि वस्तुतः वह संतान वास्तव में माता-पिता वाली है, जिसके माता-पिता धार्मिक, विद्वान और मानवता के प्रशंसनीय गुणों से युक्त हो, सो माता-पिता का वरण नहीं किया जाता, वे जीव के कर्मानुसार परमेश्वर की व्यवस्था से प्राप्त होते हैं।

गुरु या आचार्य का चयन या वरण किया जाता है, शिष्य का भी वरण या चयन किया जाता है। न सभी को गुरु बनाया जाता है और न सभी को शिष्य बनाया जाता है। वेद में एक मन्त्र आता है जिसमें गुरु आचार्य के गुणों की व्याख्या है-

सं. पूषन् विदुषा नय, यो अञ्जसानुशासित य एवद मिति ब्रवत्
- ऋग. ६-५४-१

इस मन्त्र में विद्यार्थी पूषन् परमेश्वर से प्रार्थना करता है, उषादेव पुश्तिदाता परमेश्वर है। पोषण शरीर का तो होता ही है मन, बुद्धि और चित्त का भी होता है। सामाजिक समरसता, सामंजस्य का भी होता है। गुरुदेव तो मन, मस्तिष्क, बुद्धि, चित्त, चरित्र, आचरण, सबका पोषण करने वाले होते हैं, अतः मन्त्र में यह भाव है कि गुरुदेव के पास विद्या की प्राप्ति के लिए ज्ञान की उपलब्धि के लिए हमारे शरीर, अन्नमय कोष प्राणमय कोष और मनोमय कोष का सब प्रकार से पोषण होता रहे, मन्त्र में परमेश्वर से प्रार्थना यह की गई है कि - हे पूषन देव! हमें ऐसे विद्वान् गुरु के पास पहुंचाइये जो- **यःअञ्जसा अनुशासति (अनुशास्ति)**- जिसकी अध्यापन करने की विधि में सरलता, शीघ्रता हो, शिष्य सरलता से हृदयंगम कर सकें, कई व्यक्ति स्वयं तो विद्वान है, किन्तु उनमें शिष्यों द्वारा ग्राह्य अध्यापन कला नहीं होती। अध्यापन में संप्रेषणीयता, ज्ञानदान की कला होनी चाहिए।

मन्त्र का तीसरा खण्ड है- **य एवेदमिति ब्रवत्** -इसका अभिप्राय यह है कि अध्यापक को यह निश्चयात्मक ज्ञान हो कि यह विषय, ज्ञान, इतना ही है। ज्ञान का प्रथम पक्ष है सिद्धांत (Theory) और दूसरा पक्ष व्यवहार और प्रयोग (Practice and Working) विषय का सैद्धान्तिक ज्ञान अधूरा है, जब तक उसका जीवन में प्रयोग, व्यवहार न समझ में आ जाए, विद्या की वास्तविक उपयोगिता व्यवहार और प्रयोग ही है।

मन्त्र का एक बहुत महत्वपूर्ण अंश है कि '' हे पूषन, देव, पोषण करने वाले प्रभु, हमें विदुषानय, हमें विद्वान, सुविज्ञ गुरु के पास पहुंचाइये, विद्या का आदान-प्रदान तभी सम्भव हो सकेगा जब गुरु और शिष्य एकत्र, एक जगह इकट्ठे हों, गुरु शिष्य के एकत्र होने की दो विधियां समझ में आती है- एक है कि शिष्य गुरु के चरणों में श्रद्धापूर्वक स्वयं उपस्थित हो, गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं- ''**श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् तत्परः संयतेन्द्रियः**'' (गीता ४-३९) इसका अभिप्राय यह है कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए तीन आवश्यक शर्तें हैं, पहली शर्त यह है कि शिष्य में श्रद्धा हो, विद्या प्राप्ति प्रति श्रद्धा हो और गुरु के ज्ञान, जीवन और चरित्र के प्रति श्रद्धा हो, दूसरी शर्त यह है कि शिष्य विद्या प्राप्ति में तत्पर हो, शिष्य के जीवन का उद्देश्य विद्या प्राप्ति हो। ज्ञान-प्राप्ति की तीसरी शर्त है कि विद्यार्थी के जीवन में भोग-विलास के प्रति संयम हो, शिष्य विलासी न हो और तपस्वी हो। साथ ही हमारे जीवन में भोग-इन्द्रियों पर नियंत्रण हो, हम जिह्वा से स्वाद का भोग करते हैं, नाक से सुगंध का, कान से शब्द का, आँख से सुन्दर रूप का और त्वचा से स्पर्श का भोग करते हैं, शिष्य भोगी-विलासी न हो, जीवन में संयमी हो, तभी ज्ञान प्राप्त कर सकेगा। शिष्य को सुपात्र, श्रद्धावान और संयमी होना आवश्यक है। एक बड़ी प्रसिद्ध कहावत है-

फूलहिं फलहिं न बेंत, जदपि सुधा बरसहिं जल्द.
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलै बिरंची सम.

गीता में कहा गया है- **उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ग्यानिनस्तत्व दर्शिनः'** (गी.४-३४) अर्थात् तत्वदर्शी गुरु लोग ज्ञान का उपदेश देंगे और अध्यापन कला में निपुण गुरु लोग शिष्य के हृदय में ज्ञान को पहुंचा भी देंगे किन्तु शिष्य के लिए आवश्यक है- ' **तं विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया**' (गी. ४-३९) अर्थात् शिष्य को उचित है कि वह गुरु के प्रति श्रद्धापूर्वक प्रणाम अर्पित करे, फिर बड़ी नम्रता से गुरु से प्रश्न भी करे, अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करवा ले और साथ ही गुरू

के प्रति सेवा शुश्रुषा (**श्रोतुमिच्छा**) की भावना बनाये रखे।

हमने ऊपर यह लिखा था कि गुरु शिष्य के मिलन के, एकत्र होने के दो प्रकार हैं अब तक हम प्रथम प्रकार की चर्चा कर रहे थे कि शिष्य गुरु के चरणों में श्रद्धापूर्वक उपस्थित हो, गुरु शिष्य के मिलन का दूसरा प्रकार है कि गुरु-शिष्य के पास पढ़ाने के लिए जाए। यह ट्यूशन पद्धति है। आजकल तो ट्यूशन बहुत प्रचलित हो गया है। अध्यापक रुपयों के पीछे शिष्यों के पास जाते रहते हैं। प्राचीन भारत में, जहां तक हम सोचते हैं एक ही ट्यूटर द्रोणाचार्य हुए थे, द्रोणाचार्य ही अपने निर्वाह के लिए भीष्म पितामह के पास पहुंचे थे। इस ट्यूशनी विद्या का बड़ा भारी दुष्परिणाम हुआ था। द्रोणाचार्य ने ''**अर्थस्य पुरुषो दास**'' कहकर अपनी सफाई दी थी और महाभारत के युद्ध में जब तक भीष्म पितामह कौरवों के सेनापति बने रहे तब तक अधर्म युद्ध नहीं हुआ था। जब द्रोणाचार्य सेनापति बने तब ही अधर्म युद्ध आरम्भ हुआ था। द्रोणाचार्य ने ध्रुत-क्रीड़ा के समय द्रौपदी के वस्त्रहरण के समय और अत्यन्त अन्यायपूर्वक अभिमन्यु वध के समय आदि अवसरों पर अन्याय का समर्थन किया था। यह है गुरु का धन आजीविका लोभ में शिष्य के पास जाना, प्रस्तुत मन्त्र में सन्देश है कि शिष्य को गुरु के चरणों में उपस्थित होना चाहिए और गुरु के अनुशासन, नियंत्रण में विद्या ग्रहण करना और अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।■

मानव जीवन-मोक्ष की पाठशाला

- नरेंद्र आहूजा 'विवेक' -
६०२ जी.एच. ५३, सेक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६

जिस प्रकार किसी पाठशाला में दाखिला लेकर एक विद्यार्थी अपने निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ता हुआ उस उद्देश्य से शिक्षा ग्रहण करता है कि वह उस कक्षा में उत्तीर्ण होकर अंततः उस विद्यालय की अंतिम डिग्री को प्राप्त कर ले ताकि उसके उपरांत वह आगामी शिक्षा के लिए आगे किसी महाविद्यालय में दाखिला ले सके। ठीक उसी प्रकार मनुष्य के रूप में जन्म लेकर एक बालक मोक्ष की पाठशाला में दाखिला लेता है।

जैसे विद्यालय में दाखिला लेने से पूर्व कुछ मूलभूत तैयारी अर्थात् बस्ता-किताबें साधन होने चाहिए, ठीक उसी प्रकार मनुष्य के रूप में जन्म लेकर इस दुनिया की मोक्ष की पाठशाला में दाखिला केवल परमपिता परमेश्वर न्यायकर्ता द्वारा हमारे पूर्व जन्मों के फलों के आधार पर एक अनमोल तन अनुपम साधन मनुष्य शरीर के रूप में दिया जाता है। बिना जन्म के मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए जन्म पुनः जन्म एक लम्बी कड़ी के रूप में लेने पड़ते हैं। जैसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक-एक वर्ष में एक-एक कक्षा में प्रवेश लेकर स्वाध्याय करते हुए परीक्षा देकर परीक्षक द्वारा परीक्षा फल मिलने के उपरांत ही सीढ़ी दर सीढ़ी उत्तीर्ण होते हुए उच्च डिग्री हासिल होती है। ठीक उसी प्रकार इस विशाल मुक्ति विद्यालय का एक-एक जन्म कक्षाओं के रूप में मिलता है। यह जीवात्मा देही या रथी ईश्वर प्रदत्त सर्वोत्तम साधन मानव शरीर का उपयोग वा उपभोग अपने लक्ष्य की प्राप्ति अर्थात् मुमुक्षत्व के लिए करना चाहती है। अब प्रश्न उठता है कि हमें अगली कक्षा में पूर्व कक्षाओं का पढ़ा हुआ आधार मिलता है। ठीक उसी प्रकार ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत कर्मफल सिद्धान्त में बाकि सभी एकत्रित किए हुए भौतिक सुख-सुविधाओं के साधन पीछे छूट जाते हैं। लेकिन हमारे किए हुए कर्म संस्कार रूप में ठीक उसी प्रकार साथ जाते हैं जैसे पिछली कक्षाओं में पढ़ा हुआ ज्ञान। और फिर जैसे हम अपनी वांछित डिग्री को प्राप्त करते हैं वैसे ही मानव जीवन के उद्देश्य अर्थात् मोक्ष को भी प्राप्त कर सकते हैं। जीव, देही, रथी की नित्यता गीता के प्रसिद्ध श्लोक **नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः** से स्पष्ट है अर्थात् यह जीवात्मा अजर अमर अविनाशी है जो ना मरता है, ना गलता है, न जलता है, परन्तु गीता में योगेश्वर कृष्ण ने स्पष्ट कर दिया-**वासांसि जीर्णानी यथा विहाय**' यानि जीव चोला बदलता रहता है। जीर्ण शीर्ण होने पर जीव मानव चोले को बदल सकता है। यह साधन मनुष्य का शरीर जो अग्नि, जल, वायु, आकाश और पृथ्वी इन पांच तत्वों के संयोग से बना पुनः विभक्त होकर इन्हीं पांच तत्वों में विलीन हो जाता है। साधन अर्थात् जीवात्मा का साधन अर्थात् योनि के तन से संयोग जन्म और वियोग का नाम ही तो मृत्यु है। साधक अर्थात् जीवात्मा का अजर अमर अविनाशी नित्य होना और साधन अर्थात् शरीर का मरणधर्मा अनित्य होना ही इसका मोक्ष की इस महान पाठशाला में अगली कक्षा में प्रवेश को दिखलाता है।

अब प्रश्न उठता है कि मनुष्य अपने जीवन काल में किस प्रकार के कर्म करे कि वह अपने जीवन के लक्ष्य, उद्देश्य अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करके अपने आत्मा को उस सत्य चेतन आनन्दस्वरूप परमात्मा के आनन्द में निमग्न करके जन्म जाल के बंधन से लम्बी अवधि को लिए मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त कर सके। इसके लिए भी योगेश्वर कृष्ण ने '**यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्** ' अर्थात् यज्ञ दान तप आदि कर्म मनुष्य को पवित्र करने वाले हैं। इनको त्यागना नहीं चाहिए। इनके द्वारा ही अभ्यास करते-करते मनुष्य में मोक्ष प्राप्ति की भावना उत्पन्न हो जाती है। वैसे भी गीता में योगेश्वर कृष्ण ने निष्काम भाव से किए गए परोपकार के यज्ञीय कार्यों को सर्वश्रेष्ठ कर्म की संज्ञा दी है। इस प्रकार मनुष्य जीवन में सांख्य या ज्ञान योग से सत्य ज्ञान प्राप्त कर और उस सत्य ज्ञान को जीवन में धारण करके उसी के अनुरूप कर्म करता हुआ कर्म योगी बनकर ईश्वर की प्रत्येक आज्ञा अर्थात् अर्न्यामी ईश्वर के हर संदेश को सुनकर उसका यथावत पालन करता हुआ ईश्वर की भक्ति करके जीवन के उद्देश्य अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। ■

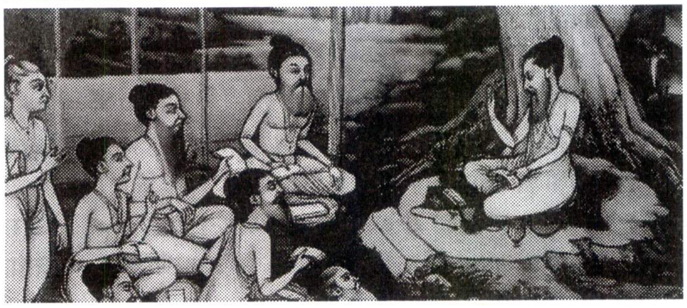

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेध याऽग्ने मेधा विनं कुरु।। -यजु. ३२.१४

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर जिस मेधा बुद्धि का आश्रय लेकर मनुष्य परमपद प्राप्त कर लेता है, उसी मेधा बुद्धि से हमें भी अलंकृत कीजिए।

प्राणी मात्र के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक के समय को उसका जीवन काल कहा जाता है। जिसे वह अपनी सामर्थ्य अनुसार अपने ढंग से अपने ही बल बूते पर उस परमेश्वर की न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत जीने में जीवन भर प्रयासरत रहता है। फिर भी उसे अपनी इस यात्रा में अनेकों सहयोगियों, मार्गदर्शकों व गुरुओं की आवश्यकता पड़ती है। इस श्रेणी में उसके लिए तीन संज्ञाये प्रमुख हैं। माता-पिता और आचार्य जो उसके जीवन की नींव के आधार स्तंभ होते हैं माता-पिता जन्म देते हैं जीवन नहीं, गुरु जीवन देता है, जन्म नहीं। जन्म की मृत्यु होती है जीवन की नहीं! इसलिए गुरु चाहे उसका रूप कोई भी हो जीवन उसी का दिया हुआ होता है।

यह सत्य है कि मानव चोला क्षणभंगुर है, परन्तु यह भी निर्णायक सत्य है कि परमात्मा (लक्ष्य) की प्राप्ति भी इसी शरीर द्वारा ही होती है। मनुष्य जब संसार में आता है तो उसे अपने जीवन से संबन्धित विभिन्न क्रिया कलापों हेतु अनेक गुणों की जरूरत पड़ती है, तत्सम्बन्धित गुण अर्जन के लिए कई गुणवान पुरुषों, महिलाओं, पदार्थों व अन्यों को गुरु के रूप में स्वीकार करना पड़ता है। ऐसे में कई पुरुष-स्त्री, पुरुष-स्त्री रूपी गुरुओं के गुरुडम में फंसकर अपना तन, मन, धन बर्बाद कर लेते हैं जो कि निंदनीय है। यदि हम परमात्मा के बारे में थोड़ा भी सत्य मन से मनन चिन्तन कर लें तो आज की इस गम्भीर समस्या से बचा जा सकता है।

हमारा देश विश्वगुरु रहा है तथा इस पद की गरिमा के गौरव का गुमान आज भी हमारे पास है। संसार की प्रथम पुस्तक वेद (जो चार है) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद! जिन्हें ईश्वरीय प्रेरणा से चार ऋषियों ने रचा है, जिनमें इसी ईश्वर द्वारा रचित जड़ चेतन सभी पदार्थों एवं ज्ञान-विज्ञान का भंडार बीज रूप में वर्णित है, उसी ज्ञान से प्रभावित होकर कई विद्वानों ने संस्कृत भाषा सीखी और उन्होंने भी वेदों का भाष्य किया। यह बात और है कि वे वेदों के गूढ़ रहस्यों को जान पाने के स्थान पर अर्थ का अनर्थ कर गए, जिनमें उव्वट, सायण, महिधर, ग्रिफिक तथा मेक्समूलर के नाम प्रमुख हैं। वैदिक ज्ञान पर हमारे यहां तथा विदेशों में कई शोध व आविष्कार हो चुके हैं कई विद्वानों ने अपने ज्ञान को वैदिक ज्ञान से जोड़ने के प्रयास में वैदिक शब्दावलियों के अर्थों का अनर्थ करके अश्वमेध,

गुरु

- रामचन्द्र कारपेन्टर -
सेवानिवृत्त प्रधानाध्यपक
ब्यावरा, मुलतानपुरा वार्ड क्रमांक.१
जिला राजगढ़ (ब्यावरा)
चलभाष- ९८२६८७७८२६

गोमेध तथा नरमेध यज्ञों का स्वरूप ही बदल दिया और यज्ञों में नर बलि या पशु बलि देने के पक्षधर बने। कई विद्वानों ने वेद जैसे पवित्र ग्रन्थों को गवैयों के गीतों की संज्ञा दी। कइयों ने यह प्रचारित किया कि वेदों को शंकासुर राक्षस चुरा कर पाताल ले गया है।

हम ऋणि हैं, वैदिक ज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान ऋषि देव दयानन्द सरस्वती जी महाराज के जिन्होंने अपने सत्यार्थ प्रकाश की पताका की

शास्त्रों का सौन्दर्य

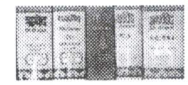

सागर को रत्नाकर भी कहा जाता है। रत्नों का आकार अर्थात् भण्डार। समुद्र के तल पर कई रत्न होते हैं। सीप मछली के पेट में जो मोती तैयार होते हैं, उन्हें भी वह उगल देती है तो वे सागर के गर्भ में समा जाते हैं। सीप मछली के खोल तथा मूंगे के खोल भी बहुत कीमती होते हैं। ये सब समुद्र में गहराई में जाने पर मिलते हैं।

भारतीय शास्त्र वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में रचयित हैं। हमारे धर्मशास्त्रों की संख्या एक सौ से अधिक है। इन शास्त्रों में अमूल्य रत्न छिपे पड़े हैं, किन्तु वे बहुत गहराई में जाने पर स्वाध्याय, चिन्तन, मनन एवं निदिध्यासन करने पर ही मिल सकते हैं। जो लोग इनमें गहराई तक पहुंचे, उन्होंने मधुर ज्ञानामृत का रसास्वादन किया है।

समुद्र की सतह के ऊपर देखें तो मात्र घास-पूस, कूड़ा-कचरा, मृत जानवरों के अवशेष आदि ही नजर आते हैं। कुछ लोग किसी शास्त्र की एक-दो पंक्तियां दूसरों से सुनकर उनकी उल्टी-सुलटी विवेचना करने लगते हैं। वे उस शास्त्र की गहराई में डुबकी नहीं लगाते हैं। सागर के ऊपर से आप कुछ प्राप्त करना चाहते हैं तो मात्र कूड़ा-कचरा एवं जानवरों के मृत खोल ही मिलेंगे। संत कबीर ने कहा है-

जिन खोला तिन पाइया, गहरे सागर पैठ।

शास्त्रों की निन्दा करने वाले लोग शास्त्रों के पास ही नहीं जाते हैं तो वे उनके सौन्दर्य के दर्शन कैसे कर पाएंगे? वे लोग ज्ञानामृत से वंचित ही रहेंगे।

- आचार्य रामगोपाल सैनी -
फतेहपुर शेखावाटी, जिला-सीकर
(राज.) चलभाष - ९८७३९३७१३

छांव में समस्त ढोल की पोल खोली। सभी विरोधियों को भी सही रास्ता दिखाते हुए हिन्दुस्तान के फिल्मिस्तान की माया नगरी व देश की आर्थिक राजधानी मुम्बई जैसे महानगर में सन् १८७५ में वेद प्रचार के रूप में प्रथम "**आर्य समाज**" की स्थापना की। आज लगभग ५००० आर्य समाज पूरे विश्व में वैदिक धर्मगुरु के रूप में प्रचार मिशन की भावना से कार्यरत है। संसार के सभी विकसित तथा प्रतिष्ठित देशों के बड़े-बड़े पुस्तकालयों में वेद सुरक्षित रखे हुए होकर आदर्श गुरु के रूप में जनता जर्नादन तक के ज्ञान का मार्गदर्शन कर रहे हैं। आज विज्ञान भी स्वीकार करता है कि पृथ्वी हमारी माता के साथ गुरु भी हैं। अपने गुरुत्वाकर्षण के बल से वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है। इसी गुरुत्व बल के प्रभाव में आकर हमारे प्रसिद्ध प्रमाणिक ग्रन्थ 'महाभारत' का एक भील बालक एकलव्य धनुर्विद्या सीखने की उत्कृट इच्छा लेकर तत्कालीन धनुर्विद्या के प्रसिद्ध गुरु, आचार्य श्री द्रोणाचार्यजी के पास गया। उसने धनुर्विद्या सीखने की कामना की। आचार्य जी ने इनकार तो नहीं किया, परन्तु अपनी असमर्थता बताकर विद्या सिखाने से मना कर दिया। निराश एकलव्य जंगल में गया तथा गीली मिट्टी से सामान्य सी मानवाकृति बनाई तथा उसी को गुरु मानकर धनुर्विद्या कर अभ्यास शुरू कर दिया। कालान्तर में गुरुद्रोण अर्जुन सहित अपने शिष्यों के साथ उधर घूमने निकले। काले कलूटे एकलव्य को देखकर उनके साथ के कुत्ते ने भौंकना शुरू कर दिया। एकलव्य ने अपनी धनुर्विद्या का परिचय देते हुए कुत्ते को बिना किसी नुकसान के उसके मुंह में बाण भर दिए। आगे बढ़ने पर अपनी बाण कुशलता के साथ एकलव्य का परिचय गुरुद्रोण के शिष्य के रूप में हुआ। गुरु दर्शनार्थ अपने द्वारा गढ़ी गई मिट्टी की मूर्ति बताई। एकलव्य की धनुर्विद्या का विचित्र चमत्कार देखकर चतुर द्रोणाचार्य को अपने साथ अपने शिष्य अर्जुन का ख्याल आया तथा सोचा कि यह बालक धनुर्विद्या में अर्जुन से आगे तो है ही भविष्य में मेरे लिए भी चुनौती है। दोनों समस्या के स्थायी निदान हेतु आचार्य द्रोण ने एकलव्य से गुरु दक्षिणा में उसके दाहिने हाथ का अंगूठा मांग लिया। एकलव्य 'गुरु भक्ति' की अंधी श्रद्धा में आ गया और अंगूठा देकर अपने ही द्वारा निर्मित व अर्जित अपनी ही कोटि की विद्या पर आवरण डाल गया तथा आचार्य श्री द्रोणाचार्य जी ने गुरु दक्षिणा में अंगूठा लेकर अपनी ही अनुपम व विशेष विद्या के विकास पर विराम लगा दिया। तथा गुरु, गुरुत्व और गुरुत्वाकर्षण तीनों को पीछे धकेलते हुए यह सिद्ध कर दिया कि 'अभ्यास ही गुरु है।'

वह कार्य जो हमें असम्भव सा लगे यदि हम उस ओर मन वचन कर्म से सही दिशा में सही समय पर सही प्रयास करें तो सफलता अवश्य मिलती है। भगवान राम व कृष्ण के भी गुरु थे। रावण व कंस के भी गुरु थे। एक बन गया एक मिट गया। एक का नाम हो गया एक बदनाम हो गया। एक आबाद हो गया एक बरबाद हो गया। इसलिए गुरु ही बनाता है, गुरु ही चलाता है और गुरु ही मिटा देता है, यह भी गुरुप्रसाद के रूप में सीखने के सार्मथ्य का प्रताप है। अतः.....

गुरुं साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।

इसीलिए कहा गया है कि वही परमेश्वर हमारा स्वामी , गुरु राजा और न्यायाधीश है। अन्ततोगत्वा यह जीवन व जीवन से सम्बन्धित सभी प्राप्तियां हमारे कर्म और उसी ईश के आशीष का फल है। ■

पृष्ठ १० का शेष भाग

आर्य समाज क्रान्तिकारियों की जननी है

वहां भी उन्होंने अपने प्राध्यापकों पर अपनी अद्भुत प्रतिभा का छाप शीघ्र ही डाल दिया। महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त तथा क्रान्तिकारियों के आदि गुरु श्यामजी कृष्ण वर्माजी ने लन्दन में "**इण्डिया हाऊस**" की स्थापना पहले ही कर रखी थी। यह "**इण्डिया हाऊस**" क्रान्तिकारियों की शरणस्थली थी। यहां हरदयाल जी की भेंट श्यामी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, वीर सावरकर आदि से हुई। इनके सम्पर्क में आने से हरदयाल को राष्ट्रभक्ति की धुन ऐसी लग गई कि उन्होंने आक्सफोर्ड की छात्रवृत्ति लेना भी बन्द कर दिया और यूनिवर्सिटी से त्याग पत्र देकर केवल राष्ट्र भक्ति का कार्य ही करने लगे। हरदयाल जी की वाणी में एक जादू जैसा था जिससे क्रान्तिकारियों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता था।

क्रान्तिकारियों के परामर्श से वे भारत में आन्दोलन को तेज करने के लिए लाहौर आ गए। यहां इन्होंने एक क्रान्तिकारी आश्रम का गठन किया जिसमें लाला हनुमन्त सहाय, मास्टर अमीर चन्द, अवध बिहारी लाल व भाई बालमुकुन्द जिनको दिल्ली बमकाण्ड में फांसी हुई थी। इन क्रान्तिकारियों को तैयार करने में लाला हरदयाल जी की ही देन है। उनके कार्यों की भनक सरकार को पड़ जाने से उनके पीछे गुप्तचर, हर समय रहने लगे। उनसे बचने के लिए वे लाहौर से निकलकर कोलम्बो, इटली होते हुए फ्रांस पहुंच गए। फ्रांस की राजधानी से वे जनवरी १९११ में भाई परमानन्द के साथ अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य में जा पहुंचे। वहां अनेक क्रान्तिकायिों से मिलकर एक गदर पार्टी का गठन किया, जिसके प्रधान सोहनसिंह भकना तथा मन्त्री लाला हरदयाल बने। साथ ही पार्टी ने "गदर" नाम का एक पत्र निकाला जिससे क्रान्तिकारी विचार फैलाने में काफी सहयोग मिला। क्रान्तिकारी इस पत्र को सैनिक छावनियों तक भेजकर क्रान्ति की गति बढ़ी तेज कर दी। सरकार की नजर पड़ने से हरदयाल जी को बर्लिन आना पड़ा। वहां भी उनको अनेकों क्रान्तिकारी मिल गए। लाला हरदयाल जी के आने से उनमें नया जोश आ गया। यह समय प्रथम विश्वयुद्ध का समय था। भारत में गदर पार्टी के क्रान्तिकारी भारत को स्वतन्त्र करवाने की योजना बना रहे थे, तब लाला हरदयाल ने जर्मन से मिलकर भारत के क्रान्तिकारियों के पास काफी हथियार भिजवाए परन्तु वह योजना कृपालसिंह गद्दार के कारण असफल हो गई तब हरदयाल का मन क्रान्तिकारी कार्यों से हटकर अध्यात्म और दर्शन की ओर मुड़ गया। वे जर्मनी से स्वीडन होते हुए पुनः लन्दन आ गए।

लाला हरदयाल एक सच्चे ईमानदार देशभक्त थे, उन्होंने कभी भी आर्थिक स्थिति सुधारने की कोशिश नहीं की और अर्थाभाव में ही वह महान् आदर्श क्रान्तिकारी ४ मार्च १९३९ को फिलडेल्फिया (अमेरिका) में मोक्षगामी बने। माना जाता है कि अंग्रेज गुप्तचरों ने उन्हें जहर दे दिया था।■

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर अप्रैल २०१७ में उपदेशामृत वर्षा

गत अंक के पृष्ठ ३९ पर वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड़ (गुजरात) में सम्पन्न क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर अप्रैल २०१७ की विस्तृत गतिविधियां प्रकाशित की गई थी, किन्तु स्थानाभाव के कारण विद्वतजनों के मुखारविंद से उपदेशामृत वचनों को स्थान नहीं दे पाए थे। इस कारण इस अंक में संक्षिप्त रूप में जो संकलित कर पाए आर्य जगत् के लाभार्थ प्रस्तुत है। सर्वप्रथम मुस्लिम परिवार में जन्में, पले-बढ़े किन्तु परमपिता परमात्मा की आसीम कृपा से आज आर्य जगत् के सिरमौर, वैदिक धर्म को अनेक संन्यासी, विद्वान देकर अनुपम सेवा करने वाले, ईश्वर का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करने वाले स्वामी सत्यपति जी महाराज के उपदेशामृत प्रस्तुत है।

वृद्ध उसे कहते हैं, जिसने वृद्धि को पा लिया हो, ऐसे वयोवृद्ध, ब्रह्मविद्या वृद्ध, समाधिवृद्ध, कृण्वन्तों विश्वमार्यम् की दिशा में क्रान्तिकारी कार्य करने वाले, पतंजलि प्रणीत योग दर्शन को जन सामान्य तक पहुंचाने वाले लगभग ९० वर्ष आयु अवस्था के परम सम्मान के योग्य स्वामी सत्यपति जी द्वारा शिविर के प्रत्येक दिवस, प्रात:काल देवयज्ञ पश्चात् उपदेशित किया गया। आपके समाधि अवस्था के अनुभवों से प्रत्यक्ष हुआ कि आप ईश्वर के आनन्द के अनुभव को प्रत्यक्ष कर चुके हैं। जो आपके अमृत वचनों से भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। गायत्री मन्त्र आपका सर्वाधिक प्रिय मन्त्र है, अपने उपदेश के प्रारम्भ में उसका वाचन अर्थ सहित करते हैं एवं आर्य समाज का तीसरा नियम **वेद सब सत्य विद्याओं को पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परमधर्म है,** उच्चारित अवश्य करते हैं, तथा महर्षि दयानन्द द्वारा रचयित आर्याभिविनय आपकी अतिप्रिय पुस्तक है। प्रतिदिन आर्याभिविनय के एक मन्त्र तथा उसकी व्याख्या प्रस्तुत करना आपके प्रवचन का अभिन्न अंग होता है।

दिनांक ०३.०४.२०१७ को आपके द्वारा उपदेशित अमृतवचन- मनुष्य की परिभाषा है विचार करके कार्य करने वाला, बिना विचारे कार्य करने वाला मनुष्य नहीं है। अब विचार करना है कि परमात्मा ने यह जो मनुष्य शरीर दिया है क्यों दिया है? इस मनुष्य जीवन का क्या प्रयोजन है? सत्य-असत्य का जैसा निर्णय ईश्वर कर सकता है, वैसा मनुष्य नहीं कर सकता। ईश्वर का नाम है प्रजापति, अर्थात् प्रजा का पालन करने वाला, बिना ईश्वर की प्राप्ति के हमारा दु:ख दूर नहीं हो सकता। ईश्वर ने प्रेरणा दी है मनुष्यों! यह हमारा शरीर कल रहेगा या नहीं रहेगा। इसका विश्वास नहीं है, अर्थात् ईश्वर को प्राप्त करो। यदि ईश्वर को जान लिया तो सफलता है नहीं जाना तो महान् हानि है और ईश्वर को पा लिया तो जीवन सफल है, यह सत्य है।

आपने व्यवहार भानु की महत्ता बताते हुए इसे पढ़ने की प्रेरणा सबको दी तथा विद्या प्राप्ति के चार साधन-पढ़ना-सुनना, मनन करना, निश्चय करना, तथा व्यवहार में लाना बतायें। आपने आर्याभिविनय की महत्ता के विषय में प्रकाश डालते हुए इसे सदैव पास रखने की प्रेरणा दी।

दिनांक ०४.०४.२०१७ को स्वामी सत्यपति जी द्वारा उपदेशित अमृत वचन- ईश्वर के साथ पिता-पुत्र का, माता-पिता का, उपासक-उपास्य का, गुरु-शिष्य का, साधक-साध्य का सम्बन्ध स्थापित करने से परमात्मा की प्राप्ति समाधि अवस्था में होती है।

ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति का ठीक-ठीक ज्ञान विवेक कहलाता है। विवेक से वैराग्य की प्राप्ति होती है। पांचों ज्ञानेन्द्रियों से लौकिक सुख होता है, उसमें चार प्रकार के दु:ख मिले रहते हैं।

दिनांक ०५.०४.२०१७ को स्वामी सत्यपति जी द्वारा उपदेशित अमृत वचन -आपके द्वारा आर्याभिविनय द्वितीय प्रकाश के आठवें मन्त्र **'वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं....'** की व्याख्या करते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द का उपदेश है कि उसको अर्थात् परमात्मा को अब से जाने तथा कभी नहीं भूलें। जब बुरे विचार बनेंगे तो बुरा कर्म होगा। सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है जब मनुष्य बुरा कर्म करने की योजना बनाता है तो परमात्मा उसके मन में भय-लज्जा संकोच उत्पन्न करता है। जब अच्छा कार्य करने का विज्ञान बनाता है तो आनन्द, उत्साह, उल्लास, उत्पन्न करता है। उस परमात्मा को जानें, कभी नहीं भूलें। वह कैसा है? पुरुषों में महानतम् है! उससे बड़ा तथा तुल्य कोई नहीं है। ये सृष्टि एक कण के बराबर उस ईश्वर के अन्दर है, इतना बड़ा है। तमस-अन्धकार रहित है।

परमात्मा की उपासना करने वाला सुखी होता है। वह पास से पास और दूर से दूर अर्थात् दसों दिशाओं में है, उसको मानने वाला ही मृत्यु से बच सकता है। अन्यथा कोई अन्य मार्ग नहीं है। ईश्वर को जानकर ही मृत्यु से छूट सकता है, ऐसी परमात्मा की दृढ़ आज्ञा है।

आपने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उपासना विषय को प्रस्तुत किया तथा कहा कि मनुष्य भीतर के व्यवहार को शुद्ध नहीं करता तो वह कितना भी पढ़ लेवे उसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। कण्ठ के नीचे दोनों स्तनों के बीच, उदर के ऊपर, हृदय प्रदेश है, वहा धारणा बनाओ परमपिता परमात्मा बाहर-भीतर सब जगह एक रस होकर विद्यमान है। अपने मन को एक जगह टिका लेने का नाम धारणा है। जहां धारणा बना ली वहां ध्यान लगाओ। ध्यान-धारणा-समाधि योग के तीन साधन हैं। ओ३म् को समाधि अवस्था में ध्यान करो। परमेश्वर के आनन्द बल-विद्या का चिन्तन करो। दूसरी अन्य किसी सांसरिक वस्तु का चिन्तन न करें। प्रथम चित्त को वृत्ति से हटाओ। हे ईश्वर आप आनन्द स्वरूप हैं, हे! ईश्वर आप सर्वज्ञ हैं, हे ईश्वर आप न्यायकारी हैं। आदि ईश्वर के गुणों का चिन्तन करें। समाधि काल में अन्य विषय हटाने से बचना चाहिए।

दिनांक ०६.०४.२०१७ को स्वामी सत्यपति जी द्वारा उपदेशित अमृतवचन-आपने पांच वृत्तियों के विषय में बताते हुए उन्हें रोकने हेतु प्रेरणा दी तथा यजुर्वेद के तेरहवें मन्त्र **'हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य.....'** मन्त्र की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि जब संसार नहीं बना था उस समय भी ईश्वर था। सारी सृष्टि का स्वामी एक है, सत्य विद्याओं और जड़-चेतन सभी का स्वामी एक ईश्वर है। सोना-चांदी का स्वामी ईश्वर को मानते हुए अपने को गौण स्वामी माने, अगर अपने को

मुख्य स्वामी मान लिया तो ईश्वर प्रणिधान नहीं होगा। उस ईश्वर के तुल्य दूसरा कोई नहीं है, तृण से लेकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना कर उसको धारण करने वाला ईश्वर ही है। सब पदार्थों का स्वामी परमात्मा है, उसने हमारे उपयोग हेतु ये पदार्थ हमें दे रखे हैं हम स्वामी नहीं है।

परमात्मा को कभी भूले नहीं, उसकी उपासना करें। मैं और मेरा मानना मिथ्याज्ञान है। जो परमात्मा को छोड़के ईश्वर के स्थान पर दूसरों की पूजा करता है, वह अपनी हानि करता है। योगाभ्यास-भक्ति का पर्यायवाची शब्द है। महर्षि दयानन्द जी ने यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का हिन्दी और संस्कृत भाषा में भाष्य किया है। आपने यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के मन्त्र तथा उसकी व्याख्या प्रस्तुत की। तथा कहा कि गुण-कर्म-स्वभाव शुद्ध हो गए तो मुक्ति के अधिकारी बन जाओगे। योगदर्शन पाद-४ में तीनों आश्रमों के व्यवहार की विद्या है। योगदर्शन के मूल सूत्रों को आपने बताया।

दिनांक ०७.०४.२०१७ को स्वामी सत्यपति जी द्वारा उपदेशित अमृत वचन- आर्याभिविनय के यजुर्वेद का मन्त्र '**योऽस्माकं...**' प्रस्तुत कर व्याख्या करते हुए कहा कि जो लोग ईश्वर और जीव को एक मानते हैं, ऋषि ने व्याख्या में बात उठाई है कि जो लोग नहीं जानते-मानते हैं उनकी दुर्गति होती है। ईश्वर और जीव दोनों एक है व नहीं? उत्तर-ब्रह्म और जीव की एकता न वेद से सिद्ध होती है न युक्ति से सिद्ध होती है, क्योंकि जीव में अविद्यादि है। ईश्वर में अविद्या नहीं होती, जीव दोषादि ये युक्त होता है, ईश्वर में दोषादि नहीं होते। ईश्वर-जीव व प्रकृति एक नहीं थे, नहीं है और नहीं होंगे। व्याप्य तथा व्यापक सम्बन्ध से एक है। व्याप्त-व्यापक ये सातवें समुल्लास में है। संयोग सम्बन्ध है।

ईश्वर अति सूक्ष्म है, जीव कुछ मोटा अणु रूप है दोनों एक जगह रहते हैं। लोहे के गोले को तपाओ तो लोहे का गोला स्थूल है। अग्नि उसमें अन्दर-बाहर रहती है। जीवात्मा लोहे के गोले रूप है तथा परमात्मा अग्निस्वरूप होकर जीवात्मा के भीतर और बाहर दोनों जगह होता है।

योगाभ्यास के अंतिम अंग ध्यान-धारणा-समाधि अपनी वृत्तियों को चित्त से हटाकर हृदय प्रदेश पर धारण करो, फिर ईश्वर के सत् -चित्त-आनन्दस्वरूप का चिन्तन करो। यह ध्यान है। पहले मन्त्र बोले- फिर उसके अर्थ का चिन्तन करें। यह ध्यान है। पहले मन्त्र बोले फिर उसके अर्थ का चिन्तन करें। '**ध्यान करते समय किसी अन्य विषय को ध्यान में मत लाओ**' ईश्वर द्वारा सत-रज-तम तत्वों से मन-बुद्धि तथा इन्द्रियों को बनाया गया है। ये सब पूरा शरीर जड़ है। जड़ का अर्थ है ज्ञान रहित, चेतन का अर्थ ज्ञान वाला है। मैं चल रहा हूं, यह अविद्या, अर्थात् शरीर को मैं मानते, जब कि शरीर को मैं (आत्मा) चला रहा हूँ ये जानना और मानना विद्या है। योग विद्या में अविद्या का लक्ष्य दिया है, शरीर को नित्य माननाा, असूची (अशुद्ध) शरीर को शुद्ध मानना, अशुद्ध धन को शुद्ध मानना, इन्द्रियों के विषय भोगों में डूबे रहना और उसे सुख मानना, जो समाधि लगाने में आनन्द मिलता है उसे दुःख समझकर छोड़ देना, शरीर जड़ पदार्थ है, इसको आत्मा मानना, रस्सी को अन्धेरे में सर्प मानना और सर्प को रस्सी मानना ये अविद्या है।

नित्य को नित्य और अनित्य को अनित्य मानना ये विद्या है ज्यादा विस्तार से सत्यार्थ प्रकाश के नवें सम्मुलास को पढ़ लो। ध्यान करते-करते में समाधि होती है। ध्यान से समाधि में आते-आते सब वृत्तियों का निरोध हो जाने पर स्वरूप को भूल जाना सारी सृष्टि को देखने वाले के स्वरूप में तदा का अर्थ है तब, सर्वदृष्टा के स्वरूप में अवस्थित होकर जीव निमग्न होता है, ईश्वर के गुण आनन्द की अनुभूति करता है। सत्य विद्या के लिए बल भी दे दिया, यह योग का फल है।

दिनांक ०८.०४.२०१७ को स्वामी सत्यपति जी द्वारा उपदेशित अमृत वचन-आपने आर्याभिविनय के '**अग्नेय व्रतपते चरिष्यामी.....**' मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि मन-कर्म-वचन से सत्य का आचरण करें। यह ईश्वर प्राप्ति का मुख्य साधन है। ईश्वर में दुःख रहित आनन्द है। बैठे हुए समाधि रहती है चलते वक्त भी रहती है, यह सच्चे योगी की स्थिति होती है। पक्के योगी हमेशा समाधिस्थ रहते हैं। ईश्वर के प्रणिधान के विषय में विस्तार से बताते हुए कहा कि बताने मैं मैं कोई न्यूनता नहीं रखूंगा। क्योंकि ईश्वर ने बल परोपकार के लिए ही दिया है।

दिनांक ०९.०४.२०१७ को स्वामी सत्यपति जी के अमृत वचन- आर्याभिविनय के मन्त्र '**य आत्मा बलदा यस्य....**' मन्त्र तथा उसकी व्याख्या उपरान्त गम्भीर होकर कहा कि जिस योग विद्या को आप सीख कर रहे हो उसको मैंने प्रयोग में लाकर सफलता प्राप्त की है तथा साक्षात्कार किया है। मैंने कहां तक अनुभव किया है कि अर्थात् समाधि तक ईश्वर ने सफलता दी और आप भी सफलता पूर्वक प्रयास करोगे तो सफलता मिलेगी। समाधिवस्था में समाधि का बल क्या है? एक तो यह है कि समाधिवस्था में ईश्वर की प्राप्ति होती है और यह प्राप्ति ईश्वर ही करवाता है। ईश्वर के अतिरिक्त ईश्वर की प्राप्ति करवाने वाला कोई नहीं है। जब प्राप्ति होती है तो कौन-कौन से फल मिलते हैं, कब-कब मिलते हैं? दोष दूर होते हैं, ईश्वर प्राप्त होने से ईश्वर के गुण-दुःख रहित आनन्द की प्राप्ति होती है। इसी का नाम मोक्ष है।

ईश्वर का आनन्द मीठा होता है, कड़वा होता है कैसा होता है? प्रथम- जैसे हम खीर-हलवा खाते हैं। इनके स्वाद तीव्रतादि कारण से मिलता है। ईश्वर का आनन्द महागम्भिरता से आता है। अन्य सुख इन्द्रियों से आते हैं, इस कारण क्षणिक होता है। ईश्वर का आनन्द अनादि है, उत्पन्न नहीं होता। इस कारण इसमें कोई दुःख नहीं होता।

दूसरा- समाधि अवस्था में ईश्वर की सत्य विद्या जो कभी घटती-बढ़ती नहीं है कि प्राप्ति होती है। अविद्या के भयंकर क्लेश हैं। ईश्वर की सत्य विद्या से इन भयंकर क्लेशों का नाश हो जाता है।

तीसरा- ईश्वर में अनन्तबल है, इतनी बड़ी सृष्टि को बगैर हिले-डुले बनाना, पालन करना जीवों को कर्मफल देना तथा सृष्टि का विनाश करना उस बल की प्राप्ति होती है।

चौथा- ईश्वर का सत्याचरण- न्यायाचारण है। उसकी प्राप्ति होती है। इन गुणों की प्राप्ति होती है, इन गुणों को प्राप्त कर जो व्यक्ति आगे बढ़ता है वो व्यक्ति संसार का कितना उपकार कर सकते, जिसका उदाहरण महर्षि दयानन्द हैं, उसने संसार को कितना उपकार किया।

मैं आपसे कुछ नहीं मांगता मैं तो यही चाहता हूं जो मुझे प्राप्ति हुई है वह सब आप सभी को हो मुझे जीवन में बहुत बाधा आयी, किन्तु ईश्वर प्रणिधान से मुझे ये उपलब्धि हुई। '**क्रियात्मक योगाभ्यास पुस्तक में १७ बिन्दू दिये हैं, जिससे ईश्वर प्रणिधान सिद्ध होता है, जिन्हें पढ़कर सुनाया।**'

ईश्वर से सम्बन्ध बनाएंगे, खाते-पीते, चलते-फिरते स्मरण करोगे तो दोष- दुर्गुण नष्ट होंगे। ईश्वर से हमारा सम्बन्ध सदा से है सदा रहेगा, मुक्ति होगी, ईश्वर का ही नाम है अन्य नहीं जब समाधि का अच्छा अभ्यास हो जाता है, योगी हर समय समाधि में रहता है। भूलेगा तो हानि हो जाएगी। ईश्वर प्रणिधान समाधि में सबसे बड़ा साधन है इन बिन्दुओं का उपयोग करें और लाभ उठायें। छोटी से छोटी और ईश्वर साक्षात्कार तक की समाधि होती है। बुरे संस्कार, जब तक दग्धबीज नहीं होते तब तक मुक्ति सम्भव नहीं है, दग्ध बीज के विषय में विस्तार से बताया। ■

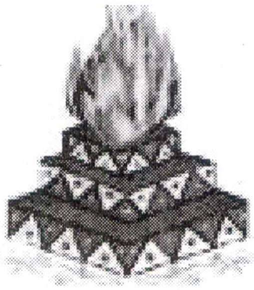

यज्ञ क्या और किसलिए?

''स्वर्ग कामो यजेत'' –शतपथ ब्राह्मण
''स्वर्ग अर्थात् सुख, शान्ति, स्वास्थ्य, दीर्घायु, विद्या, बल, पुत्र, धन, सम्पत्ति, यश, कीर्ति आदि की इच्छा करने वाला यज्ञ करे।''

- ज्ञानेश्वरार्य दर्शनाचार्य -
वानप्रस्थ साधक आश्रम
आर्यवन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर
जिला-साबरकांठा, गुजरात
चलभाष-९४२७०५९५५०

शस्त्र यज्ञ (हवन) का प्रयोग करें।

समस्त विश्व के समस्त मनुष्यों की समस्त समस्याओं का एक मूल कारण

पर्यावरण प्रदूषण

साम्प्रत काल में पर्यावरण प्रदूषण रूपी महाभयंकर भस्मासुर ने मात्र हवा ही नहीं अपितु पानी, पृथ्वी, ध्वनि, प्रकाश, आकाश आदि समस्त महत्वपूर्ण संसाधनों को अपनी चंगुल में फँसा लिया है। दूषित भौतिक पदार्थों से उत्पन्न अन्न, वनस्पति, शाक, कन्द, मूल, फल, फूल, औषध आदि खाद्य पदार्थ दूषित हो गए हैं। इन दूषित खाद्यान्नों के उपयोग से मनुष्य के शरीर में बनने वाली रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य-रज आदि धातुएँ भी अशुद्ध निकृष्ट तथा निर्बल बन चुकी है। इन तमाम धातुओं, रसों के आधार से काम करने वाले मन, बुद्धि, आत्मा भी दोषयुक्त विकृत बन गए हैं। परिणाम स्वरूप मनुष्यों के विचार, वाणी तथा व्यवहार दोषयुक्त बन गए हैं। इसका प्रभाव, अन्तिम प्रभाव यह है कि आज व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व में परस्पर प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, निष्ठा, सद्भाव, संगठन, त्याग, धैर्य, क्षमा, सहनशक्ति, सेवा, दया, निष्कामता की भावना समाप्तप्राय: हो गई है और इससे उलटा परस्पर-स्वार्थ, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, संशय, चिन्ता, विघटन, अन्याय, छल-कपट, असहिष्णुता, क्रूरता, अभिमान, उच्छृंखलता आदि बढ़ रहे हैं।

आओ इन समस्त बुराइयों के मूल कारण पर्यावरण प्रदूषण रूपी महाराक्षस को नष्ट करने वाले अमोघ

विश्व में प्रथम बार एवं एकमात्र
यज्ञ प्रशिक्षण केन्द्र तथा वर्ष के ३६५ दिन प्रात: से सायं काल तक अनवरत् अग्निहोत्र (हवन)

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड़ (गुजरात) में यज्ञ प्रशिक्षण केन्द्र संचालित है। जहां सुयोग्य विद्वानों द्वारा अल्प समय में नि:शुल्क यज्ञ प्रक्रिया का परिज्ञान करवाकर यज्ञ करने हेतु सामान्य जन को भी समर्थ बना दिया जाता है।

इसके साथ आश्रम में वर्ष के ३६५ दिन प्रात: काल से सायंकाल तक अनवरत् अग्निहोत्र सम्पादित हो रहा है। उपरोक्त यज्ञ में संसार का कोई भी व्यक्ति जो यज्ञ करने का इच्छुक है तथा यज्ञ में निष्ठा रखता है, अध्यात्म की प्राप्ति करना चाहता है, मानसिक शान्ति प्राप्त करना चाहता हैं, अपना आत्मबल (विलपॉवर) बढ़ाना चाहता है। वह स्वयं व अपने परिवारजनों तथा मित्रों के साथ अपनी समयसुविधानुसार पूर्व सूचना देकर अनुमति प्राप्त कर जा सकता है तथा यज्ञ में आहूति प्रदान कर सकता है। तीन तल पर निर्मित यज्ञ प्रशिक्षण केन्द्र मध्य तल पर यज्ञ कुण्डों, हवन सामग्री उपयुक्त पदार्थ तथा उनके लाभ व यज्ञ से सम्बन्धित विभिन्न शास्त्रोक्त प्रमाणों, अनुसंधानों आदि की विशाल प्रदर्शिनी का अवलोकन कर आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अपने जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ, सेवानिवृत्ति आदि विशेष मांगलिक प्रसंगों पर भी सपरिवार जाकर इन विशेष अवसरों को स्वर्णिम तथा सदैव स्मृति में रहने वाले अवसर में बदलकर मानसिक प्रसन्नता, शारीरिक स्वस्थता, आत्मिक आरोग्यता, अध्यात्मिक उन्नति, परिवारजनों को उत्तम प्रेरणा, सुसंतान निर्माण हेतु उत्तम संस्कारों का आदान, स्वधर्म संस्कृति की रक्षार्थ सहभागिता तता योगदान आदि विविध लाभ अर्जित कर सकते हैं वह भी पूर्णतया नि:शुल्क तथा भोजन-आवास का समुचित प्रबन्ध।

अगर आपके निवास पर स्थानाभाव तथा समय की प्रतिकूलता के चलते यज्ञ कर पाना संभव नहीं है तथा दूरी आदि कारणों से वानप्रस्थ साधक आश्रम भी जाना संभव नहीं है तो आप अनवरत् चलने वाले अग्निहोत्रम् में अपनी सामर्थ्य क्षमता अनुसार राशि भेजकर भी पुण्य अर्जन कर सकते हैं।

- सम्पादक

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के कारणों के विषय में

क्या आप जानते हैं?

■ सामान्य रूप से हवा में २१प्रतिशत आक्सीजन, ७८ प्रतिशत नाईट्रोजन, ०.०३ प्रतिशत कार्बन डाय आक्साईड तथा लगभग १ प्रतिशत अन्य जहरीली गैसों के मिलने के कारण इसकी संरचना में परिवर्तन होने से वायु प्रदूषण होता है।

■ ६० प्रतिशत वायु प्रदूषण मोटर वाहनों से और ३५ प्रतिशत बड़े तथा मध्यम उद्योगों से फैलता है।

■ एक मोटर वाहन ९७० कि.मी. की यात्रा में उतना आक्सीजन फूँक डालता है, जितना कि एक व्यक्ति को एक वर्ष के लिए आवश्यक होता है।

■ किसी भी स्वचलित वाहन में एक गैलन पेट्रोल/ डीजल के दहन से तीन पाऊंड नाइट्रोजन आक्साईड वायु निकलती है जो कि ५ से २० लाख घनफीट हवा को प्रदूषित कर देती है।

■ प्राकृतिक सन्तुलन के लिए पृथ्वी पर भूमि के ३३ प्रतिशत भाग पर वन होना अति आवश्यक है। हमारे देश में वर्तमान में मात्र १९ प्रतिशत भूमि पर वन हैं।

■ दिल्ली जैसे महानगरों में लोग जाने-अनजाने प्रतिदिन २० सिगरेटों के धुएं में जितना विष होता है उतना विष प्रदूषित वायु के कारण अपने फेफड़ों में खींच लेते हैं।

■ मनुष्य एक दिन में औसतन २१,६०० बार श्वसन क्रिया करता है और इस क्रिया में १६ कि.ग्रा.

आक्सीजन आवश्यक होता है।

■ एक व्यक्ति एक वर्ष में १२ टन कार्बन डाय ऑक्साईड उच्छ्वास से वातावरण में बाहर फेंकता है।

■ एक बड़ा पूर्ण विकसित वृक्ष एक मनुष्य के सम्पूर्ण आयुष्य के लिए जितनी आवश्यकता होती है उतनी मात्रा में ऑक्सीजन प्रदान करता है और वह हवा, पानी, ध्वनि के प्रदूषण तथा धूल को रोकता है।

■ वायु प्रदूषित होने के कारण खाद्य पदार्थ पोषक तत्वों से रहित, अशुद्ध और शक्तिहीन बन गए हैं।

■ प्रदूषण के कारण पौधों की कार्बन डाय ऑक्साइड शोषण करने की तथा पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ने की प्राकृतिक प्रक्रिया मन्द हो रही है।

■ पिछले कई वर्षों से फल, सब्जी, खाद्यान्न आदि का परीक्षण करने पर पता चला है कि इन सबमें जहरीले कीटनाशक रसायनों के अंश विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) द्वारा निर्धारित मात्रा से कई गुना अधिक पाया गया है।

यज्ञ प्रशिक्षण केन्द्र

■ पृथ्वी पर होने वाली कुछ रासायनिक क्रियाओं से पर्यावरण में फैलने वाले प्रदूषण के कारण आकाश स्थित ओजोन वायु की परत में एक बड़ा छिद्र हुआ है, यदि इस गति से छिद्र होते रहेंगे तो पैराबैंगनी किरणों को रोकना संभव नहीं रहेगा। और इसका परिणाम यह होगा कि लोग कैन्सर, आँखों में ग्रन्थि आदि भयंकर रोगों से ग्रस्त होंगे तथा वृक्ष वनस्पति भी प्रभावित होंगे।

■ बढ़ते जा रहे वायु प्रदूषण पर यदि नियंत्रण नहीं किया गया तो कुछ वर्षों बाद बाद ऐसी स्थिति बन जाएगी कि मनुष्यों को अपने साथ प्राण वायु का सिलिंडर बांधकर रखना होगा जिससे शुद्ध वायु ली जा सके। जैसे आज अशुद्ध जल के कारण खनिज जल (Mineral water) की बोतल का तथा नाक को ढकने के लिए कपड़े की पट्टी (mask) का प्रचलन हो गया है।

■ प्रदूषण से उत्पन्न महाविनाश के विरुद्ध यदि सामूहिक रूप से कोई उपाय नहीं किया जाएगा तो इस युग में मानव जीवित नहीं रह पाएगा।

उपाय...समाधान...आशा...

■ रूस के वैज्ञानिक श्री शिरोविच ने एक पुस्तक में लिखा है कि गाय के घी को अग्नि में डालने से उससे उत्पन्न धुआँ परमाणु विकिरण के प्रभाव को बड़ी मात्रा में दूर कर देता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह प्रक्रिया **'यज्ञ'** के नाम से जानी जाती है।

■ विभिन्न रोगों के जन्तुओं को समाप्त करने के लिए यज्ञ से सरल तथा सुरभ पद्धति अन्य कोई नहीं है।

एम.- मॉनियर, चिकित्सा शास्त्री (एन्शिएण्ट हिट्री ऑफ मेडिसिन)

■ शक्कर के दहन से उत्पन्न धुएँ में पर्यावरण परिशोधन की विचित्र शक्ति है। इससे क्षय रोग, चेचक, हैजा आदि बीमारियों के विषाणु नष्ट हो जाते हैं। - वैज्ञानिक ट्रिलवर्ट (फ्रांस)

■ केसर तथा चावल को मिलाकर हवन करने से प्लेग के कीटाणु भी समाप्त हो जाते हैं।- डॉ. कर्नल किंग

■ मुनक्का, किशमिश, मखाणे आदि से हवन करने से सन्निपात ज्वर, टाईफाइड के कीटाणु मात्र घण्टे में नष्ट हो जाते हैं। - डॉ. डीलिट

■ '३६' x '२२' x '१०' = लगभग ८००० घन फीट के एक हॉल में एक समय हवन करने से कृत्रिम रूप से निर्मित प्रदूषण का ७७.५ प्रतिशत भाग नष्ट हो गया, इतना ही नहीं इस प्रयोग से ९६ प्रतिशत हानिकारक कीटाणु नष्ट हो गए।

फर्ग्युसन कॉलेज पुणे के जीवाणु शास्त्रियों का प्रयोग

■ अमेरिका, चिली, पॉलैण्ड जर्मनी आदि देशों में अग्निहोत्र (हवन) की लोकप्रियता बढ़ रही है।

■ विश्व के अनेक देशों में रोगों को दूर करने के लिए, प्रदूषण को दूर करने के लिए तथा कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए यज्ञ चिकित्सा (Homa Therapy) का प्रचलन बढ़ रहा है।

यज्ञ के विषय में वैदिक, शास्त्रीय प्रमाण

■ समिधाओं से यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित करके उसे घृत से प्रबुद्ध करो और उस प्रदीप्त अग्नि में उत्तम-उत्तम सामग्री की आहुति दो।

-यजुर्वेद- ३-१

■ जब अग्नि में सुगंधित पदार्थों का हवन होता है तभी वह यज्ञ वायु आदि पदार्थों को शुद्ध करता है तथा शरीर और औषधि आदि पदार्थों की रक्षा करके अनेक प्रकार के रसों को उत्पन्न करता है, उन शुद्ध पदार्थों के भोग से मनुष्यों के ज्ञान, विद्या और बल की वृद्धि होती है।

- यजुर्वेद- १-१

■ जो यज्ञ से शुद्ध किए हुए अन्न, जल, वायु आदि पदार्थ हैं वे सब की शुद्धि करके बल, पराक्रम तथा दीर्घायु के लिए समर्थ होते हैं, इसलिए सब मनुष्यों को यज्ञ कर्म का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए।

- यजुर्वेद- १-२०

■ जैसी यज्ञ करने से वायु और जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होती है, वैसी अन्य प्रकार से नहीं हो सकती। - ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका

■ यज्ञकुण्ड में डाली हुई सामग्री दुःख देने वाले रोगों को ऐसे बहाकर ले जाती है जैसे नदी झाग को बहाकर ले जाती है। -अथर्ववेद- १-८-१

■ गाय के घी के साथ हवन की सामग्री यज्ञ कुण्ड में जलकर विशेष शक्तिशाली बनकर दूषित वायुमंडल के ९९ प्रकार के दुर्गुणों को सरलता से नष्ट कर देती है। - ऋग्वेद -१-८४-१३

■ शुभ दिनों का सम्पादन यज्ञ के द्वारा किया जाता है।

- यजुर्वेद- १९-६

८. अन्तरिक्ष में जो विविध प्रकार के वायु तत्वों का स्तर है उनका बिगाड़ मत करो, नष्ट मत करो ये तत्व हमारे जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। **यजुर्वेद- ५-४३**

E-mall : vaanaprstharojad@gmail.com
Website : www.vaanprastharojad.org

आर्य समाज एक सुसंस्कृत जीवन

विश्वकर्मा कुल गौरव
- डॉ लक्ष्मीनिधि -
निधि विहार, १७२, न्यू बराद्वारी,
पो. साकची, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष: ९९३४५२१९५४

स्वामी दयानन्द सरस्वती सकारात्मक सोच के अध्यात्मिक राष्ट्रीय चिंतक थे। उन्होंने अनुभव किया- धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड का जो बड़ा भ्रमजाल है, उससे भारतीय समाज बाहर निकले। इसके लिए उन्होंने केवल प्रवचन देकर नहीं रह गए, वरन् उसके लिए उन्होंने एक नया रास्ता बतलाया, एक नई जीवन शैली का संदेश दिया। उनका वही नया रास्ता नयी जीवन शैली-आर्य समाज कहलाया। भारतीय सभ्यता, संस्कृति और मर्यादा के अनुरूप भारतीय समाज बने, उसके लिए उन्हें मूल रूप में आर्य शैली का संदेश दिया।

भारत का प्राचीन नाम आर्यावर्त था और यहां के बासिन्दों जो वेदानुकूल जीवन चरित्र के धनी होने से उत्तम-गुण-कर्म-स्वभाव से युक्त होते थे वे **''आर्य''** कहलाते थे। धर्मग्रन्थों में, वार्तालाप में, सम्बोधन के शब्द के रूप में **''आर्य''** शब्द का प्रयोग होता था।

यह बात साफ हो जाना चाहिए कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने **''आर्य समाज''** के नाम से कोई नये मत-पन्थ, सम्प्रदाय की स्थापना नहीं की। उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से वेदानुकूल जीवन निर्माण का संदेश दिया।वैदिक जीवन शैली-आर्य समाज की जीवन शैली है जो भारतीय समाज की मूल प्रकृति तथा मूल प्रवृत्ति है। हिन्दू धर्म में नीति सिद्धान्त की बड़ी-बड़ी बातें कही गई है। मगर, व्यवहार में हिन्दू धर्म के इतने ओछे रूप देखने को मिलते हैं कि महात्मा गाँधी तक को भी कहना पड़ा कि हिन्दू विचारधारा में बहुत सी ऐसी बातें प्रचलित है जो हिन्दू वर्ग के लिए कलंक है। उन्होंने हिन्दू धर्म पर एक पुतक भी लिखी है, जिसका नाम है- हमारा कलंक। कबीरदास ने इन पोंगा पंथी साधु-महात्माओं को खूब लताड़ा है-

'मन न रंगाये, रंगाये योगी कपड़ा। दाड़ी बढ़ाये योगी, हो गये बकरा।'

वैदिक धर्म के शुद्ध स्वरूप को प्रचारित करने के लिए स्वामी जी ने आर्य समाज का गठन किया। आज आर्य समाज में वैसी जीवंतता कहीं नहीं देखी जाती। आर्य समाज वाले स्कूल-कॉलेज चलाते हैं- मगर उनमें आर्य समाजी चरित्र का निर्माण नहीं होता। उनके छात्र अन्य शिक्षण संस्थानों के समान ही होते हैं।

'आर्य समाज' के संचालक लोग मठाधीश बन जाते हैं। उनका यह प्रसार कार्य ठप रहता है। पुराने लोगों ने जो आर्य समाज का गठन किया तथा भवन बनाये वह यहीं तक अटका रहा गया। इसमें नयी पीढ़ी के लोग आ नहीं रहे और पुराने लोग भगवान के प्यारे होते जा रहे हैं और जिन लोगों के हाथ में आर्य समाज का संगठन है- वे उसको आर्य समाज के मिशन व जीवन के मुताबिक नहीं चला पा रहे हैं। आर्य समाज या स्वामी दयानन्द के नाम पर स्कूल, कालेज खोलकर कमाई करना स्वामी जी का मिशन नहीं था। आर्य समाजियों को उनके मिशन और वीजन को गंभीरता से समझना होगा और उसे पूरा करने के लिए निष्ठापूर्वक लगना होगा। संगठन के नेता संगठन को अपनी कमाई का माध्यम बनाकर बैठ गये हैं।

आर्य समाज में एक पत्रिका है **''वैदिक संसार''** उसकी प्रचार संख्या यह खबर देती है कि आर्य समाजी भी अपने पत्रिका नहीं पढ़ते। कितने आर्य समाजी हैं जो इसके प्रचार-प्रसार में लगे हैं। कहां होता है सम्मेलन, कहां होता है सेमीनार, कहां होता है सामाजिक तथा राजनीतिक मुद्दों पर कोई संघर्ष।

'आर्य समाज' के वैदिक स्वरूप के लिए नया भारत गढ़ना होगा। कौन गढ़ेगा- नया भारत, कौन चलायेगा आर्य समाज का आन्दोलन? आर्य समाज अनेकों प्रकार के मकड़जाल में फंसा हुआ है। आज आवश्यकता है कि नये मिशन नये विजन के साथ आर्य समाज को संचालित किया जाए और जो वेदज्ञान का दीपक स्वामीजी ने जलाया इसे बुझने नहीं दिया जाए।■

राष्ट्र प्रेम

हमेशा ही चमन चाहिए
ना ही गमन चाहिए
बस हमें अपने वतन का
सदैव अमन चाहिए।

प्रेम से जो उमड़ते
हरदम सदा ही रहे
काले-काले मेघों से
ऐसे ही हमें सघन मन चाहिए

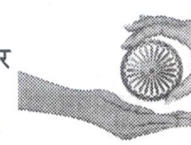

जब भी जो निगाहे
खिले, वतन देखकर
हमको भी ऐसा ही
निगाहें करम चाहिए

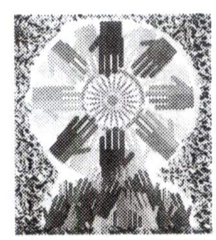

नमाजे अगर कभी
मन्दिरों में भी हो
भजन और कीर्तन सारे
मस्जिदों में भी हो
हमको भी ऐसी ही
इबादत-नमन चाहिए

बेअदबी जब भी
जहां हो वतन की
हमको भी ऐसे न तन,
और न मन चाहिए
हमको ऐसे न तन
और न मन चाहिए।

डॉ. सुभाष नारायण भालेराव 'गोविन्द'
न्यू नेहरू कालोनी, थाटीपुर, ग्वालियर
चलभाष- ८९८९५९८८६०

संस्कृत वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण परक अनुसन्धान

- आचार्य सोमेन्द्र श्री
शोधार्थी - दिल्ली विश्वविद्यालय
ग्राम- नित्यानन्दपुर, जिला- मेरठ (उ.प्र.)
चलभाष-०९४१०८१६७२४

यात्येकतोऽस्त शिखरं पतिरोषधीनां
माविष्कृतोऽरुणपुरः सर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु ।।
४/२ ''अभिज्ञान शाकुन्तलम् ''

प्रोफेसर माइकल पोर्टर का कहना है कि **''सम्भावना पूर्ण कारण पैदा किए जाते हैं विरासत में नहीं मिलते।''**[१] अर्थात् किसी भी समस्या का समाधान खोजने की आवश्यकता पड़ती है। वह अपने आप नहीं सुलझती। वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण है। जिससे भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व त्रस्त है। पर्यावरण एक व्यापक शब्द है। यह उन सम्पूर्ण शक्तियों, परिस्थितियों एवं वस्तुओं का योग है। जो मानव जगत् को परावृत करती है। हमारे चारों ओर जो विराट प्राकृतिक परिवेश व्याप्त है। उसे ही हम पर्यावरण कहते हैं। परस्परावंलम्बी संबंध का नाम पर्यावरण है। हमारे चारों और जो भी वस्तुओं, परिस्थितियां एवं शक्तियां विद्यमान हैं वे सब हमारे क्रियाकलापों को प्रभावित करती है और उसके लिए एक दायरा सुनिश्चित करती है। इसी दायरे को हम पर्यावरण कहते हैं। यह दायरा व्यक्ति, गांव, नगर, प्रदेश, महाद्वीप, विश्व अथवा सम्पूर्ण सौरमंडल या ब्रह्माण्ड हो सकता है।[२] सर्वप्रथम डॉ. रघुवीर जी ने तकनीकी शब्द कोष निर्माण के समय 'इन्वायरमेंट (फ्रेंच भौतिक शब्द) के लिए पर्यावरण शब्द का प्रयोग किया था। वे ही इसके प्रथम **'शब्द प्रयोक्ता'** हैं।[३] वास्तव में पर्यावरण या इन्वायरमेंट शब्द अत्यधिक प्राचीन शब्द नहीं है। जर्मन जीव वैज्ञानिक अर्नेस्ट हीकल द्वारा **''इकोलॉजी''** शब्द का प्रयोग सन १८६९ में किया गया तो ग्रीक भाषा के आईकोस (ग्रह या वास स्थान) शब्द से उद्धत है। यही शब्द परिस्थितिकी के अंग्रेजी पर्याय के रूप में इन्वायरमेंट शब्द से प्रचलित हुआ है।[४] इन्वायरमेंट शब्द का प्रयोग ऐसी क्रिया जो घेरने के भाव को सूचित करने के संदर्भ में किया जाता है। विभिन्न कोषों में इसके विभिन्न अर्थ दिए गए हैं। जैसे वातावरण, उपाधि, परिसर, परिस्थिति, प्रभाव, प्रतिवेश, परिवर्तन तथा वायुमण्डल, वातावरण और परिवेश।[५] संस्कृत वाङ्मय में जहां मानव जाति के लिए आयुर्वेद, धर्मनीति, राजनीति, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष आदि का विशद् वर्णन है। वहीं पर पर्यावरण को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसीलिए वेदकालीन मनीषियों ने द्युलोक से लेकर व्यक्ति तक समस्त परिवेश के लिए शांति की प्रार्थना की है। वैदिक काल से आज तक चिंतकों और मनीषियों द्वारा समय-समय पर पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता को अभिव्यक्त कर मानव जाति को सचेष्ट करने के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया गया है। पर्यावरण का स्वच्छ एवं संतुलित होना मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। पाश्चात्य सभ्यता का यह तथ्य बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में समझ में आया है, जबकि भारतीय मनीषियों ने उसे वैदिक काल में ही अनुभूत कर लिया था। हमारे ऋषि मुनि जानते थे कि पृथ्वी, जल, अग्नि, अन्तरिक्ष तथा वायु इन पंच तत्वों से ही मानव शरीर निर्मित है।

''पंचस्वन्तु पुरुष आविवेशतान्मन्तः पुरुषे आर्पेतानि''- २३-२५[६]

उन्हें इस तथ्य का भाव था कि यदि इन पंचतत्वों में से एक भी दूषित हो गया तो उसका दुष्प्रभाव मानव जीवन पर पड़ना अवश्यम्भावी है।

इसीलिए उन्होंने इसके संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रत्येक धार्मिक कृत्य करते समय लोगों से प्रकृति के समस्त अंगों को साम्यावस्था में बनाए रखने की शपथ दिलाने का प्रावधान किया था जो कि आज भी प्रचलित है।

द्यो: शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी
शान्ति रापः शान्तिरोषद्ययः शान्ति।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्म शान्ति।
सर्वशान्ति देव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।३६.१७।।[७]

यजुर्वेद का ऋषि सर्वत्र शान्ति की प्रार्थना करते हुए मानव जीवन तथा प्राकृतिक जीवन में अनुस्यूत एकता का दर्शन बहुत पहले कर चुका था। ऋग्वेद का नदी सूक्त एवं पृथिवी सूक्त तथा अथर्ववेद का अरण्यानी सूक्त क्रमशः नदियों, पृथ्वी एवं वनस्पतिगयों के संरक्षण एवं संवर्धन की कामना का संदेश देते हैं। भारतीय दृष्टि चिरकाल से सम्पूर्ण प्राणियों एवं वनस्पतियों के कल्याण की आकांक्षा रखती आई है। **'यद्पिण्डे तद्ब्रह्माण्डे'** सूक्ति पुरुष तथा प्रकृति के अन्योन्याश्रय सम्बन्ध की विज्ञान सम्मत अवधारणा को बताती है। स्वच्छ जल एवं स्वच्छ परिवेश किसी भी सामाजिक वातावरण के पल्लवन एवं विकसन की अपरिहार्य आवश्यकता है। जीव-जन्तुओं हेतु अनुकूल परिस्थितियों में ही जीव-जन्तुओं का समाज पुष्पित-पल्लवित होता है। अतः सामाजिक विकास में पर्यावरण तथा जल संरक्षण की अनिवार्यता को विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण पर विशेष चर्चा की गई है। अथर्ववेद में कहा गया है कि अग्नि (यज्ञाग्नि) से धूम उत्पन्न होता है। धूम से बादल बनते हैं और बादल से वर्षा होती है।[८] वेदों में यज्ञ का अर्थ **'प्राकृतिक चक्र को संतुलित करने की प्रक्रिया'** कहा गया है।[९] वैज्ञानिकों ने

भी यह स्वीकार किया है कि यज्ञ द्वारा वातावारण में आक्सीजन तथा कार्बन डाईऑक्साईड का सही संतुलन स्थापित किया जा सकता है। अतः यह तथ्य भी विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरा है। वेदों तथा वेदांगों में अनेक स्थलों पर यज्ञ द्वारा वातावरण में आक्सीजन तथा कार्बन डाईऑक्साइड की सही संतुलन स्थापित किया जा सकता है। अतः यह तथ्य भी विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरा है। वेदों तथा वेदांगों में अनेक स्थलों पर यज्ञ द्वारा वर्षा के उदाहरण मिलते हैं। यास्कीय निघण्टु में वन का अर्थ जल तथा सूर्य किरण एवं पति का अर्थ स्वामी माना गया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक ऋषि इस विज्ञान सम्मत धारणा से अवगत थे कि वन ही अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि से उनकी रक्षा कर सकते हैं। इसीलिए ऋग्वेद में वनस्पतियों को लगाकर वन्य क्षेत्र को बढ़ाने की बात कही गई है।[१०] सम्भवतः इसी कारण से उन्होंने वन्य क्षेत्र को ''**अरण्य**'' अर्थात् रण से मुक्त या शान्ति क्षेत्र घोषित किया होगा। ताकि वनस्पतियों को युद्ध की विभीषिका से नष्ट होने से बचाया जा सके।[११]

सृष्टि की उत्पत्ति और जगत् का विकास ही पर्यावरण प्रादुर्भाव है। सृष्टि का जो प्रयोजन है वही पर्यावरण का भी है। जीवन और पर्यावरण का अन्योन्य संबंध है। इसीलिए आदिकाल से मानव पर्यावरण के प्रति जागरुक रहा है, ताकि मानव दीर्घायुष्य, सुस्वास्थ्य, जीवन शक्ति, पशु, कीर्ति, धन एवं विज्ञान को उपलब्ध हो सके। यही कामना अथर्ववेद का ऋषि ''**आयुः प्राणं प्राणां पशु**''[१२] व ''**शत जीव शरदो**''[१३] करता है। ऋग्वेद में ऋषि **शतां जीवतु शरदः**[१४]..... तथा यजुर्वेद में ऋषि ''**शतिमिन्नुशरदो** अति.... तथा वह ऋषि का आशीर्वाद पाता है कि मनुष्य! बढ़ता हुआ तू सौ शरद ऋतु और सौ बसंत तक जीवित रहे। इंद्र (विद्युत) अग्नि, सविता (सूर्य), बृहस्पति (संकल्प शक्ति) और हवन (यज्ञ) तुझे सौ वर्ष तक आयुष्य प्रदान करें- वैदिक साहित्य में प्राकृतिक पदार्थों से कल्याण की कामना को स्वस्ति कहा गया है। इस पर आचार्य सायण एवं नैरुक्त चिंतन है कि अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति 'योग' है एवं प्राप्ति का संरक्षण 'क्षेम' है। पर्यावरण के संतुलन में वृक्षों के महान योगदान एवं भूमिका को स्वीकार करते हुए ऋषि मुनियों ने बहुत चिंतन किया है। मत्स्य पुराण में उनके महत्व एवं महात्मय को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि दस कुंओं के बराबर एक बावड़ी होती है। दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है।[१५]

यदि हमें पर्यावरण को सुरक्षित रखना है तो हमें प्राकृति प्रदत्त संसाधनों का उपयोग संस्कृत वाङ्मय के दिए निर्देशानुसार ही करना होगा। पर्यावरण के विषय में महर्षि यास्क ने जो कहा है कि वह सर्वमान्य है। यास्क ने अपने निरुक्त में वस्तु या भाव के छह विकार गिनाए हैं। उनमें पर्यावरण के सम्बन्ध में अस्ति या सत्ता शब्द चिन्तनीय है। इसकी व्याख्या में वे कहते हैं कि ''**कोई वस्तु तभी तक अपनी सत्ता बनाए रख सकती है जब तक वह स्वयं को धारण करने में समर्थ है। जब उसमें बाहर हस्तद्वीप अधिक होता है, अथवा उसकी नैसर्गिक संरचना विकृत होती है तो उसकी आत्मधारणा शक्ति नष्ट हो जाती है। यही उसका प्रदुषण है।**'' वस्तु के निर्माण का जो अनुपात है वह स्थित रहना चाहिए। अनुपात भंग हुआ और वस्तु में स्वास्थ्य का विनष्ट होना ही प्रदूषण है। संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण सुरक्षा हेतु स्पष्ट संदेश दिया गया है। अथर्ववेद में भूमि की हरेपन से रक्षा करने का जो संदेश है उसके द्वारा दो बातें

''दुःख-सुख इसी जन्म में भोगना है''

असंख्य योनियों में भटक करके सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन पाया है।
सत्संग भगवान-भजन, संयम-संकल्प से सदाचारी बन पाया है।।

पिछले संचित और वर्तमान कर्मों से ही प्रारब्ध प्रत्येक जीव का है।
दुःख-सुख अपने कर्मफलानुसार इसी जन्म में सभी को भोगना है।।

कुसंगत- दुर्गुण, दुर्व्यसन, बुरी लत लग जाना नरक जैसा दुखदायी है।
सद्गुण, सत्संग, उपासना, स्वाध्याय स्वर्ग जैसा सुखदायी है।
विद्या, कला, शिक्षण-प्रशिक्षण ग्रहण कर, आत्मनिर्भर बनना है।
नेक, उपयोगी कार्यों से वैदिक जीवन यापन करना सर्वश्रेष्ठ है।

अपने श्रम-परिश्रम में कर्मशील बनकर सदैव व्यस्त हो जाना है।
स्वयं श्रेष्ठ बनकर, निर्विकारी, सदाचारी, निरोगी, स्वस्थ बनना है।।

धूमपान, तम्बाकू, शराब, जुआ, गुटका आदि नशा बुराई से बचना है।
न स्वयं लेना और न दूसरों को इन हानिकारक पदार्थों को लेने देना है।

फिजूलखर्ची और बाजार खान-पान से सदैव बचते रहना है।
अन्यथा इन बुरी आदतों से स्वयं की सपरिवार बरबादी है।।

सुख - शान्ति से जीओ और दूसरों को जीने दो इसी में सबकी भलाई है।
कर्मानुसार सभी को इस जीवन में दुःख-सुख भोगना है।।

प्राकृतिक आपदाओं को झेलना भी प्रत्येक जीव को ही है।
श्रेष्ठ मानव अपने विवेक, ज्ञान, बुद्धि, कुशल व्यवहार से सुखी है ।।

भगवान भजन ही संकटों में एक सहारा बन जाता है।
उसी परमपिता परमात्मा के सहारे से दुःख भी कम हो जाता है।।

प्रोफेसर रामसिंह 'रमदा'
५-४५१/१ गुरु तेगबहादुर मार्ग
तिकोनिया-नैनीताल रोड, हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)
चलभाष- ९९९७३३७९३१

कही गई हैं। प्रथम तो यह कि पर्यावरण तथा प्राणियों की रक्षा पृथ्वी में हरियाली के माध्यम से होती है। द्वितीय यह कि भूमि भी पेड़-पौधों की हरितिमा से सुरक्षित रहती है। इसलिए भूमि को प्रदूषण से बचाए रखने के लिए न केवल हरियाली के प्रभाव को समझना होगा, अपितु सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाकर धरती पर हरियाली का हर संभव प्रयास करना होगा। यही कारण है कि हमारे चिंतक मनीषियों ने वृक्षों एवं वनों की रक्षा करने वालों का विशेष सम्मान करने तथा उन्हें सतत् अन्न-धन देते रहने का संदेश दिया है। संस्कृत वाङ्गमय में पर्यावरण की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए संस्कृत लेखकों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति प्रेम को प्रदर्शित किया है। उन्होंने अपने भावों को पात्रों के माध्यम से भाई-बहन जैसा प्रेम व माता जैसा वात्सल्य दिखाया है। महाकवि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति का वर्णन करते हुए उसकी नायिका शकुन्तला को प्रकृति की पुत्री के समान दिखाया है। जिसकी गोद में पलकर शकुन्तला बड़ी हुई है। पुत्री की विदाई के समय प्रकृति का रूप एक माता के समान दिखाया है।

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तन-
र्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव
लताः ।।

अभिज्ञान शाकुन्तलम्- १४/१२[१६]

महाकवि कालिदास द्वारा प्राणियों के प्रति चेतन मानव की आत्मीयता का इससे सुन्दर उदाहरण और क्या हो सकता है।

धूमज्योतिः सलिलमरुताः सन्निपातः क्व मेघः
सन्देशार्थः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् ग्रह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृति कृपणाश्चेतनाचेतनेषु।। पूर्वमेघ ५ [१७]

इतना ही नहीं पुत्री को पति के घर जाना है, इसलिए उसे आभूषण की आवश्यकता पड़ेगी। यही सोचते हुए प्रकृति माता ने अपनी पुत्री शकुन्तला को वह सब उपलब्ध कराया जो दुर्लभ था।

संस्कृत वाङ्गमय में पर्यावरण संरक्षण की महत्ता पर विशद् वर्णन है। उसमें बताए गए सूत्रों के आधार पर ही हम वर्तमान की सबसे भयावह समस्या से निपट सकते हैं। कुछ सराहनीय प्रयास इस ओर किए जा रहे हैं जैसे **उत्तराखण्ड में १३० इन्फैन्ट्री बटालियन द्वारा ५ जून यानि विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर ''हरेला वीम'' मनाते हुए महज १९ मिनट में १ लाख से अधिक पौधे रोपे गए हैं** जिसके बाद में बटालियन की इस उपलब्धि को लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज किया गया है। [१८] **इसी प्रकार राजस्थान के पिपलांत्री गांव में बेटी पैदा होने पर गांव में हर साल १११ पौधे लगाते हैं।** [१९]

आज विश्व पटल पर पर्यावरण एक बड़ी समस्या बनकर उभरा है। विश्व के सभी देश कार्बन उत्सर्जन को लेकर चिन्तित हैं। विश्व के सभी देश इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वर्तमान में ६५ देश कार्बन उत्सर्जन के प्रति अपनी रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र संघ को सौंप चुके हैं। भारत ने भी ६६ वें देश के रूप में अपनी पर्यावरण व कार्बन उत्सर्जन रिपोर्ट यू.एन.ओ. को सौंप दी है। आज यह बड़ी खुशी की बात है कि सम्पूर्ण देश पर्यावरण को लेकर सजग है तथा इसके सुधार के लिए सतत् प्रयासरत है। संस्कृत वाङ्गमय के सभी ग्रन्थों में पर्यावरण का विस्तृत वर्णन है, बस आवश्यकता है उसको वर्तमान परिप्रेक्ष्य से जोड़ने की। भारतीय ग्रन्थों में पर्यावरण के साथ-साथ देश की भौगोलिक स्थिति का भी वर्णन किया गया है। अतः हमें इस पर गहनता से विचार करना होगा तथा संस्कृत वाङ्गमय की सहायता से पर्यावरम में सुधार के लिए सतत प्रयास करने होंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

१. प्रतियोगिया दर्पण, संतोष श्रीवास्तव, अगस्त २०१४-पृ-१००

२. इंडिया वाटर पोर्टल हिन्दी, वैदिक वाङ्गमय और पर्यावरण संस्कृति

३. कंप्रिहैंसिव इंग्लिश- हिन्दी डि. डक्शनरी, डॉ. रघुवीर पृ- ५८९

४. पर्यावरण तथा प्रदूषण, अरुण रघुवंशी- पृ- ४१

५. इण्डिया वाटर पोर्टल हिन्दी, वैदिक वाङ्गमय और पर्यावरण संस्कृति।

६. यजुर्वेद २३.५२ ७. यजुर्वेद ३६. १७

८. शतपथ ब्राह्मण ०५.०३.०५.१७

९. ऋग्वेद १०.९०.०६, ०१.१६४.५१, यजुर्वेद ३१.०४ श्रीमद्भगवद्गीता ०३.११.१४

१०. ऋग्वेद १०.१०१.११

११. वनस्पतिम् - शमितारम्, यजुर्वेद २८.१०

१२. अथर्ववेद- १९.७१.१

१३. अथर्ववेद- ३.११.४

१४. ऋग्वेद १०.१८.४

१५. **दश कूप समवापी, दशवापी समोहदः।**
दशहद समः पुत्रो, दशपुत्रो समो द्रुमः।।

१६. अभिज्ञान शाकुन्तलम् ४-१२

१७. मेघदूतम- डॉ. बिजेन्द्र कुमार शर्मा, साहित्य भण्डार मेरठ पृ. २५

१८. सफलता- अमर उजाला, सितम्बर २०१५पृ.३४

१९. कुरुक्षेत्र- निर्माण भवन, ग्रामीण विकास मन्त्रालय मार्च २०१५ पृ. ४७ ■

संसार में सुख-शान्ति का एक मात्र उत्तम मार्ग चरित्र निर्माण

- पं. उम्मेदसिंह विशारद -
गढ़निवास, मोहक्कमपुर, देहरादून
(उत्तराखण्ड)
चलभाष- ०९४११५१२०१९

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मानव जगत् में सुख शान्ति के लिए संस्कार विधि की रचना करके जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कारों को करने का विधान किया है। वह कहते हैं जिसे करके शरीर आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं, इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।

जीवात्मा अमर तथा नित्य है। जन्म जन्मातरों के उसके साथ सूक्ष्म शरीर मृत्यु, पर्यन्त रहता है। और यही सूक्ष्म शरीर जन्म-जन्मातरों के संस्कारों या वासनाओं का वाहक होता है। ये संस्कार शुभ व अशुभ दोनों प्रकार के होते हैं। जब जीवात्मा दूसरे शरीर में प्रवेश करता है उसको नई परिस्थिति के भी बहुत से शुभाशुभ प्रभाव मिलते हैं। उनके प्रभावों को अभिभूत करने तथा शुभ प्रभावों को उन्नत करने के लिए संस्कारों या स्वच्छ वातावरण की परम आवश्यकता है।

पन्चस्वन्तः पुरुष या वियेश (यजुः)

इस लेख द्वारा आज हम मनुष्य के पांच मौलिक चरित्रों पर विचार करके जीवन में उतारने की प्रेरणा करते हैं। मानव को उत्तम स्वभाव बनाने के लिए सर्वप्रथम पांच बातों का ध्यान रखना चाहिए और सम्पूर्ण मानव जगत् पांच के भीतर स्थित है। प्रत्येक जहां अपने आप में प्रविष्ट है, विश्व में प्रविष्ट है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में एक इकाई है किसी परिवार का अंग है, किसी समाज का अंग है। किसी समाज का सदस्य है, राष्ट्र का सदस्य है। विश्व का सदस्य है। परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व का नागरिक होने से उसकी रिश्ते नाते में कई भूमिकाएं हैं। उनको तभी निभा सकता है जब अपने संस्कारों में पांच प्रकार के चरित्रों का निष्पादन करे। यदि प्रत्येक मनुष्य इन चरित्रों को अपनाने में अपनी भूमिका अदा करे तो मानव समाज में चारों और सुख-शान्ति बनी रहेगी। आइए इन पांच चरित्रों पर विचार करते हैं।

उत्तम चरित्र की पांच शाखाएं हैं

१. वैयक्तिक चरित्र, २. परिवारिक चरित्र, ३. सामाजिक चरित्र, ४. राष्ट्रीय चरित्र, ५. विश्व चरित्र।

इन चरित्रों के निर्माण व व्यवहार से मानव सच्चे अर्थों में समाज का निर्माण करता है और धर्मात्मा वही है जो उक्त चरित्रों का पालन करता है। यदि किसी में इनका अभाव है तो वह अधर्मी है।

शुद्धि-संस्कार

दिनांक २३-१२-२०१६ को अनियामत शेख ने इस्लाम मत त्यागकर वैदिक धर्म में प्रवेश किया। शुद्धि के बाद इनका नया नाम नयन मलिक रखा गया। शुद्धि संस्कार पुरोहित पं. देवनारायण तिवारी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

दिनांक २७.१.२०१७ को उम्मे सलमा उम्र ३८वर्ष ने इस्लाम मत त्यागकर वैदिक धर्म में प्रवेश किया। इनका नाम उर्बी दास रखा गया। शुद्धि संस्कार आर्य समाज की यज्ञशाला में पुरोहित पं.देवनारायण तिवारी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। (साभार- आर्य संसार)

ईश्वर के मुख तो है नहीं, फिर उसने वेद का ज्ञान कैसे दिया?

परमात्मा सर्व व्यापक है अर्थात् सबके अन्दर व्यापक है। जैसे हम अपने मन में विचार उठाते हैं। जब चिन्तन होता है तब अपने मन ही मन में बिना मुख बोल लेते हैं, निर्णय करते हैं, विचारते हैं। तब किसी बाहरी साधन की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि ये सब क्रियाएं अपने अन्दर हो रही हैं। इसी प्रकार जब ईश्वर आत्मा में ज्ञान देता है तब उसे किसी मुखादि अवयव की आवश्यकता नहीं होती। परमात्मा के आत्मा में व्यापक होने के कारण परमात्मा के ज्ञान को आत्मा परमात्मा से ग्रहण कर लेता है। तब आत्मा बुद्धि के द्वारा उस ज्ञान को मन तक पहुंचा देता है, मन वाणी को देता है, वाणी से कानों कों मिलता है। परमात्मा का ज्ञान आत्मा में प्रेरित होता है। उसका नाम वेद है।

ऋषियों ने जब उस प्राप्त ज्ञान का उच्चारण किया, तब अन्यों द्वारा कानों से सुना गया तब वह श्रुति कहलाया।

अतः वेदज्ञान के देने के लिए ईश्वर को मुखादि अवयवों की आवश्यकता नहीं होती। यह ज्ञान तो सीधा ऋषियों की आत्मा में आता है, बाद में ऋषि बोलते हैं तो दूसरे कान से सुन सकते हैं।

परमात्मा आत्मा को प्रेरणा देता है। भाषा की अमृतधारा बह निकलती है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखा है अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा इन चारों मनुष्यों को कैसे वादित्र (वाद्य यन्त्र) को कोई बजावे या कठपुतली की भाँति चेष्टा करावे इस प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्त मात्र किया था।

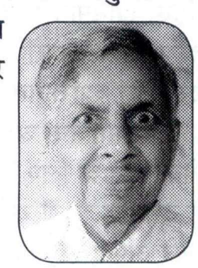

- आदित्य प्रकाश गुप्त -
प्रधान - आर्य समाज, खेड़ा अफगान
सहारनपुर (उ.प्र.)
चलभाष- ८४४५०४४९२२

१. वैयक्तिक चरित्र- इस चरित्र का सम्बन्ध मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन से है और यह व्यक्तिगत चरित्र ही परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व में सहायक होते हैं। इसके उन्नति व निर्माण के लिए सात गुण अति आवश्यक हैं।

● **सुश्रुति-** अर्थात् सदैव अपने दैनिक आचरण में सुविचारों को ही ग्रहण करना।

● **सुवाणी-** अर्थात् सत्यवाणी, मधुरवाणी, सयंतवाणी, निर्मलवाणी का प्रयोग करना।

● **सुस्नेह-** अर्थात् परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति सुस्नेह रखना।

● **सुसयंम-** अर्थात् प्रत्येक कार्य में स्वयं में संयम रखकर व्यवहार करना।

● **र्निलोभी-** अर्थात् लोभ की भावना का त्याग व निस्वार्थ कार्यों की प्रबलता।

● **सुसेवा-** अर्थात् जीवन के विचारों को परहित सुसेवा में प्रधानता देना।

● **नि:स्वार्थी-** अर्थात् प्रत्येक कार्य में अपना स्वार्थ न देखकर परमार्थ रखना।

ये सात गुण उत्तम चरित्र के मूलाधार हैं और प्रत्येक मनुष्य को अपने व्यक्तित्व के लिए इन सप्त गुणों पर आधारित होना चाहिए, यदि परिवार का प्रत्येक सदस्य उक्त आचरणों के संस्कार बना ले तो परिवार व समाज व राष्ट्र में सर्व उन्नति होगी। शिष्ट व्यक्ति अशिष्टता का उत्तर शिष्टता से देता है, अभद्रता का भद्रता से, अपमान का मान से, बुराई का भलाई से अन्याय का न्याय से उत्तर देता है। व्यक्तिगत उत्तम चरित्र सभी मनुष्यों के लिए अनिवार्य है।

२. परिवारिक चरित्र- यदि व्यक्तिगत चरित्र उत्तम है, पारिवारिक समूह का भी उत्तम होगा। परिवार के चरित्र में क्रोध, मनमुटाव, रूष्ट होना और बोल चाल बन्द करने का कोई स्थान नहीं है। प्रत्येक सदस्य को एक दूसरे का ध्यान रखना चाहिए, एक दूसरे की भावनाओं की कदर करनी चाहिए। एक दूसरे की उन्नति में सहायक होना चाहिए। परिवार में शारीरिक उन्नति, मानसिक और आत्मिक उन्नति के कार्य करने चाहिए। सारे परिवार को सत्य, ईश्वर और ईश्वरीय वाणी वैदिकधर्मी, व वैदिक संस्कारों वाला होना चाहिए। सबको परिवार में मधुर भाषा का प्रयोग करना चाहिए। खानपान सात्विक होना चाहिए। यह गुण परिवार के प्रत्येक सदस्य के संस्कारों में तभी आ सकते हैं जब परिवार के प्रत्येक सदस्य का व्यक्तिगत चरित्र उत्तम होगा।

३. सामाजिक चरित्र- मानव सामाजिक प्राणी है, इसे हर कदम पर प्रत्येक वस्तु के लिए एक दूसरे की सहायता लेनी पड़ती है। अर्थात् हम एक दूसरे के ऋणी रहते हैं। सर्व हितकारी नियम पालन करना चाहिए। सबको अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। सामाजिक चरित्र तभी उन्नत होगा, जब निम्न पांच नियमों का पालन प्रत्येक नागरिक, सामाजिक संस्थाएं, धार्मिक संस्थाएं करते हो।

● **अहिंसा-** मन, वचन, कर्म से किसी भी प्राणी को हानि न पहुंचाना।

● **सत्य-** प्रत्येक कृत्य और व्यवहार में सदैव सत्य का पालन करना।

● **अस्तेय-** किसी को भी धोखा देकर दूसरे की वस्तुओं को न लेना, अर्थात् झूठ न बोलना।

● **ब्रह्मचर्य-** सभी नागरिकों को सदाचारी होना।

● **अपरिग्रह-** आवश्यकता से अधिक धन व सम्पत्ति न जोड़ना तथा लोभ न करना।

अर्थात् - मनसा वाचा कमर्णा से सबको एक होना चाहिए। मानव समाज की इकाई व बुनियाद है इसलिए सामाजिक सेवा में सामाजिक उन्नति में समाज के नियमों का पालन तथा परहित के नियमों का पालन समझदारी की भावना से करना चाहिए।

उदाहरण- हमें याद रखना चाहिए कि हम सदैव समाज के ऋणी होते हैं। उदाहरण रूप में ले लीजिए हम एक कप चाय पीते हैं तो कितने लोगों के सहयोग से पीते हैं। किसी ने चाय के बगीचे में चाय की पत्तियां तोड़ी किसी ने सुखाई तो किसी और ने तैयार की। किसी ने खेत में गन्ना बोया, किसी ने चीनी तैयार की, किसी ने दूध उत्पादन किया, किसी ने बनाकर पिलाई। अब आप देखिए हम दैनिक जीवन में कितनी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं अर्थात् हम प्रत्येक क्षण समाज के ऋणी रहते हैं।

४. राष्ट्रीय चरित्र- मातृभक्ति, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्र निष्ठा, राष्ट्र सेवा, राष्ट्र के लिए बलिदान की भावना सदैव राष्ट्र की उन्नति के कार्य करना ये सब राष्ट्र प्रगति के साधन है। हमारे सर्वप्रथम और सर्वश्रेष्ठ कार्य व कर्त्तव्य मातृभूमि की रक्षा करना है। राष्ट्र रक्षा हेतु जिन वीरों ने बलिदान दिए हैं तथा जिन समाज सेवियों ने राष्ट्र के लिए उत्तम कार्य किए हैं उनका स्मरण, अनुकरण, सम्मान करना चाहिए, अर्थात् राष्ट्र की समृद्धि, स्वच्छ विचार, समान अधिकार, राष्ट्रभक्ति व राष्ट्र प्रेम और सर्व हितकारी नियमों का पालन प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है।

५. विश्व चरित्र- अन्तरराष्ट्रीय नीति में शुद्धता, विदेश नीति का पालन, राष्ट्र की मर्यादा को अक्षुण बनाने हेतु संयुक्त राष्ट्रसभा में अपने राष्ट्र की उत्तम नीतियों को स्पष्टता से रखना, राजनीतिक सम्बन्धों को मधुर बनना, सर्वहितकारी वार्ता द्वारा राजनैतिक समझौते करना, संयुक्त राष्ट्र सभा के नियमों का पालन करना।

युद्धनीति के बजाए आपसी सहमति से शान्ति स्थापित करना तथा आयात-निर्यात वस्तुओं पर सन्तुलन सर्वहित में बनाकर रखना तथा छोटे से छोटा और बड़े से बड़े राष्ट्र का सम्मान करते हुए सर्वहित नियमों का पालन करना। ये सभी गुण अन्तरराष्ट्रीय जीवन में प्रत्येक राष्ट्र को सुखद बनाते हैं। ■

गत अंक अप्रैल २०१७ के पृष्ठ २६ का शेष भाग

विवाह के सम्बन्ध में, युवक-युवति के गुणों का मिलान

-स्वामी हरिश्वरानन्द -
तेजेन्द्र नगर, चांदखेड़ा
अहमदाबाद (गुजरात)
चलभाष - ८१५५०५५२६०

१९.वर-कन्या दोनों में कोई भी अंगहीन अर्थात् अपंग तो नहीं है। यदि ऐसा है तो वह विवाह अयोग्य माना जाना चाहिए।

२०. वर-कन्या दोनों में से कोई भी मिथ्याचारी तो नहीं है, अर्थात् कोई भी झूठ तो नहीं बोलता है।

२१. वर-कन्या दोनों में से कोई भी अकारण क्रोध तो नहीं करता है। अर्थात् क्रोधी स्वभाव के तो नहीं है।

२२. वर धन कमाने में समर्थ है अथवा नहीं, कहीं आलसी, निकम्मा तो नहीं है और कन्या गृहकार्यों में सुयोग्य है अथवा नहीं, कहीं वर कन्या-दोनों में से कोई भी अपव्ययी तो नहीं है।

२३. वर-कन्या दोनों चरित्रवान हैं अथवा नहीं। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए। अर्थात् दोनों ने बह्मचर्य का पालन किया है। विवाह पूर्व किसी ने कोई चरित्रहीनता तो नहीं की।

२४. वर-कन्या दोनों में सहनशीलता का गुण है अथवा नहीं।

२५. वर-कन्या दोनों का न्याय प्रियता का स्वभाव है अथवा नहीं।

२६. क्या वर-कन्या दोनों में दान देने की प्रवृत्ति है अथवा नहीं ?

२७. क्या दोनों में धर्म पालन करने के गुण हैं?

२८. दोनों में प्रातः-सायंकाल में हवन करने के दोनों समय सन्ध्या करने तथा अतिथि सत्कार करने के संस्कार है।

२९. दोनों में से कोई भी हिंसक स्वभाव का तो नहीं है। मांसाहार तो नहीं करते।

३०. दोनों में से कोई नास्तिक विचारों का तो नहीं, अर्थात् आत्मा परमात्मा में अविश्वास तो नहीं करते हैं।

३१. दोनों में परोपकारिता का गुण है अथवा नहीं?

३२. दोनों पुरुषार्थी (परिश्रमी) हैं अथवा नहीं।

३३. दोनों में से कोई परनिन्दक अर्थात् चुगलखोर तो नहीं है।

३४. दोनों में से कोई अहंकारी स्वभाव का तो नहीं है।

३५. दोनों में से कोई आलसी प्रमादी तो नहीं है और मद्यपान तथा धूमपान तो नहीं करते।

३६. वर-कन्या दोनों में कोई भी प्रातः देर तक तो सोते नहीं रहते, अर्थात् प्रातः सूर्योदय पूर्व जग जाते हैं अथवा नहीं।

लगभग उपरोक्त सभी ही छत्तीस गुण ऐसे हैं जो प्रत्येक वर-कन्या में समान रूप से होने ही चाहिए। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या उपरोक्त सभी गुण किसी एक ही व्यक्ति (वर-कन्या) में सम्भव हो सकते हैं? यदि सभी उपरोक्त गुण सभी में मिल जाएं तो वह मानव ही नहीं वह तो देवता ही होगा। हम भी तो यही चाहते हैं कि दिव्य गुण धारण कर मानव देवताओं की उत्पत्ति करे, ताकि समस्त मानव, सृष्टि देवताओं का निवास स्थान बन जाए। ताकि धर्म, अर्थ, काम, ओर मोक्ष की सिद्धि सहजता से प्राप्त हो जाए।

परन्तु यह बात भी सही है कि वैदिक कर्मफल के सिद्धान्त के अनुसार सभी में उपरोक्त सभी गुण मिलना सम्भव नहीं है, परन्तु उपरोक्त गुणों में से (५०प्रतिशत) गुण तो मिलने ही चाहिए, ताकि वर-कन्या सामान्य जीवन तो दोनों मिलकर जी सकें।

यदि ५०प्रतिशत से उत्तरोत्तर अधिक गुण मिलते जाए तो ऐसे दम्पत्ति अपने जीवन के लक्ष को प्राप्त करते जाएंगे। अर्थात् स्वर्गीय- सुखमय जीवन जी सकेंगे। और यदि ५० प्रतिशत से कम गुण मिलते हैं तो उन्हें नारकीय जीवन जीने पर मजबूर होना पड़ेगा।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि इतने गुणों को वर-कन्या में किस प्रकार देखे जाएं। पूर्वकाल में गुरुकुल शिक्षा पद्धति में जहां लड़के-लड़कियों के गुरुकुल पृथक-पृथक हुआ करते थे जहां कन्या गुरुकुलों की आचार्या ओर शिक्षिकायें योग्य विदूषी महिलाएं हुआ करती थी और लड़कों के गुरुकुलों में योग्य आचार्य तथा शिक्षक हुआ करते थे।

उपरोक्त दोनों गुरुकुलों के आचार्य-आचार्यो, शिक्षक-शिक्षिकाओं के पास अपने-अपने विद्यार्थियों की एक-एक सर्विस बुक की तरह गुप्त आचार पुस्तिका रहती थी। उसमें सब विद्यार्थी एवं विद्यार्थिनियों के प्रवेश से लेकर गुरुकुल छोड़ने तक सभी गतिविधियों तथा आचार-विचारों, व्यवहारों का लेखा-जोखा रखा जाता था। गुरुकुल पंजिका पुस्तक में लिखित रूप में उपलब्ध रहती थी।

विद्यार्थियों के गुरुकुल छोड़ने से पूर्व या छोड़ते समय बच्चों के माता-पिता को बुलाकर उन पंजिका पुस्तकों को उनके सुपुर्द कर दिया जाता था। जिसमें समस्त गुण, कर्म, स्वभाव, अंकित रहते थे। उन पंजिका पुस्तकों के आधार पर वर-कन्या के गुण, कर्म, स्वभावानुसार मिलान करके या तो गुरुकुलों द्वारा अथवा माता-पिता द्वारा योग्य वर-कन्याओं के गुण, कर्म, स्वभावों के आधार पर पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न करा दिए जाते थे। कहो कैसी सुन्दर व्यवस्था थी, गुरुकुल शिक्षा पद्धति से गुणों की परख और गुणों को मिलान करने की।

वर्तमान काल में समय बदला, हालात बदले, विचार बदले, रहन-सहन बदला, खान-पान बदल गए। अधिकतर हमारे देश ने शाकाहार के स्थान पर मांसाहार अपना लिया। हमारे देश पर विदेशियों के आक्रमण होते रहे। अन्त में हमारा देश गुलाम बन गया। हजारों वर्ष तक हमारा देश गुलाम बना रहा। इन विदेशियों द्वारा हमारा इतिहास, हमारी संस्कृति, हमारे आचार-विचार सब कुछ बदल दिए गए। कहावत है कि यदि किसी देश को गुलाम बनाना हो तो उस देश की संस्कृति और इतिहास को बदल दो वह देश अपने आप गुलाम बन जाएगा और वही हुआ।

विकृत शिक्षा पद्धति जैसे कि ऊपर कहा जा चुका है कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति कितनी सुन्दर, सुसज्जित तथा सुगठित, शुभ परिणाम लक्षी थी। आज ठीक उपरोक्त के विपरीत सहशिक्षा हमारे देश में प्रचलित हो गई। सहशिक्षा पद्धति में लड़के-लड़कियां एक-दूसरे के साथ बैठकर पढ़ते तो क्या है? इस बात को भी सभी जानते हैं। यह विदेशियों की सोची समझी चाल थी कि भारतीय युवा शक्ति को शरीर से तो भारतीय बना रहने दो मगर बुद्धि से अंग्रेज बना दो और वही हुआ भी। आज हमारा देश सचमुच में बुद्धि से आचार-विचार तथा रहन-सहन से और खानपान से तो अंग्रेज है ही केवल शरीर से ही भारतीय दिखाई देते हैं। उपरोक्त सभी विदेशियों की सोची-समझी सुनियोजित चाल का ही परिणाम आज हमारा देश भोग रहा है और

न जाने भविष्य में कितनी पीढ़ियों को और भोगना पड़ेगा। यदि हमारी शिक्षा पद्धति में परिवर्तन नहीं हुआ तो।

वर्तमान सह-शिक्षा पद्धति के परिणाम स्वरूप लड़के-लड़कियां, माता-पिता, परिवार आदि की सहमति के बिना रूप, रंग, धन, ऐश्वर्य की चका-चौंध में माता-पिता आदि की सहमति के बिना वर्ण आदि का विचार किए बिना, छिपकर सरकारी मान्य संस्थाओं में जाकर विवाह सूत्र में बंध जाते हैं। परिणाम यह होता है कि जब रूप, रंग, धन, ऐश्वर्य का नशा उतर जाता है तो कुछ समय पश्चात् ही सम्बन्ध विच्छेद की नौबत आ जाती है।

मेरी व्यक्तिगत राय यह है कि ऐसी घटनाओं में कन्यायें ही अधिक दोषी हैं। हो सकता है मेरी राय से कोई अन्य व्यक्ति सहमत न भी हो। जब खुद ही बकरी कसाई के खूटे पर हलाल होने जाएगी तो कसाई का क्या दोष हो सकता है। मैं लड़कियों को इसलिए दोषी मानता हूं कि उन्हें घर-परिवार, गौत्र, वर्ण आदि का तो ज्ञान होता नहीं है , अथवा कराया जाता नहीं है, क्योंकि वर्तमान के माता-पिता भी तो आज की दूषित नाव पर ही तो सवार हैं। आज की कन्याएं ऐसे-ऐसे वस्त्र पहनती है कि देखने वालों का सिर शर्म से झुक जाता है, मगर इन पहनने वालियों को शर्म नहीं आती है। कैसे तो इनके माता-पिता हैं जो उनको ऐसे बेहया वस्त्र खरीद कर पहनने की आजादी दे देते हैं। जो गुप्त अंगों को ढंकते कम है दिखाते अधिक हैं। एक ही घर परिवार के, एक ही गोत्र के लड़के-लड़कियां आपस में सम्बन्ध स्थापित कर शारीरिक सम्बन्ध बनाकर चोरी-छिपे वैवाहिक सूत्र में बंध जाते हैं, जिन्हें समाज तथा परिवार स्वीकार नहीं करते हैं। परिणाम यह होता है कि लड़का अथवा लड़की आत्महत्या कर लेते हैं अथवा दोनों ही लाशें या तो रेल की पटरी पर या कहीं नदी-नाले के पास सड़ी-गली हालत में पड़ी मिलेंगी। यदि कोई समाज सुधारक अथवा कोई बुद्धिजीवी उपरोक्त पहनावे अथवा आचरणों पर कोई कुछ बोलता है तो उस पर किसी के स्वतन्त्र अधिकारों पर कुठाराघात का आरोप लगाकर उसका मुंह बन्द कर दिया जाता है। वर्तमान में लड़के-लड़कियां विधर्मियों के साथ भी सम्बन्ध बनाने में भी नहीं हिचकिचाते हैं। परिणाम वही होता है जो ऊपर कहा जा चुका है।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि गुणों का मिलान किया जाए तो कैसे किया जाए? पौंगा पण्डितों को कुछ आता-जाता नहीं, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है। गुरुकुल पद्धति जड़-मूल से समाप्त हो गई। हालांकि आर्य समाज इस विषय में कुछ प्रयास कर रहा है, मगर वे प्रयास पर्याप्त नहीं है। वर्तमान शिक्षा पद्धति विकृत हो चुकी है तो क्या किया जाए? यह यक्ष प्रश्न समाज के सामने मुंहबाये खड़ा है।

उपाय- उपरोक्त में जो ३६ गुण दर्शाये गए हैं उनकी ४ प्रतियां बनाई जाएं। उनमें से एक-एक प्रति विवाह के योग्य प्रस्तावित वर-कन्या को दे दी जाए, तथा एक-एक प्रति वर-कन्या के माता-पिता को दे दी जाए। उपरोक्त चारों भागीदारों को शपथ दिलाते हुए कहा जाए कि उपरोक्त सभी गुणों की सूची जो इस पत्र में दी गई है उनको ईमानदारीपूर्वक हाँ अथवा ना में भरोगे अर्थात् वे गुण उनमें हैं अथवा नहीं, तो सुखी रहोगे अन्यथा जीवन भर दुःख भोगोगे। उन प्रस्तावित वर-कन्या के द्वारा भरी गई प्रतियों को उनके माता-पिता को दे दी जाए और उन माता-पिताओं को भी सावधान किया जाए कि उन्होंने अपनी-अपनी प्रतियां हाँ अथवा ना में भरी हैं, उनसे अपने-अपने बच्चों के द्वारा जो प्रतियां भरी गई हैं उनसे ईमानदारी पूर्वक मिलान करके देखें कि क्या उनके माता-पिता अपने-अपने बच्चों के गुण, कर्म स्वभावों से भली प्रकार से परिचित होते हैं। यदि बच्चों ने कुछ गलत जवाब लिखे हैं तो उन्हें बुलाकर समझा कर सही जवाब लिखवायें जाएं। इस प्रक्रिया के पश्चात्, उन्होंने जो स्वयं जो प्रति उत्तर तैयार किए हैं उनसे मिलान करके अपने-अपने सम्भावित समधियों को दे दें। वे दोनों पक्ष ईमानदारी पूर्वक निश्पक्ष भाव से बिना किसी स्वार्थ और लालच के एक दूसरे की प्रतियों का निरीक्षण एवं मूल्यांकन करने के पश्चात् ही किसी उचित निर्णय पर पहुंचे, तो बच्चों का भविष्य उज्जवल रहेगा। अन्यथा वही होगा जो आज हम वर्तमान समय में देख रहे हैं। पुनः सावधान किया जाता है कि यदि चारों पक्षों ने निष्पक्ष रूप से गुणों का सही मूल्यांकन नहीं किया तो नया बसने वाला संसार (गृहस्थ) नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा। देवताओं के स्थान पर राक्षस उत्पन्न होंगे जो परिवार, समाज तथा देश और विश्व को तबाह कर देंगे। जैसी तबाही आज हम वर्तमान में देख रहे हैं।

वर्तमान में कुछ ऐसा चलन चल निकला है, कि पहले सम्भावित वर-कन्या की जन्म कुण्डलियों का मिलान किया जाए। वैसे आज के पौंगा पण्डित जन्म कुण्डली कैसे बनाते हैं, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में बड़े ही सुन्दर ढंग से विस्तारपूर्वक वर्णन किया है, भाव यह है कि लिखने वाला भी खुदा और पढ़ने वाला भी खुदा। अर्थात् यहां के पण्डित ने लिखी वहां के पण्डित ने देखी और वहां के पण्डित ने लिखी यहां के पण्डित ने देखी। दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। दोनों ही सम्भावित वर-कन्या की जन्म कुण्डली देखने वाले दोनों पक्ष के ये धूर्तपौंगा पण्डित वही बताएंगे जो उन्होंने जन्मकुण्डलियों में लिखा है। सम्भावित वर रहता है, फैजाबाद में और सम्भावित कन्या रहती है, हैदराबाद में और वहीं से उन्हीं सम्भावित वर-कन्या की जन्म कुण्डिलयों को देखकर ये धूर्त पण्डित उल्टे-सीधे विवाह बनाकर नव दम्पत्तियों का भविष्य खराब कर देने का पाप करते हैं और सम्भावित वर-कन्या के माता-पिता भी तो बिना जन्मकुण्डली मिलायें विवाह के लिये तैयार ही नहीं होते हैं। कुण्डली मिलान के चक्कर में योग्य वर-कन्या का विवाह ही नहीं हो पाता है और कुमेल विवाह कराने का पाप तो किया पण्डितों ने और भोगना पड़ता है बेचारे नवदम्पत्तियों को।

इन पौंगा पण्डितों की तो यही कसाई नीति है कि बुढ्ढा मरे या जवान मुझे तो हत्या से काम। अर्थात् वर मरे या कन्या मुझे तो समुचित दक्षिणा से काम है। एक-एक पण्डित अपनी सुविधा के अनुसार एक ही दिन में चार-चार विवाह कराता रहता है। ये ही पण्डित शुभ विवाह निकालेंगे तारीख एक का और नाम मात्र के फेरे पड़ेंगे तारीख दो में (रात्रि के बारह बजे के पश्चात्)। जब कि वैदिक विधान के अनुसार सूर्यास्त के पश्चात् हवन होना ही नहीं चाहिए और इसी विधान के अनुसार बिना हवन के अर्थात् बिना अग्नि को साक्षी के फेरे अर्थात् विवाह मान्य ही नहीं होता। उस समय वर-कन्या को नींद के झोंके आते हैं तो सात वचनों का उच्चारण कौन करे? प्रत्यक्ष है कि पण्डितों के अलावा कौन करता होगा, वह भी करते भी होंगे अथवा नहीं, क्योंकि उस समय यजमानों को भी जल्दी रहती है कि पण्डित जी जरा जल्दी कीजिए विदाई का समय हो रहा है। बस हो गई विवाह की सभी विधियां। घराती-बराती तो रात दस बजे पूर्व ही दावत खाकर और लिफाफे में चंद रुपए देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर पहले ही जा चुके थे। अब आगे कुछ भी होता रहे, उनका कोई सरोकार नहीं। ■

धर्म की दुकान

धर्म मन आत्मा और परमात्मा की बात है।
किसी के कहने - सुनने की नहीं, समझने की बात है।।

ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना आराधना करो।
यज्ञ, हवन कर केवल एक ईश्वर की वंदना करो।।

यह एक अहम् दिल का दर्शन है।
परन्तु वाह आज इसका कितना प्रदर्शन है।।

जिधर देखो, श्रोता और उपदेशक उमड़ रहे हैं।
अपने आप को भगवान का खास बता अड़ रहे हैं।।

कथा-भागवत के नाम पर दुकाने खुल गई।
आयोजन करो-कराओ हर तरफ धूम मच गई।।

कई संत साधना के बजाय साधनों में लिप्त हैं।
सबको त्याग का उपदेश कर परिग्रह में मस्त है।।

प्रचार के नाम पर धर्म बहुत सस्ता हो गया।
करो मत कुछ, केवल सुनो, मोक्ष का रास्ता हो गया।।

धर्म का दिन ब दिन नशा चढ़ता ही गया।
ज्यौं-ज्यौं दवा की दर्द बढ़ता ही गया ।।

अरे दे धोखा खुद-धोखा खा रहे।
धर्म को सस्ता समझ नाच-नचा रहे।।

कृष्ण को चोर रसिक बता रास रचा रहे हैं।
शिवजी को भोग लगा गांजा-भांग चढ़ा रहे हैं।।

देवी को दारू की धार मार खुद पी रहे हैं।
आत्मा को मार मन्त्र-तन्त्र पर जी रहे हैं।।

होश में आओ ईश्वर को जानो ध्यान करो।
आडंबर- पाखंड छोड़ दिल से गुणगान करो।।

आत्मा और परमात्मा का मिलन ही धर्म है।
मानवता सेवा और सत्य को जानना ही धर्म है।।

वैदिक मान्यताएं

सुखी सफल जीवन का आधार

१. इस आदि-अनादि असीम सृष्टी लोक-लोकान्तरों का एक ही मालिक ईश्वर है जो सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ, महान् और न्यायकारी है।

२. ईश्वर अजर, अमर, अभय, नित्य और सच्चिदानन्द स्वरूप है। वह जन्म-मरण से परे है! कभी किसी रूप में अवतार नहीं लेता। वही इस असीम सृष्टि का निर्माता (G) संचालक विष्णु (O) संहारकर्ता महेश (D) God है। गुण कर्म अनुसार उसके कई नाम हैं उसका मुख्य नाम ओ३म् है।

३. ईश्वर ही सभी प्राणियों का स्थायी पिता, माता, बन्धु, सखा, सहायक और सबका कर्मफल दाता है। उसी एक मात्र की आराधना करना चाहिए।

४. हमें बुद्धि, ज्ञान, शक्ति और स्वस्थ जीवन के लिए उसी से नेक परिश्रम के साथ नित्य प्रार्थना करना चाहिए।

५. ईश्वर प्रदत्त ज्ञान चार वेदों में संग्रहित होकर अति प्राचीन है। यह ज्ञान पूर्ण वैज्ञानिक सृष्टीक्रम अनुसार होकर सभी वर्ग, जाति, समाज, सम्प्रदाय के लिए सभी काल में सभी स्थानों के लिए समान रूप से लाभकारी है। वेदज्ञान ईश्वर प्रदत्त होने से लेशमात्र भी असत्य नहीं है।

६. ईश्वर कभी किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। यथा कर्म तथा फल/ राम, कृष्ण, महादेव, हनुमान, महावीर, यीशु, नानक आदि युग महापुरुष थे। ईश्वर के अवतार नहीं थे। इनके कर्म चरित्र उत्तम और अनुकरणीय है। इनकी मूर्तियां बनाकर, अभिषेक, पूजा करने के बजाय इनके अच्छे गुण चरित्र को जीवन में उतारना चाहिए, यही इनकी भक्ति होगी।

७. हमें भ्रम फैलाने वाले पाखण्ड, आडम्बर व अंधविश्वास जगाने वाले अनेक धर्मगुरुओं के आधे अधूरे ज्ञान से सदा बच कर रहना चाहिए। अनेक देवी-देवताओं के भ्रम में न पड़कर एक ही ईश्वर की भक्ति करना चाहिए।

८. सदा वेद, उपनिषद्, सत्यार्थ प्रकाश आदि आर्ष ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए। पंच महायज्ञ, सोलह संस्कार, वर्णाश्रम, धर्मपालन करना चाहिए।

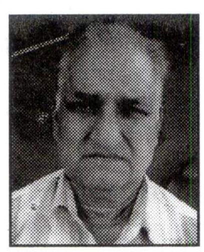

मोहनलाल आर्य
नारायणगढ़
जिला-मन्दसौर
चलभाष :
९५७५७९८४१२

९. आज की शासन की सभी जनकल्याणकारी योजनाएं वैदिक धर्म और संस्कृति पर ही आधारित हैं। यथा महिला एवं बाल विकास, गौ रक्षा, जीवदया, पर्यावरण रक्षा, मानव धर्म, राष्ट्रधर्म, महिला शिक्षा आरक्षण, शिक्षा और संस्कृति विकास, दलित, पतित, शोषित निर्धनों का उत्थान, बाल विवाह , सती प्रथा ,दास प्रथा, बालश्रम निषेध, समरसता एवं सबके कल्याण और विकास की योजनाएं।

१०. सुखी, समृद्ध जीवन, आनन्दमय, जीव और लोक-परलोक, सुधारने-संवारने के लिए वेद मार्ग पर ही चलना उचित होगा। ■

तथाकथित हिन्दू समाज ने अपने कर्णधारों की आपसी फूट एवं अदूरदर्शिता और तुष्टिकरण की बहुत बड़ी कीमत चुकाई है तथा चुका रहे हैं।-**आओ! कुछ ऐतिहासिक तथ्य जानें**

हिन्दू नववर्ष कब प्रारम्भ होता है?

(१) शक सम्वत् प्रतिवर्ष २२मार्च से प्रारम्भ होता है। २२ मार्च से नव शक सम्वत् १९३९ प्रारम्भ हुआ। इस दिन चैत्र मास की प्रथम तिथि थी। इसमें कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष नहीं होते हैं। इसे राष्ट्रीय शक सम्वत् भी कहा जाता है। ब्रिटिश सरकार ने इसी सम्वत् को मान्यता दी थी। यह मान्यता अभी तक जारी है। इसे शाके सम्वत् भी कहते हैं।

(२) अधिकांश हिन्दू संगठन विक्रमी सम्वत् को पसन्द करते हैं। इसमें कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष होते हैं। १३ मार्च को चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रथम तिथि थी। उस दिन विक्रमी सम्वत् २०७४ प्रारम्भ हुआ था। महाराष्ट्र अकेला ऐसा राज्य है जहां चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रथम तिथि को नववर्ष प्रारम्भ होने की खुशी मनाई जाती है। हम महाराष्ट्र की इस सोच से सहमत हैं, क्योंकि यह उचित लगता है।

(३) देश के अन्य राज्यों में चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को नव वर्ष प्रारम्भ होने की खुशी मनाई जाती है जिसे वर्ष प्रतिपदा भी कहते हैं। इस वर्ष २८ मार्च को प्रतिपदा थी।

श्री रामचन्द्र जी की जन्मतिथि कौन सी है? (९७७११७)

(१) महाराजा दशरथ के सबसे बड़े पुत्र रामचन्द्र थे।

(२) आपका जन्म त्रेयायुग में हुआ था। अयोध्या आपकी जन्मभूमि है।

(३) पूरे हिन्दू समाज में आपकी मान्यता है। ५ अप्रैल (रामनवमी)को आपका जन्मदिन था।

(४) पौराणिक हिन्दू आपको सातवां, भगवान का अवतार मानता हैं।

(५) आपका जन्म नौ लाख सतत्तर हजार एक सौ सत्रह वर्ष पहले हुआ था।

वीर सावरकर ने गुरु गोलवलकर से बोलना क्यों बन्द कर दिया था?

(१) स्वतन्त्रवीर विनायक दामोदर सावरकर का जन्म २८ मई १८८३ को भगूर (नासिक) में हुआ था।

(२) आप २०वीं शताब्दी के सबसे बड़े हिन्दू संगठक थे।

(३) आपने ही १-१-१९३८ को हिन्दू महासभा को राजनीतिक दल घोषित किया था।

(४)आपने हिन्दुत्व नाम से पुस्तक लिखी थी जिसे पढ़कर डॉ. हेडगेवार कांग्रेस छोड़कर हिन्दुवादी बने थे।

(५) डॉ. हेडगेवार ने १९२५ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की थी, ताकि हिन्दू संगठित और बलशाली बने वे सावरकर को झुककर प्रणाम करते थे।

(६) १९४० में उनकी मृत्यु के बाद गुरु गोलवलकर सरसंघ चालक बने।

(७) उन्होंने बचावकारी स्वयं सेवक तैयार किए, जबकि डॉ. हेडगेवार आक्रामक सोच के स्वयं सेवक बनाना चाहते थे। गुरुजी ने १९४५-४६ के चुनावों में हिन्दू महासभा को वोटें नहीं दिलवाई और १९५१ में भारतीय जनसंघ की स्थापना करा दी, जिसका १९८० से नाम भाजपा है।

(८) इससे अप्रसन्न होकर वीर सावरकर ने गुरु गोलवलकर से बोलना बन्द कर दिया था, क्योंकि सावरकर जी को गुरुजी के कार्य पसंद नहीं आते थे।

(समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार)

बलिदानी परम्परा के वाहक भाई महावीर-प्रदीप सरदाना

प्रतिक्रिया-(१) भाई मतिदास ने ९-११-१६७५ को आरे से अपना शरीर कटवा लिया था, लेकिन हिन्दू धर्म छोड़कर मुस्लिम नहीं बने थे। (भाई मतिदास और भाई यतिदास गुरुगोविन्दसिंह जी के सच्चे भक्त थे। औरंगजेब के अत्याचारों के सामने मस्तक झुकाने के स्थान पर बलिदान हो गए- सम्पादक)

(२) उनका महान त्याग और बलिदान हिन्दू को प्रेरणा देता है, लेकिन उसी वंश के डॉ. भाई महावीर ने सराहनीय कार्य नहीं किए।

(३) लाहौर में भाई महावीर ने कहा था कि हिन्दू महासभा तो हिन्दू राष्ट्र नहीं बनवा सकती है, क्योंकि उसमें युवक कम हैं।

(४) भाई महावीर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में आ गए थे, तब उन्होंने कहा था कि संघ हिन्दू राष्ट्र बना सकता है, क्योंकि उसमें युवक बहुत हैं।

(५) १९४५-४६ के चुनावों में संघ ने कांग्रेस का अप्रत्यक्ष रूप से साथ दिया था तब भाई महावीर ने विरोध क्यों नहीं किया?

(६) भाई महावीर ने जनसंघ बनाने का विरोध क्यों नहीं किया? वे उसके महासचिव क्यों बने? नई दिल्ली में उनके पिताजी ने १९३९ में हिन्दू महासभा भवन बनवा दिया था। उन्हें तो हिन्दू महासभा को ही मजबूत व बड़ा बनाना चाहिए था, यदि वे ऐसा करते तो भाई मतिदास की बलिदान की परम्परा चलती रहती।

(७) १९८० में तो भाजपा के ध्वज में केसरिया रंग घटाकर ६६ प्रतिशत वाजपेयी ने संघ की सहमति से कर दिया था तब तो भाई महावीर को भाजपा से सम्बन्ध तोड़कर हिन्दू महासभा के लिए डटकर कार्य करना चाहिए था।

(८) म.प्र. का राज्यपाल बनने पर भाई महावीर ने जिला धार स्थित सरस्वती मन्दिर परिसर से मस्जिद हटवाने के लिए मुख्यमन्त्री से क्या कहा?

(९) शिवराजसिंह १५वर्षों से मुख्यमन्त्री बने हुए हैं, लेकिन मस्जिद हटवाने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं।

(१०) जब विपक्ष के नेता थे तब कांग्रेस से कहते थे कि मस्जिद अवैध है, अतः हटनी चाहिए।

(११) यदि भाई महावीर राज्यपाल बनने से पूर्व शर्त लगा देते कि मस्जिद हटवाई जाएगी तब तो वे प्रशंसा के पात्र होते।

(१२) जिस प्रकार भाजपा गांधीवादी हो गई है और उसी प्रकार भाई महावीर भी गांधीवादी हो गए थे, लेकिन उनके पिता द्वारा बनाई हुई हिन्दू महासभा अभी भी गांधीवादी नहीं है और उसके ध्वज में केसरिया रंग १०० प्रतिशत है, इसलिए भाई महावीर के कार्य प्रेरणादायक नहीं हैं।

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

हमारे देश में लोकतन्त्र नहीं है

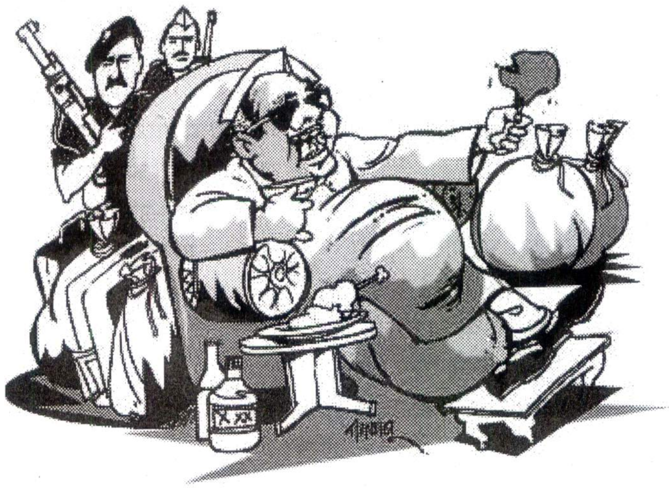

'परोपकारी' अप्रैल प्रथम २०१७ के सम्पादकीय में श्री दिनेश शर्मा जी ने लिखा है- उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखण्ड, मणिपुर और गोवा में चुनाव सम्पन्न हुआ ओर दो प्रदेशों में (उत्तरप्रदेश और उत्तराखण्ड) भाजपा ने प्रधानमन्त्री श्रीमान् नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रचण्ड विजयप्राप्त की।

यह सम्पादकीय, आर्य समाजी नेताओं, विद्वानों द्वारा राजनीतिक दलों (विशेषकर भाजपा) की चाटुकारिता का स्पष्ट प्रमाण है। गणतन्त्र को लोकतन्त्र कहना अज्ञानता और मूढ़ता की पराकाष्ठा है। जब कोई विद्वान आर्य समाज के मंच में राजनीति पर कुछ बोलना चाहता है उसे यह कहकर रोका जाता है कि आर्य समाज राजनैतिक संस्था नहीं है। फिर सम्पादकीय में राजनैतिक दलों की प्रशंसा क्यों की जाती है? यह वेद, ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के उद्देश्यों से पूर्णत: विपरीत है। बहुत अधिक न लिखते हुए सम्पादक महोदय एवं अन्य लोगों को केवल याद दिलाना चाहता हूं कि हमारे देश में लोकतन्त्र नहीं है। यदि लोकतन्त्र के वास्तविक स्वरूप को जानना, समझना चाहते हैं तो सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास को बारम्बार पढ़ लेवें।

जैसा कि शब्द से ही स्पष्ट हो रहा है कि लोकतन्त्र का अर्थ जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा शासन व्यवस्था है, जिसे जनतन्त्र, प्रजातन्त्र भी कहते हैं। इसके विपरीत अलग-अलग राजनैतिक दलों द्वारा शासन करने को गणतन्त्र कहते हैं। गणतन्त्र का अर्थ-गन-तन्त्र- बन्दूक तन्त्र/ गुट्ट तन्त्र/ गुण्डा तन्त्र/ पार्टी तन्त्र/ दल तन्त्र/ दल-दल तन्त्र- गठबंधन सरकार/ झूठतन्त्र/ लूटतन्त्र है। वर्तमान में हमारे देश में लोकतन्त्र नहीं है, गणतन्त्र है।

शासन का अर्थ-सुरक्षा, शिक्षा और न्याय व्यवस्था है, किन्तु वर्तमान गणतन्त्र में शासन व्यवस्था संगठित होकर उचित-अनुचित रीति से धन कमाने का साधन- उद्योग, व्यापार, व्यवसाय बनकर रह गया है। विद्वानों के स्वार्थ/ उपेक्षा और स्वयं की अज्ञानता के कारण आम आदमी लोकतन्त्र और गणतन्त्र को एक ही समझता है। बड़े-बड़े नेता, वक्ता, नेता, राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, अन्य मन्त्री, इलेक्ट्रानिक और प्रिन्ट

'खेल' संसद का

डोंगरलाल वर्मा
पूर्व प्रधानाध्यापक,
प्रधान-आर्य समाज
कसरावद, जिला-खरगोन
चलभाष- ८९५९०५९०९९

हमारी शाला में, हमारे नेताजी आए।
हमारे छात्रों को देख नेताजी चकराये।।

जब नेताजी ने, पहले कमरे में किया प्रवेश।
देखा नेताजी ने, छात्रों में था बेहद आवेश।।
शिक्षक की टेबल के सामने, सारे खड़े थे।
मांगे अपनी मनवाने सभी अड़े थे।।
नारों पर नारे लगाये ही जा रहे थे।
एक-दूसरे को डरा-धमका भी रहे थे।।
एक-दूसरे को आपस में पीट रहे थे।
शिक्षक की टांग को घसीट भी रहे थे।।

हमारी शाला में....

अगले कमरे में चल रहा था, अजीब-सा ड्रामा।
कक्षा में फैला रखा था खूब, शोर और हंगामा।।
सभी अपनी बातों का अलाप जप रहे थे।
शान्ति के साथ बैठने हेतु, शिक्षक कह रहे थे।।
थी कमरे में सारी चीजें, बिखरी और टूटी।
थी किसी की कमीज, पेंट किसी की थी फटी।।

हमारी शाला में...

नेताजी ने पास के कमरे में देखा था, विचित्र हाल।
जंग-ए-कव्वाली चल रहा था, सुर और ताल।।
माँ-बहनों के रिश्ते आपस में, मुफ्त जोड़ रहे थे।
जूते-चप्पलों से परस्पर, सिर फोड़ रहे थे।।
आई किसी को मोंच, हुई किसी की टांग लगड़ी।
थी शाला परिसर में एक एम्बुलैन्स बस भी खड़ी।।

हमारी शाला में...

पूज्य शिक्षकों को नेताजी ने बुलवाया।
थे सारे मुस्कराये, पर नेताजी घबराये।।
प्राचार्य महोदय मधुर-वाणी में अलापे।
चिन्ता न कीजिए, हे देश के महाराजे।।
भारत की संसद में चलते हैं, जो विधि-विधान के खेल।
हमारी शाला में नवनिहाल, खेल रहे हैं संसद के खेल।।

हमारी शाला में, हमारे नेताजी आये।
हमारे छात्रों को देख, नेताजी चकराये।। (जय भारती)

मीडिया के पत्रकार-सम्पादक, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रशासनिक अधिकारी, न्यायाधीश, भाषाविद्, व्याकरणाचार्य, दार्शनिक, अध्यापक, व्याख्याता एवं साधारण लोग गणतन्त्र को ही लोकतन्त्र कहते हैं।

इन सबकी विवशता के अनेक कारण हो सकते हैं, जिनमें कुछ कारण निम्नलिखित हैं-

पहला कारण- यह समझ में आता है कि वे सरकारी लाभ लेना चाहते हैं, इसलिए किसी भी दल की सरकार हो, वे गणतन्त्र का विरोध कर लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था की मांग नहीं करते हैं।

दूसरा कारण- यह भी हो सकता है कि लोकतन्त्र/ प्रजातन्त्र/जनतन्त्र के वास्तविक स्वरूप (भयरहित, शुद्धतम, सरलतम, तर्कसंगत तथा वैज्ञानिक शासन प्रणाली) पर कभी विचार न कर सके हों।

तीसरा कारण- यह हो सकता है कि इस समय संसार के किसी भी देश में लोकतन्त्र नहीं है। इसलिए लोकतन्त्र के वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते।

कोई कितना भी तर्क और प्रमाण प्रस्तुत करे, किन्तु सच्चाई यही है कि वर्तमान में हमारे देश में लोकतन्त्र नहीं है। जिसका सबसे बड़ा प्रमाण है- प्रतिवर्ष २६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस मनाया जाता है, लोकतन्त्र दिवस नहीं मनाया जाता है। दूसरा बड़ा प्रमाण है- हमारे देश में राजनैतिक दलों की उपस्थिति। जिनमें से कुछ अभी शासन कर रहे हैं, शेष विपक्ष में है। जैसे- भारतीय जनता पार्टी, शिवसेना, कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी, आम आदमी पार्टी, पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी, डी.एम.के., ए.डी.एम.के., समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, जनता दल, राष्ट्रीय जनता दल एवं अन्य राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय राजनीतिक दल। हमारे देश की वर्तमान गणतांत्रिक व्यवस्था में जनता से छल करके निर्दलीय और राजनैतिक दल के नेता वोट लेकर सरकार बनाते हैं। वर्तमान में सभी राजनैतिक अपने-अपने स्वार्थों के लिए युवाओं को आपस में लड़वाते रहते हैं। जिस दिन इस देश का युवा वर्ग जागरुक हो जाएगा, उस दिन सभी राजनैतिक दलों का नामोनिशान मिट जाएगा।

जब कांच को हीरा नहीं कहते, पीतल को सोना नहीं कहते, दीपक/ बल्ब को सूर्य नहीं कहते, रेत को शक्कर नहीं कहते, बबूल और कीकर को आम या अन्य फलदार वृक्ष नहीं कहते, कांटों को फूल नहीं कहते, दल-दल (कीचड़) को समतल मैदान नहीं कहते, शराब को अमृत नहीं कहते, जंगली हिंसक जानवरों को घरेलू पालतू पशु नहीं कहते, बन्दर आदि नकलची पशुओं को मनुष्य नहीं कहते, देशद्रोहियों को देशप्रेमी नहीं कहते, शत्रु को मित्र नहीं कहते, चरित्रहीन स्त्री-पुरुष को आदर्श माता-पिता या शिक्षक/शिक्षिका नहीं कहते, दुर्जनों को सज्जन नहीं कहते, चोर को साहूकार नहीं कहते, डाकुओं को महात्मा नहीं कहते, लुटेरों को रक्षक नहीं कहते, मूर्ख को विद्वान नहीं कहते तो गणतन्त्र (पार्टीतन्त्र/ दलतन्त्र/ दल-दल तन्त्र- गठबन्धन सरकार/ गुट्टतन्त्र/ गनतन्त्र- बंदूकतन्त्र/ गुण्डातन्त्र/ झूठ तन्त्र/ लूटतन्त्र) को लोकतन्त्र (प्रजातन्त्र/ जनतन्त्र/ जनता का शासन) क्यों कहते हैं? इस विषय पर राष्ट्र स्तरीय चर्चा होना चाहिए।

स्वामी वेदरक्षक सरस्वती
वेद सदन, सीताराम गली, महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग, अजमेर

अरमानों की बस्ती में

राधेश्याम गोयल 'श्याम'
न्यू कालोनी, कोदरिया महू,
जिला-इन्दौर
चलभाष-
९६१७५९७९१०

राग-रंग में कितने दिन खोए,
कितने खोए मस्ती में,
आग लगा दी तुमने उनके,
अरमानों की बस्ती में।

राष्ट्र का चिन्तन करने वाले,
पहले भी बलिदान हुए,
सुरा सुन्दरी की चाहत में,
राजाओं के मान गये,
विदेशियों ने राज्य हड़पे,
केवल वाहवाही सस्ती में... आग लगा दी.....

उसी रंग में रंगकर नेता,
वो सब बातें भूल गए।
प्यार जिन्हें था मातृभूमि से
फाँसी पर वो झूल गए।
तंगहाली में परिवार जी रहे
ये खुश है अपनी हस्ति में... आग लगा दी

खण्ड-खण्ड में देश बाँटकर,
भू-खण्डों के स्वामी हो गए।
सहकारी का ढोंग रचाकर
सरकारी सब गो-चर, चर गए।
खोखले हो गए पहाड़ नदियां,
खनन वालों की दस्ती में.... आग लगा दी....

हरित क्रान्ति की नाव चला गए
सूखे रेगिस्तानों में
रसूक, दबंग सम्मान पा गये
नाम है जिनके थानों में
सज्जन न्याय की आस में बैठे
जो पकड़ाये गस्ती में... आग लगा दी

सोने वालों अब भी जागो,
समय की धारा कहती है।
रमता जोगी बहती धारा,
संदेश युगों से देती है,
चरवैति का मन्त्र बोल
जा बैठों वैदिक कश्ती में

आग लगा दी तुमने उनके अरमानों की बस्ती में।

ईश्वर का सच्चा स्वरूप

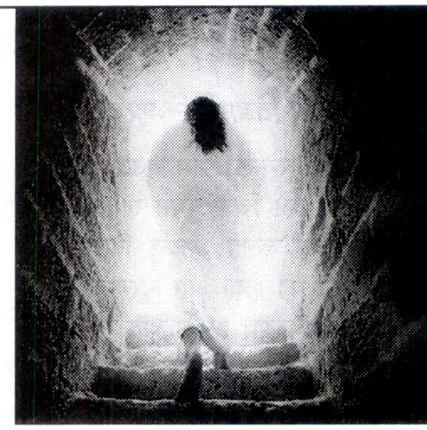

ऐ दुनिया के लोगों ! मैं ईश्वर नहीं हूँ, बनाया गया हूं।
मैं सर्वव्यापक- निराकार, अजन्मा, न जन्म लेता न मरता कभी मैं।
मैं विधाता और पालन करता, सारी सृष्टि का मालिक।
नादान लोगों ने घड़-घड़ के मेरी मूरत बनाई, मंदिर में बैठाया,
और उसमें प्राण प्रतिष्ठा भी कराई, भोग भी लगाया, दीपक भी जलाया।
घंटी भी बजाई, चंवर भी ढुलाया, नगाड़ा भी बजाया, मुझे खुश करने छप्पन भोग भी लगाया।
कपड़े-जेवर भी पहनाएं और एक मन्दिर में बैठा के माला पहना के,
ताला लगा के बन्दी बनाया और समय-समय पर दर्शन कराके,
रूपये-पैसे-फल-मिठाई पाकर मेरे को केवल दर्शक बना के पाखंड रचाया।
मेरे दरबार में कोई कमी नहीं है, फिर भी ये पेटू मेरे नाम से लूटते हैं सबको।
मैं तो हूं सबके मन मन्दिर में, योग साधना के बिना मुझे कोई जान न पाया।
मैं तो न मूर्ति में, न चित्र में, न समाधि में, न मस्जिद में, न गिरजा में, ना गुरुद्वारे में, न तीर्थ- नदी -पहाड़ों में।
मेरे नाम से लूटने वालों, ये धन्धा छोड़ो, सत्य को जानो, अपने को जानो,
लोगों को लूटना छोड़ो, पाखण्ड छोड़ो, इसी में छुपी है तुम्हारी भलाई।।

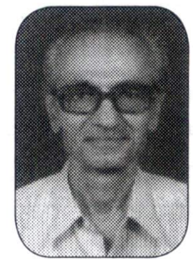

लोग गणेश जी को दूध पिलाते हैं, भेरूजी को शराब पिलाते हैं, शालासर-पुठरासर, हनुमानजी को चूरमें का भोग लगाते हैं। यानि अलग-अलग देवी देवताओं के भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रसाद का भोग लगता है। लेकिन मैंने तो सबको एक ही ईश्वर का रूप मान के उन्हीं के मुख से अपने सच्चे स्वरूप का वर्णन कहलवाया है। जन्म-जन्म के संस्कार बिना विवेक जागे मिट नहीं सकते।

नरसिंह सोनी आर्य
डागा सेठिया मोहल्ला
बीकानेर
चलभाष- ९२५२६१८२६४

सुबह का भूला

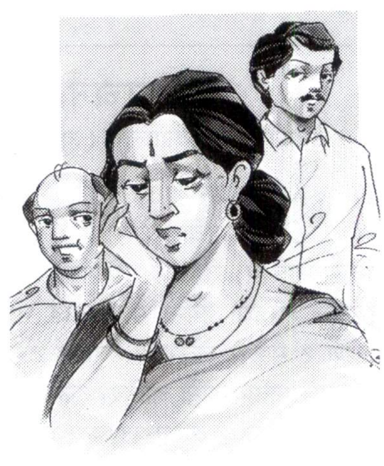

जनरल मैनेजर कंसलजी के पास कालोनी के महिला क्लब की सचिव जयंती का फोन पर अनुरोध 'सर माँ की सेवा करने वाले कुछ सपूतों का सम्मान समारोह है। आप मुख्य अतिथि के तौर पर पधारिएगा कंसलजी निःशब्द कुछ ठहर कर बोले- 'मैडम दो दिन बाद फोन करना, तभी शायद स्वीकृति दे पाऊंगा। सेक्रेटरी को तत्काल में गांव के लिए रेल टिकट का प्रबंधन करने को कहा- नेत्र विशेषज्ञ से ऑपरेशन के लिए समय लिया, गांव जाकर बूढ़ी मां को सादर लेकर आए, मां के मोतिया बिन्द का आपरेशन करवाया, पत्नी से मंथन कर माँ को अब साथ ही रखने का निर्णय लिया, फिर जयंती को स्वीकृति दी। समारोह में उद्बोधन में स्वयं ही बोले- 'जयंती का फोन आने पर मैं स्वयं को अयोग्य समझ रहा था। गलतियां सुधारी, माँ को गांव में अकेले छोड़ने वाले मुझ कुपुत्र को सुपुत्रों का सम्मान करने का कोई अधिकार नहीं था, सुपुत्र बनने में तो मुझे बरसों लगेंगे, पर कुपुत्र का कलंक तो धोना ही था, थैंक्यू जयंती सुबह के भूले को राह दिखाने के लिए 'दर्शक दीर्घा में कंसलजी का पूरा परिवार अपनी भीगी पलकें पोंछ रहा था।

तीर्थयात्रा

''मधुर- वैष्णोदेवी की यात्रा की यात्रा कैसी रही?'' ''कैंसिल कर दिया प्रोग्राम, कुछ पुरानी गलतियां सुधारी'', 'कैसे? दोनों बच्चों को एक ही कमरे में एडजस्ट किया। मां को गैरेज से कमरे में लाया, उनका टूटा चश्मा ठीक करवाया, मोटे अक्षरों वाली गीता, रामायण ला कर दी। हम पति-पत्नी ने निर्णय लिया कि माँ को बासी खाना नहीं देंगे। दोनों समय दूध-फल देंगे। ब्लड प्रेशर की दवा समय पर लाकर देंगे। सुबह-शाम की चाय मां के कमरे में सब साथ ही पीएंगे। बस ऐसी ही कुछ गलतियां सुधार ली।' सच्ची तीर्थयात्रा करने के लिए तुम्हें सलाम।'

दिलीप भाटिया,
रावतभाटा
व्हाया कोटा, (राज.)
चलभाष- ९४६१५९१४९८

वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ तकनीकी ज्ञान भी ले रहे हैं विद्यार्थी

देशभर के ३२ विद्यार्थी निःशुल्क ले रहे संस्कृति, नैतिक मूल्य तथा तकनीकी की शिक्षा, संस्कृत पर शोध के लिए फ्रांस से निमन्त्रण

वेद योग गुरुकुल। नाम सुनते ही प्राचीन शिक्षा का चित्र घूमने लगता है, जहां सुबह जल्दी उठकर नित्य कर्म, गुरुजन की सेवा और गुरुकुल की दैनिक व्यवस्था। इसके बाद गुरु से वेद, संस्कृति के साथ नैतिक और व्यवहारिक शिक्षा। यह सब कुछ आज भी हो रहा है। धोती-कुर्ता और सिर पर चाणक्य की तरह शिखा धारण किए विद्यार्थी। वेद मन्त्रों के उच्चारण के बाद कम्प्यूटर प्रयोगशाला में तकनीकी ज्ञान। देशभर के ३२ विद्यार्थी अपने घर से कोसों दूर इस गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

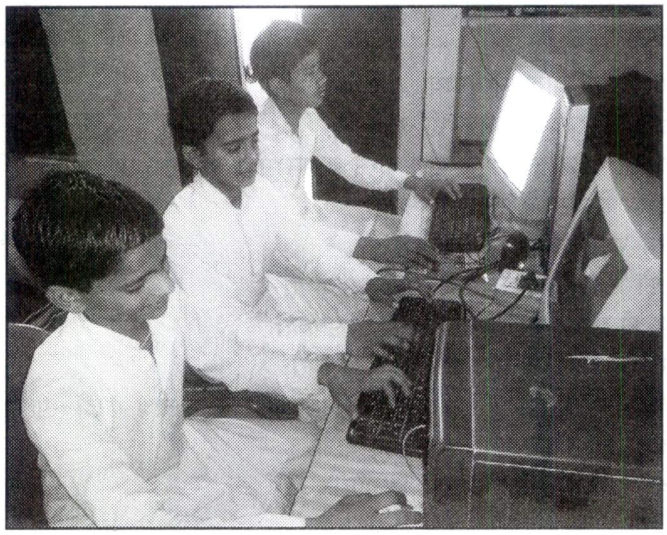

हम बात कर रहे हैं जिला मुख्यालय से २५ किमी दूर जावर से सटे ग्राम केहलारी स्थित वेद योग गुरुकुल की। यहां छठवीं से स्नातक के विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के साथ वैदिक मन्त्रों में समाहित सांस्कृतिक मूल्यों का ज्ञान कराया जा रहा है। प्रतिदिन वैदिक से साथ लौकिक ज्ञान की शिक्षा दी जा रही है। रविवार के दिन सभी विद्यार्थी आपस में देश के प्रमुख मुद्दों पर चर्चा करते हैं। तेजी से बदल रही तकनीकी शिक्षा से रूबरू कराने के लिए कम्प्यूटर का ज्ञान भी कराया जा रहा है। संस्थापक आचार्य सर्वेश सिद्धांताचार्य ने बताया गुरुकुल को महर्षि दयानन्द संस्कृति वि.वि. रोहतक (हरियाणा) से मान्यता प्राप्त है। गुरुकुल का संचालन आर्य समाज ट्रस्ट तथा समाजसेवियों की मदद से हो रहा है।

गुरुकुल से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर देशभर में नैतिक मूल्यों के साथ संस्कृति का डंका बजा रहे हैं। विदिशा जिले के ग्राम वर्धा के जितेन्द्र आर्य पिता आशाराम धाकड़ ने गुरुकुल से निकलने के बाद राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान भोपाल से बी.ए. किया। इसके बाद जेएनयू की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर एम.ए. किया। फिलहाल वे एमफिल कर रहे हैं। वि.वि. अनुदान आयोग की राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण करने पर उन्हें जूनियर फैलोशिप के लिए २५ हजार रुपए प्रति माह मिल रहे हैं। यह पांच साल का कोर्स है। जितेन्द्र अ.भा.वि.प. के सदस्य रहते हुए २०१५ में काउंसलर पद के लिए निर्विरोध निर्वाचित होने वाले पहले छात्र हैं। जितेन्द्र को फ्रांस के लियोन के जिन माउलीन वि.वि. से संस्कृत पर शोध हेतु निमन्त्रण मिला है। वे यूरोपियन यूनियन के सदस्य देशों में भ्रमण कर शोध करेंगे। एक अन्य छात्र अनिल दवे भी जे.एन.यू. दिल्ली में पी.एच.डी. कर रहे हैं। वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की जे.एन.यू. इकाई के संयुक्त सचिव भी हैं।

यह भी जानें

- इस गुरुकुल की स्थापना २७ अप्रैल २००६ को सिवनी जिले के भूमाटोला गांव में की गई थी। कुछ परेशानियों के चलते २०१० में यह म.प्र. के खण्डवा जिले के केहलारी गांव में स्थापित किया गया।
- तड़के ५ बजे योग और प्राणायाम शुरू होता है। दिनचर्या के साथ वेद- संस्कृति, खेती- बागवानी और गो-पालन की भी शिक्षा।
- आर्य समाज के देशभर में १५ हजार विद्यालय हैं म.प्र. में मात्र खण्डवा और होशंगाबाद जिले में ही गत अनेक वर्षों से संचालित हैं।
- गुरुकुल से निकले विद्यार्थी समय-समय पर आर्थिक मदद कर अध्ययनरत विद्यार्थियों से ज्ञान साझा करने आते हैं। ■

प्रवेश सूचना

वेदयोग महाविद्यालय (गुरुकुल)

देवयोग गुरुकुल संस्थान द्वारा संचालित-वेदयोग महाविद्यालय जो शास्त्री (बी.ए.) से आचार्य (एम.ए.) पर्यन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, रोहतक हरियाणा से सम्बद्ध है। कक्षा तीसरी से लेकर बारहवीं पर्यन्त म.प्र. बोर्ड भोपाल से सम्बद्धता प्राप्त है। प्रवेश १ मई से लेकर १५ जुलाई तक, विद्यार्थी स्वस्थ, आज्ञाकारी अनुशासनप्रिय होना चाहिए। आंशिक विकलांग छात्र भी प्रवेश ले सकते हैं। यह गुरुकुल खण्डवा जिले में जावर-मून्दी-पुनासा मार्ग पर खण्डवा से २० कि.मी. दूर केहलारी ग्राम के निकट हरे-भरे वृक्षों एवं शान्त क्षेत्र में स्थित है।

सम्पर्क- प्राचार्य- सर्वेश सिद्धान्ताचार्य

चलभाष- ९१६५१६८१५८, ९१७९१८३८३३

वेब साईड-www. vedyoggurukul.in

ई-मेल- vedyoggurukul@gmail.com

आधुनिक यमदूत

त्रेता और द्वापर में यमदूत
भैंसे पर चढ़ कर आते थे।
यमराज के आदेशानुसार यथा समय
प्राणियों के प्राण हर ले जाते थे।

तब यमदूतों में भी एक मर्यादा
एक शालीनता होती थी,
देहधारियों को भी कहने-सुनने
की स्वाधीनता होती थी।

सावित्री, यमराज से अनुनय करके
अपना सुहाग बचा लाई थी,
अपनी विनयशीलता एवं तर्क से
सत्यवान के प्राण छुड़ा लाई थी।

कलियुग में आमूलचूल परिवर्तन
अवश्यम्भावी है।
जीवन के हर क्षेत्र में अब
कल (मशीन) हावी है।

अब मनुष्य आपरेशन से जन्म लेता
और बिजली की भट्टी में जलता है,
जीवन भर उसका कोई भी काम
बिना मशीन के नहीं चलता है।

यमराज के साम्राज्य का भी
आधुनिकीकरण हो गया है
बूढ़े भैंसे का स्थान अब
धड़धड़ाते ट्रकों ने ले लिया है।

यमदूतों के नए रूप में ट्रक चालक
भारी भरकम ट्रकों में आते हैं,
अपनी राह चलते बेखबर प्राणी को
रौंदते कुचलते निकल जाते हैं।

चलता-फिरता हंसता बोलता व्यक्ति
पल भर में लाश बन जाता है।
सड़क का सीना एक और निर्दोष के
खून से सन जाता है।

हर आदमी हर वक्त भयभीत रहता है
कि न जान आज किसकी बारी हो।
किसकी घात में दौड़ी आ रही
यमराज की यह नई सवारी हो।
कहलाते लोक वाहन मगर
परलोक वाहक का काम करते हैं
न जाने कितने अभागे प्रतिदिन
इनके पहियों तले दब कर मरते हैं।

इनकी करतूतों ने मृत्यु को भी
गरिमाहीन और शर्मसार किया है,
अनेकों उभरती प्रतिभाओं का,
अमूल्य जीवन असमय छीन लिया है।

यम का मारा तो आई मौत मरता है
इनसे तो स्वयं यमराज भी डरता है।
पुलिस और प्रशासन देखते रहते बन तमाशाई
जब यह परलोक रथ नित्य ताण्डव करता है।

-ओमप्रकाश बजाज, इंदौर (म.प्र.)

प्रतिक्रिया

यमराज, यमदूत तथा सावित्री द्वारा
अपने पति के प्राण लौटा लाना।
सब दन्त कथाएं हैं,
सच्चाई से कोसों दूर है।
परमात्मा का एक नाम यम भी है।
व्यक्ति को कर्म करने हेतु रखा स्वतन्त्र है।
नहीं करता अपने नियमों में,
कोई परिवर्तन है।
वैदिक संसार ने माह फरवरी-२०१७ में
प्रकाशित किया था।
वैतरणी की वास्तविकता जानें।
अज्ञानता के वशीभूत हो,
वर्तमान का मानव कर रहा,
उलट-पुलट कार्य,
स्वयं के साथ औरों की
हानि कर रहा,
इसमें दोष नहीं कुछ कलियुग का,
समय प्रत्येक समान है।
हो चाहे त्रेता, द्वापर, सतयुग या
कलियुग या फिर रविवार,
शनिवार, बुधवार या जुम्मा
या फिर जनवरी, फरवरी,
चाहे जेठ वैशाख,
देता वेद सन्देश हमें

सं गच्छध्वं सं वदध्वं
सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे
संजनाना उपासने।।

प्रेम से मिलकर चलो
बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों के भांति तुम
कर्त्तव्य के मानी बनो।।

-सुखदेव शर्मा, इंदौर (म.प्र.)

समर्पण करो स्वीकार

मेरा समर्पण करो स्वीकार!
लगा दो अब तो नैया पार।।

किए पाप को न माफ करो,
जो चाहो तुम इन्साफ करो।
मेरी करनी, मेरी भरनी-
पर सिर पर अपना हाथ धरो।।

बन जाओ मेरे खेवन हार।
लगा दो अब तो नैया पार।।

नेह, गेह का मोह न छूटा,
बना-बनाया हर सपना टूटा।।
वक्त पड़ा कोई काम न आया-
छल से भरा हर रिश्ता फूटा।।

देखा जगत् का झूठा प्यार।
लगा दो अब तो नैया पार।।

उलझा रहा सांसारिक रण में,
डूबा नाहीं प्रभु स्मरण में।
खोया-पाया हिसाब लगाया,
जीवन जिया मरण-मरण में।।

अब संभालो मुझे करतार।
लगा दो अब तो नैया पार।।

काम, क्रोध के अंगार पीए,
रोग, शोक ये उपहार लिए।
मन मेरा उजला हो न सका,
तन के लाखों श्रृंगार किए।

अब 'चैतन्य' तुम्हारे द्वार।
लगा दो अब तो नैया पार।।

महात्मा चैतन्य मुनि
महादेव, सुन्दर नगर,
जिला-मण्डी,
हिमाचल प्रदेश

सतर्क-सचेत

आज के हालात को देखते हुए
यूं तो हर कदम पर सचेत रहने की जरूरत है।
किसी भी सामान्य कार्य में भी कब कैसे कोई
आपको बेवकूफ बना कर ठग ले कहना कठिन है।
मोबाइल फोन आज हर किसी के पास होता है,
आज बिना मोबाइल के किसी का काम नहीं चलता।
वही मोबाइल आज धोखाधड़ी का एक सरल सुलभ
माध्यम बन कर रह गया है।

सीधे-सीधे एस.एम.एस. आते हैं, स्वयं को बैंक से बताते हैं
आपसे आपके बैंक खाते, ए.टी.एम. कार्ड का विवरण
उसका पिन नम्बर चालाकी से पता कर लेते हैं
और पलक झपकते, आपके खाते से रुपये निकल जाते हैं,
स्मार्ट फोन पर, फेसबुक पर या वाट्स-एप आदि पर
धोखाधड़ी के नए से नए तरीके प्रयोग में लाए जाते हैं,
और सीधे-सादे भोले-भाले पुरुष-महिला ठगे जाते हैं,
ये ठगी करने वाले अपने काम में इतने माहिर होते हैं
कि खास सयाने समझदार भी इनके झांसे में आ जाते हैं,
सतर्क-सचेत रहने की आज कुछ ज्यादा ही जरूरत है।

प्रतिक्रिया

ये सीधे-सादे भोले-भाले नहीं है
जो मुफ्त का माल पाने की लालसा रखे,
वो सीधे-सादे, भोले-भाले नहीं होते,
ऐसे लोग लोभी-लालची कहे जाते हैं
और ऐसे ही लोग धूर्तों के शिकार बनते हैं
हम स्वयं पुरुषार्थी ईमानदार बन जाएं।
मुफ्त के माल की अभिलाषा छोड़ दे
यही सबसे ज्यादा सतर्कता है
और यही मानवता भी है,
ऐसो का सहाय परमपिता परमात्मा है
कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। **- सुखदेव शर्मा**

अकारण हानि

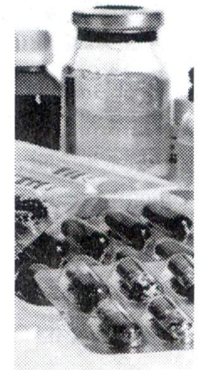

ऐसा अक्सर होता है कि
डॉक्टर १ गोली रोज के हिसाब से
३ दिन के लिए ३ गोली लिखता है।
दवाई की दुकान वाला १० या १५ गोली का
पूरा स्ट्रिप थमाने का आग्रह करता है।
स्ट्रिप से काट कर ३ गोली देने में
आनाकानी ही नहीं साफ मना करता है।
मजबूरी में मरीज पूरा स्ट्रिप ले जाता है।
न केवल अनावश्यक दाम देने पड़ते हैं,
बल्कि महंगी दवाइयां बेकार जाती है।
खांसी का सीरप या कोई टॉनिक
बड़े पैक में ही सामान्यतया बेचा जाता है।
२-४ दिन में मात्र कुछ चम्मच पीने के बाद
उठा कर एक किनारे रख दिया जाता है......
हर घर में ये बची हुई ढेरों कीमती दवाइयां
कचरे में पड़ी-पड़ी धूल खाती रहती है।
एक अनुमान के अनुसार करोड़ों रुपए की
दवाइयां इस प्रकार बरबाद होती रहती है।
हमारे देश के कर्णधारों को सोचना जरूरी है।

झुग्गी-झोपड़ी

क्या कभी हमारे नगरों महानगरों में
यह झुग्गी-झोपड़ी की समस्या समाप्त होगी?
लगता तो नहीं कि निकट भविष्य में ऐसा हो पाए।
रोजी-रोटी की तलाश में गांव-देहात से लोग
शहरों की ओर निरन्तर आते रहेंगे।
फिर परिवार के लिए एक छत जुटाने हेतु
यहां-वहां, जहां-तहां जैसे-जैसे टीन-टप्पर
डाल कर एक झुग्गी की जुगाड़ करते रहेगें।
अब तो इसमें भी बिचौलिये आ गए हैं,
जो पगड़ी ले कर झुग्गी का जुगाड़ कर देते हैं।
अच्छा खासा कारोबार बन चुका है यह धंधा!
अब तो तथाकथित छुटभैया नेताओं से यह
आश्वासन भी मिल जाता है कि देर सवेर
वोटों के लालच में शहर की सफाई के नाम पर
झोपड़ियां गिराने के क्रम में बदले में सरकारी
छोटा-मोटा मकान भी मिल जाएगा।
जिसमें पानी, बिजली, शौचालय भी होगा!
तब भला कैसे समाप्त होगा यह सिलसिला!

ओमप्रकाश बजाज
कालिंदी कुंज,
पिपलिया हाना,
इंदौर
चलभाष-
९८२६४-९६९७५

सरयूबाग अयोध्या में बनेगा ऋग्वेदादिभाष्य स्मारक

कर्मयोगी आनन्दकुमार आर्य ने मो. इरफान अंसारी के साथ किया भूमि क्रय का इकरारनामा, दानदाताओं के लिए पुण्यार्जन का सुनहरा अवसर

स्वामी दयानन्द सरस्वती वेद पढ़ने का अधिकार, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा स्त्रियों आदि सभी को देते हैं। इस सम्बन्ध में यजुर्वेद का मन्त्र '**यथेमां वाचं कल्याणीं आवदानि जनेभ्यः...**' का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। चारों वेद के एकमात्र अंग्रेजी अनुवादक वैज्ञानिक संन्यासी स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती जी कहते हैं- वेद मानव मात्र के लिए हैं। जिन्हें 'अ', 'उ' और 'म्' तक बोलने या समझने अथवा सुनने की क्षमता परमात्मा ने दी है। उन सबके लिए वेद का ज्ञान है। स्वामी दयानन्द के समस्त सिद्धान्तों में वेद सर्वोपरि हैं। पं. युधिष्ठिर मीमांसक का कहना है कि '**स्वामी दयानन्द के समस्त साहित्य में या कार्यों में 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' तथा वेद भाष्य का कार्य सर्वश्रेष्ठ है।** यहां तक कि '**सत्यार्थ प्रकाश**' से भी अधिक महत्व वेद भाष्य का है।'

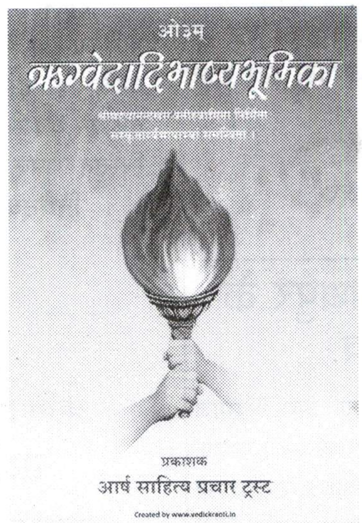

स्वामी दयानन्द भी अपने आर्य समाज के दस नियमों में कहते हैं- '**वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।** वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'

पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने अपने १९४९ ई. में प्रकाशित '**ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास**' में पृ. ९६ में लिखा- .....'**ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका**'' ग्रन्थ की रचना की। यह भूमिका चारों वेदों के करिष्यमाण भाष्यों की है, यह इनके नाम से प्रगट है। यजुर्वेद भाष्य में ऋषि ने लिखा है- ''**और सब विषय भूमिका में प्रकट कर दिया, यहां देख लेना, क्योंकि उक्त भूमिका चारों वेदों की एक ही है।**'' (यजुर्वेद भाष्य पृ. ८) ऋषि ने जिस समय भूमिका का प्रारम्भ किया, उस समय वे अयोध्या नगर में विराजमान थे। पं. देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय द्वारा संग्रहीत जीवन चरित्र में पृ. ३७५ पर लिखा है- ''भाद्र कृष्ण १४ सं. १९३३ वि. अर्थात् १८ अगस्त सन् १८७६ को स्वामी जी अयोध्या पहुंचकर सरयूबाग में चौधरी गुरुचरण लाल के मन्दिर में उतरे। **अयोध्या में भाद्र शुक्ल प्रतिपदा सं. १९३३ अर्थात् २० अगस्त सन् १९७६ को ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का लिखना प्रारम्भ हुआ।**'' इसी प्रकार आर्य समाज नयाबांस दिल्ली से प्रकाशित पं. लेखराम कृत महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र में भी यही लिखा है। **ऋषि ने मार्गशीर्ष शु. १५ सं. १९३३ वि. को स्वीय वेदभाष्य के प्रचारार्थ एक विज्ञापन प्रकाशित किया था- 'सम्वत् १९३३ वि. मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णमासी (१ दिसम्बर १८७६) पर्यन्त दस हजार श्लोकों (का) प्रमाण भाष्य बन गया है।' इस प्रकार स्वामीजी ने २० अगस्त १८७६ से लिखना प्रारम्भ किया और १ दिसम्बर १८७६ को ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पूरी की।**

आर्य समाज टाण्डा- अम्बेडकर नगर का शताब्दोत्तर रजय जयन्ती समारोह १० नवम्बर से १४ नवम्बर २०१६ को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया। इस समारोह के '**लोगों**' में अयोध्या का वर्णन देखकर राजस्थान के माननीय लोकायुक्त आर्य न्यायमूर्ति श्री सज्जनसिंह कोठारी सपत्नीक सरयूबाग गए और उन्होंने टाण्डा आकर उस स्थान को खरीदकर स्मारक बनाने की बात कही।

सरयूबाग स्थित गुरुचरणलाल के वंशज रहते हैं। उनके मन्दिर के ठीक सामने संयोग से भूमि विक्रय हेतु आबादी (धारा १४३) के अन्तर्गत मो. इरफान अंसारी की है। इस भूमि के पास एक गर्ल्स डिग्री कॉलेज तथा दो इण्टर कॉलेज संचालित हैं। मेडिकल कॉलेज का बनना प्रस्तावित है। यह परिक्रमा पथ के साथ संलग्न स्थित है। श्री अंसारी जी के साथ श्री आनन्द कुमार आर्य, पं. दीनानाथ शास्त्री (अमेठी), डॉ. नागेन्द्र कुमार शास्त्री (गुरुकुल अयोध्या), श्री हिमांशु त्रिपाठी (प्रधान, आर्य समाज फैजाबाद), परशुराम पाण्डेय (सरयूबाग अयोध्या), आनन्दकुमार चौधरी एडवोकेट (लखनऊ) आदि ने निगोशिएसन के उपरांत तीस हजार (३०,०००) वर्गफुट जमीन क्रय हेतु मूल्य का निर्धारण किया जो वास्तविक मूल्य से काफी कम पर मिल रही है। १ करोड़ १२ लाख भूमि का मूल्य- रजिस्ट्री तथा बाउण्ड्रीवाल एवं कार्यालय के निर्माणार्थ प्रथम दृष्टया डेढ़ करोड़ रुपए की आवश्यकता है।

आर्यजनों! सरयूबाग अयोध्या की यह भूमि ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य की जन्मभूमि है। ऋषि से सम्बन्धित समस्त स्थलों से अधिक महत्व की है। न जाने अभी तक किसी आर्य मनीषी की दृष्टि यहां क्यों नहीं पड़ी? यदि इस समय क्रय नहीं किया जाता है तो भविष्य में भूमि नहीं मिल पाएगी तथा आने वाला इतिहास वर्तमान सभी आर्यों को माफ नहीं करेगा।

इस भूमि के क्रय हेतु मो. इरफान अंसारी के साथ गुरुकुल अयोध्या में ऋषि दयानन्द जन्म दिवस के अवसर पर दिनांक ११ फरवरी २०१७ को एग्रीमेन्ट आनन्दकुमार आर्य ने एक लाख एक हजार रुपए देकर पं. दीनानाथ शास्त्री, नागेन्द्र शास्त्री, हिमांशु त्रिपाठी एडवोकेट, सत्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक (बाराबांकी) की उपस्थिति में कराया है।

अस्तु, यह जहां मर्यादा पुरुषोत्तम आर्य राम की जन्मभूमि है वहीं सरयूबाग अयोध्या ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य की जन्मभूमि है। आइए, हम सभी देश विदेश के दानी आर्यजन इस महती कार्य में अधिक से अधिक '**शत् हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सँकिर**' की पवित्र भावना से दान देकर १.५ करोड़ की प्रारम्भिक राशि की यथाशीघ्र पूर्ति करें और यश के भागी बनें।

सम्पर्क सूत्र- आनन्द कुमार आर्य, प्रबन्धक, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, अम्बेडकर नगर, **चलभाष**- ९३३१८६६६१८,
ई-मेल-anandkumararya75@gmail.com

वैदिक यज्ञ- सत्संग-वार्षिकोत्सव

दिनांक- १३ से १६ जून २०१७

आर्य समाज गोमाना, जिला- प्रतापगढ़, (राज.) का वार्षिकोत्सव तथा वैदिक यज्ञ सत्संग हर्षोल्लास से आयोजित किया जा रहा है। समस्त धर्मनिष्ठजन सादर आमंत्रित हैं। **विशेष सूचना- प्रातःकाल यज्ञ एवं वेदोपदेश गोमाना में तथा सायंकालीन भजन-उपदेश सत्र छोटी सादड़ी में सम्पन्न होगा।**

आमंत्रित विद्वान- सुश्री अंजलि आर्या,

सम्पर्क- गौरीशंकर पाटीदार, ७५९७१७५४९७

आर्य समाज- सरदारपुरा, जोधपुर के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न

आर्य समाज-सरदारपुरा, जोधपुर एवं महिला आर्य समाज सरदारपुरा के द्विवार्षिक चुनाव दिनांक १६.०४.२०१७ को आर्य समाज भवन सरदारपुरा जोधपुर में समाज के संरक्षक एवं वयोवृद्ध सदस्य श्री महेन्द्रसिंह जी चौहान की अध्यक्षता में सम्पन्न होकर नवीन कार्यकारिणी का गठन इस प्रकार किया गया।

संरक्षक- श्री हरेन्द्र कुमार जी आर्य, श्री महेन्द्र सिंह चौहान,

प्रधान- श्री एल.पी. वर्मा,

उप प्रधान-श्री पदमसिंह जी चौधरी, श्री राजेश जी गोयल,

मन्त्री- श्री मदनलाल गहलोत,

उपमन्त्री- श्री चन्द्रप्रकाश आर्य,

कोषाध्यक्ष- श्री लक्ष्मणसिंह आर्य,

कार्यालय मन्त्री एवं पुस्तकालयाध्यक्ष- श्री ओमप्रकाश आसेरी,

अंकेक्षक- श्री श्याम जी जोशी,

आर्यवीर दल अधिष्ठाता- श्री राधेश्याम आर्य,

कार्यकारिणी सदस्य- श्री राधेश्याम टाक, श्री राजेन्द्र शर्मा, श्री करतारसिंह बत्रा, श्री संजय गुप्ता, श्री मोहन लिम्बा, श्री रामचन्द्र लाल, श्री रामस्वरूप प्रजापत।

महिला आर्य समाज सरदारपुरा

संरक्षक- श्रीमती शोभा आसेरी,

प्रधान- श्रीमती प्रमोद कुमार गुप्ता,

उपप्रधान- श्रीमती पुष्पा गुप्ता,

मन्त्री- श्रीमती शारदा चारण (आर्य),

उपमन्त्री- श्रीमती पुष्पा वर्मा,

कोषाध्यक्ष- श्रीमती संयुक्ता गुप्ता।

कार्यकारिणी सदस्य- श्रीमती कमला आर्य, श्रीमती रेखा आसेरी, श्रीमती राजकुमारी बत्रा।

आर्य परिवार युवक-युवति वैवाहिक परिचय सम्मेलन- दिनांक- ९ जुलाई २०१७

आयोजन स्थल- आर्यसमाज, बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयोजन में उपरोक्त १८वां आयोजन होने जा रहा है। आर्यजनों से अनुरोध है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यंत आवश्यक इस आयोजन का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करें तथा तन,मन,धन से सहयोग कर आयोजन को सफल बनाने में सहयोग करें। विस्तृत जानकारी हेतु-

निवेदक एवं सम्पर्क- अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक
चलभाष- ९४१४१८७४२८
एस.पी. सिंह, संयोजक दिल्ली प्रदेश
चलभाष- ९५४००४०३२४

ऋषि मिशन न्यास के प्रथम वर्ष पूर्ण करने पर

एक अनुपम उपहार

साधकों के बार-बार आग्रह व प्रार्थना को ध्यान में रखते हुए दिनांक २०/०५/२०१७ सेस्वामी विश्वङ्ग जी परिव्राजक द्वारा उपदेशित ऑडियो व विडियो वॉट्सएप पर प्रसारित की जायेगी । स्वामी विश्वङ्ग जी एक उच्च कोटी के साधक है व वर्षों से योगदर्शन का गहन स्वाध्याय,अध्ययन व अध्यापन वा साधना कर रहे हैं। आप साधना का अवश्य ही लाभ लें। आप निम्न ग्रुप में अवश्य ही सम्मिलित हों। **नोट-** यह वॉट्सप ग्रुप पूर्णतः मौन है। निम्न नंबर पर सम्पर्क कर आप इसमें सम्मिलित हो सकते हैं-०९३१४३९४४२१, ९३१४३९४४२१

विश्वकर्मा कुल गौरव

ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य प्रधान चुने गए

आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा का साधारण अधिवेशन टिटौली स्थित स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ जिसमें ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य को सर्वसम्मति से आगामी तीन वर्ष के लिए प्रधान चुना गया। वैदिक संसार परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभ कामनाएं। आप आर्यावर्त्त मिशन नाम से वाट्सएप तथा फेसबुक पर वैदिक धर्म सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार का क्रान्तिकारी अभियान चलाए हुए हैं। पाठकगण भी ९४६८१६५९४६, ९३५४८४०४५४ पर सम्पर्क कर जुड़ें तथा लाभ प्राप्त करें।

आर्य समाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

हरियाणा प्रान्त के रेवाड़ी जिले की सबसे पुरानी एवं ऐतिहासिक आर्य समाज (नई सब्जी मण्डी) का दो दिवसीय उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रथम दिन शनिवार को प्रातः ८ बजे आर्य समाज मन्दिर में स्वामी जीवानन्द जी नैष्ठिक संचालक गोशाला नागलिया रणमोख के ब्रह्मत्व में हवन, यज्ञ किया गया, जिसमें आर्य समाज के पदाधिकारी श्री अमरसिंह सैनी व श्री प्रभुदयाल सैनी ने सपरिवार अपने पुत्र एवं पुत्रवधुओं सहित यज्ञमान बन पवित्र यज्ञ में भाग लिया।

भोपाल से श्री जगदीशप्रसाद जी आर्य सेवा निवृत्त अपर वन संरक्षक मध्यप्रदेश, पूर्व जज श्री इन्द्रसिंह जी बोहरा, स्वामी ब्रह्मानन्दजी वयोवृद्ध संन्यासी महेन्द्रगढ़, स्वामी श्रद्धानन्द जी, प्रो. ओमकुमार आर्य, श्री नरदेवजी भरतपुर, श्री सत्यपाल जी आर्य प्रतिनिधि सभा रोहतक, युवा संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्दजी गुरुकुल मुजफ्फरनगर, स्वामी एकान्त जी, मधुर भजन गायिका कु. अंजलि आर्या, महात्मा यशदेव जी आश्रम खोल आदि के मधुर उपदेश एवं भजनों का श्रोताओं द्वारा रसपान किया गया। दोपहर एवं रात्रि सभा में काफी श्रोता उपस्थित रहे। दूसरे दिन पुनः स्वामी जीवानन्दजी नैष्ठिक के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया, जिसमें आर्य समाज के युवा उत्साही कार्यकर्ता श्री लोकेश कुमार सपत्नीक यज्ञमान बने। आचार्य विजयपाल जी पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा रोहतक एवं संचालक गुरुकुल झज्जर, श्री विरजानन्दजी देवकरणी प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता, श्री एम.पी. गोयल प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी, श्री दिनेश कपूर अध्यक्ष भगतसिंह युवा बिग्रेड ने उपस्थित होकर उत्सव की शोभा बढ़ाई।

श्री एम.पी. गोयल ने सारगर्भित धार्मिक व्याख्यान दिया। दोपहर के समय भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष एवं पुरोधा श्री ओमप्रकाश जी ग्रोवर, लोकप्रिय विधायक श्री रणधीर सिंह जी कापड़ीवास जी उत्सव में उपस्थित रहे। श्री ओमप्रकाश जी ग्रोवर ने शाल ओढ़ा कर श्री रणधीर सिंह जी विधायक का स्वागत अभिनंदन किया। श्री कापड़ीवास ने महर्षि दयानन्द जी द्वारा किए गए समाज सुधार के कार्यों की प्रशंसा की। दो दिवसीय वार्षिक उत्सव में काफी संख्या में श्रोताओं ने भजन एवं उपदेश का आनन्द लिया तथा ऋषि लंगर में स्वादिष्ट भोजन प्रसाद ग्रहण किया। आर्य समाज के वयोवृद्ध संरक्षक श्री सुखराम आर्य, संरक्षक एवं प्रधान राव कुलदीप सिंह व श्री ईश्वरसिंह यादव का उत्सव को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा। मन्त्री श्री प्रभुदयाल ने अपना कार्य छोड़कर उत्सव को सफल बनाने में सहयोग किया। दूसरे दिन सायंकालीन सभा में उत्सव समाप्ति पर आर्य समाज के जुझारू प्रधान वैदिक संसार को अपनी रचनाओं से अलंकृत करने वाले प्रतिष्ठित साहित्यकार, जांगिड कुल गौरव श्री देशराज आर्य ने सभी श्रोताओं का अभिनन्दन एवं धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के पश्चात् वैदिक उद्घोषों द्वारा उत्सव का समापन किया गया। उत्सव सफल रहा।

वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता सम्पन्न

''वैदिक संसार'' वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता वर्ष २०१६ में कुल १००० विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसमें उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले २६६ विद्यार्थियों को मैडल एवं शेष विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ६८ विद्यार्थियों को गोल्ड मैडल, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले ७० विद्यार्थियों को सिल्वर मैडल, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले ५७ विद्यार्थियों को कांस्य मैडल एवं ७१ विद्यार्थियों को सांत्वना पुरस्कार के रूप में कांस्य मैडल दिए गए। इसमें कुल १५ विद्यालय के विद्यार्थी सम्मिलित थे। यह स्वाध्याय आधारित प्रतियोगिता है। विद्यार्थी स्वाध्याय करके घर से प्रश्नों के उत्तर लिखकर लाते हैं। **इस वर्ष २०१६ में वैदिक रश्मि पुरस्तक दी गई थी। प्रतियोगिता में रावतभाटा, कोटा, सिरोही, धार, हिंगोली के विद्यार्थी थे। वर्ष २०१७ में सत्यार्थ सुगन्ध पुस्तक दी जाएगी। प्रतियोगिता का शुभारम्भ जुलाई में होता है। - ओमप्रकाश आर्य,**

मन्त्री- आर्य समाज रावतभाटा, **चलभाष-** ९४६२३१३७९७

आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र- प्रवेश सूचना

आर्य समाज अपने स्थापना काल से ही सामाजिक रूढ़ियों, पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुड़मवाद पर कड़ा प्रहार करता रहा है, जिसके परिणामस्वरूप समाज में अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलते हैं। जहां तपस्वी विद्वानों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर भारतीय संस्कृति के आधार वेद का प्रचार-प्रसार करने में अपनी कोई लाभ-हानि नहीं देखी, वहीं गीत, भजन व उपदेश के माध्यम से **दादा बस्तीराम जी, चौधरी पृथ्वीसिंह बेधड़क जी, मंगल वैद्य जी, स्वामी भीष्म जी** जैसे अनेक भजनोपदेशकों ने अपनी जान हथेली पर रखकर वेद का प्रचार-प्रसार किया।

आचार्य देवव्रत जी महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश के मन में हमेशा से ही यह भाव रहा है कि गांव, देहात में वेद का प्रारम्भिक प्रचार भजनोपदेश के माध्यम से जितना कारगर हो सकता है उतना अन्य से नहीं। इसी भावना को मन में रखते हुए गुरुकुल कुरुक्षेत्र में '**आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र**' की स्थापना की गई। इस प्रशिक्षण केन्द्र पर विधिवत् प्रशिक्षण ०१ अप्रैल २०१७ से प्रारम्भ हो चुका है। जो भी प्रशिक्षण प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति है उसके आवास, प्रशिक्षण एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से निःशुल्क रहेगी। प्रशिक्षण के बाद गुरुकुल के माध्यम से ही उचित मानदेय पर अपनी सेवा भी प्रदान कर सकेंगे। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें-

निवेदक- कुलवंतसिंह सैनी, प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र

सम्पर्क सूत्र- नन्दकिशोर आर्य, संस्कृत प्राध्यापक

९४६६४ ३६२२०, ८६८९० ०१२२०

आर्य समाज खाचरौद द्वारा गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज खाचरौद, जिला- उज्जैन (म.प्र.) द्वारा गायत्री महायज्ञ तथा वेदोपदेश सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्म आर्य जगत् के उद्‌भट विद्वान पं. रामनिवास जी गुणग्राहक के ब्रह्मत्व में गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। गुणग्राहक जी तथा आर्य जगत् की प्रख्यात भजपनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या के उपदेशामृत वचनों तथा भजनों ने उपस्थित भद्रजनों का मन मोह लिया तथा उन्हें वैदिक सिद्धान्तों के गूढ़ रहस्यों से अवगत कराते हुए मानव जीवन में आवश्यक परिज्ञान करवाया गया।

दिनांक १३ से १५ मई तक सम्पन्न हुए इस आयोजन का संचालन श्री नन्दलालजी आर्य (सगीतरा) द्वारा किया गया। वैदिक संसार, इन्दौर द्वारा साहित्य का स्टॉल तथा प्रभात आयुर्वैदिक फार्मेसी संस्थान देवास द्वारा औषधियों का स्टॉल लगाया गया।

गुरुकुल-प्रवेश सूचना

मध्यप्रदेश के जनपद गुना शहर में (गुना से भोपाल जाने वाले मुख्य मार्ग पर) '**आर्षज्ञानज्योतिर्गुरुकुलम्** ' स्थापित हो गया है। वर्तमान में गुरुकुल में १० ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं। विद्यार्थियों को शासकीय परीक्षा दिलाने की व्यवस्था भी की हुई है। १९१७-१८ के सत्र हेतु मात्र १५ नए ब्रह्मचारियों को १ अप्रैल से ३१ मई २०१७ के मध्य प्रवेश देने का निर्णय लिया है। विद्यालय में उत्तम आवास, भोजन, दुग्ध, अध्यापन एवं कम्प्यूटर की समुचित व्यवस्था है। गुरुकुल परिसर में विद्यार्थियों एवं आचार्यों को परस्पर व्यवहार संस्कृत भाषा में करना अनिवार्य है। इच्छुक विद्यार्थी एवं अभिभावक शीघ्र सम्पर्क करें। प्रवेश की अर्हताएं निम्नलिखित हैं-

१- विद्यार्थी आर्ष विद्या को पढ़ने का इच्छुक हो।
२. विद्यार्थी ने न्यूनतम ८वीं कक्षा उत्तीर्ण की हो।
३. विद्यार्थी मानसिक एवं शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो।
४. आयु न्यूनतम १३वर्ष अधिकतम २०वर्ष हो।

नोट- आवास, भोजन, शिक्षण संस्था की तरफ से नि:शुल्क होंगे, अन्य व्यय विद्यार्थी को स्वयं वहन करना होगा। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

आर्षज्ञानज्योतिर्गुरुकुलम्

बिजलीघर के पास, बजरंगगढ़ बाईपास,
जनपद-गुना (म.प्र.)

चलभाष संख्या- ९१११०१९९४४, ९५८२१०४२६१

आर्य समाज हरनावदा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हरनावदा, जिला- सिहोर(म.प्र.) का वार्षिकोत्सव दिनांक ३ से ७ मई २०१७ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। श्री संजीव जी शास्त्री भोपाल के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ सम्पन्न हुआ तथा शास्त्री जी एवं आर्य जगत् की प्रख्यात भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से वेदवाणी की अमृत वर्षा तपती दोपहरी में हुई। संचालन श्री भारतसिंह जी आर्य शिक्षक द्वारा किया गया। वैदिक संसार द्वारा साहित्य का स्टाल लगाकर साहित्यिक सेवा की गई।

आर्यसमाज कोटद्वार में वैदिक संगोष्ठी

आर्यसमाज कोटद्वार (उत्तराखण्ड) के तत्त्वावधान में दि० २१ मई रविवार को सायं ४.३० से ६ बजे तक मासिक परिवार मिलन समारोह में वैदिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस बृहत् संगोष्ठी में सुमंगली यज्ञ व वेदप्रवचन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। समारोह में **वैदिक विद्वान् आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी (बिजनौर)** अपने उद्‌बोधन से वैदिक मार्गदर्शन प्रदान किए गए।

भामाशाह इन्द्रदेव गुलाटी द्वारा विभिन्न संस्थाओं को सहयोग/ दान दिया गया

फाल्गुन माह, सम्वत् - २०७३

नगर आर्य समाज- ५/४९१, लक्ष्मीनगर, बुलन्दशहर-	६००
हिन्दू सभावार्ता, नई दिल्ली-	१६५०
अर्जेन्ट प्रेस बुलन्दशहर-	५९०
दीप कम्प्यूटर्स, बुलन्दशहर-	३५०
महावीर कोरियर, बुलन्दशहर-	२६०
वैदिक संसार इन्दौर-	१००१
श्री श्याम खाटू मन्दिर, पंचशील नगर, बुलन्दशहर -	५०१
राष्ट्रीय कोहिनूर साप्ताहिक काली मन्दिर रोड एटा.-	२०००
अखिल भारत हिन्दू महासभा नई दिल्ली-	२५०
होली मिलन समारोह-	२००
कुल-	७४०२

चैत्र माह, सम्वत्- २०७४

स्वामी दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-	९००
राष्ट्रीय कोहिनूर, एटा-	२०००
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य जगत् नई दिल्ली-	२२००
वैदिक संसार, इन्दौर-	५०१
अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, नई दिल्ली-	५०१
हिन्दू सभा वार्ता नई दिल्ली-	१३५०
डी.ए.वी. इन्टर कॉलेज, बुलन्दशहर-	५०१
डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज, बुलन्दशहर-	५०१
कुल-	८४५४

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

दिनांक २१ मार्च से २० मई २०१७ तक

स्वैच्छिक अनुदान

गुजरात, जिला-साबरकांठा : आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी-वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड़।

जिला अहमदाबाद : श्रीमती रतनदेवी बंशीधर अग्रवाल ट्रस्ट-अहमदाबाद।

मध्यप्रदेश, जिला- रतलाम: आर्य समाज-रेलवे कॉलोनी, इन्दिरा नगर, रतलाम।

जिला-सिहोर: आर्य समाज- हरनावदा।

राजस्थान, जिला-जयपुर: श्री गंगाराम जी जांगिड-नेहा सेल्स कार्पोरेशन, माधव बिहारी का अहाता, जयपुर, श्री दर्शित जी जांगिड-पचार (कालवड)।

हरियाणा, जिला-रेवाड़ी: श्री नवदीप देशराज जी आर्य- सुदेन सुजुकी, रेवाड़ी, डॉ. रामफल प्रभातीलाल जी (ठेकेदार) शास्त्री, रेवाड़ी।

उत्तरप्रदेश, जिला- बुलन्द शहर: श्री इन्द्रदेव जी गुलाटी-बुलन्द शहर।

केन्द्र शासित प्रदेश दमण दीव: डॉ. श्रवण रामनारायण जी जांगिड-नानी दमण, श्री नारायणलाल मांगीलाल जी जांगिड-नानी दमण, श्री विनोदकुमार मालीराम जी शर्मा- नानी दमण, श्री अशोक कुमार बालूराम जी जांगिड- नानी दमण, श्री रमेशचन्द्र शिवनारायण जी जांगिड- नानी दमण, श्री बजरंगलाल सीताराम जी जांगिड-नानी दमण, श्री सांवरमल नन्दलाल जी जांगिड-नानी दमण।

आजीवन

केन्द्र शासित प्रदेश दमण-दीव: श्री जटाशंकर हनुमान सहाय जी शर्मा (पत्रकार)- नानी दमण, श्री कल्याण केशुराम जी शर्मा-नानी दमण, श्री किशोर कुमार गिरधारीलाल जी शर्मा-सोमनाथ, दमण।

गुजरात, जिला-बलसाड: श्री अशोक कुमार जवाहरलाल जी जांगिड- वापी, श्री ओमप्रकाश सांवरमल जी जांगिड-वापी, श्री दिलीप विष्णुदत्त जी शर्मा (अधिवक्ता)-वापी, श्री राधेश्याम रामलाल जी शर्मा-विद्याधाम इन्टरनेशनल स्कूल वापी।

राजस्थान, जिला-सीकर : श्री बजरंगलाल गणपतराम जी जांगिड-बरसिंहपुरा (खण्डेला)।

मध्यप्रदेश, जिला- ग्वालियर: श्री बालकृष्ण जी गुप्त से.नि. संयुक्त कलेक्टर-खेड़ापति कॉलोनी, ग्वालियर।

त्रैवार्षिक

पंजाब, जिला-बरनाला: श्री रामचन्द्र रूपचन्द्र जी आर्य-बरनाला।

छत्तीसगढ़, जिला-कांकेर: श्री नरेशकुमार जी कौशिक-कांकेर।

जिला-रायपुर: श्री विनीत जी शर्मा, सुपुत्र-श्री ए.डी. शर्मा- रायपुर।

उत्तरप्रदेश, जिला-आगरा: श्री अमरीश कुमार महेशचन्द्र जी लोहिया-फतेहाबाद।

राजस्थान, जिला-अलवर: श्री बोधनराम प्रहलादराम जी जांगिड-मुंडावर।

जिला-जयपुर: श्री भागीरथमल सुंडाराम जी जांगिड-हरमाड़ा।

जिला-प्रतापगढ़ : श्री मांगीलाल शंकरलाल जी प्रजापत- गोमाना।

जिला-चित्तौड़गढ़ : श्री रतनलाल सौभागमल जी राजौरा (अधिवक्ता)- निम्बाहेड़ा।

मध्यप्रदेश, जिला-सिहोर: श्री सिद्धूसिंह शेरसिंह जी आर्य-

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम- शंका-समाधान
लेखक- शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी
प्रकाशक- विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क दिल्ली- ११०००६ मूल्य- ८.०० पृष्ठ संख्या- ३२

शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र जी देहलवी की लघु पुस्तिका शंका समाधान के नाम से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भाषा में उर्दू की अमिट छाप है। भाव, भाषा एवं प्रश्नों के उत्तर सटीक है। बत्तीस प्रश्न हैं। उनके उत्तर भी सहज-सरल रूप में दिए हैं। यदा-कदा अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। एक-दो नमूने के साथ प्रश्नों के उत्तर भी साथ ही दिए जा रहे हैं। इससे पाठक सहज रूप से शंका समाधान को भली प्रकार हदङ्गम कर सकेंगे।

प्रश्न- कहते हैं कि दुर्बल व्यक्ति के आत्म-दर्शन नहीं हो सकता। क्या यह सत्य है?

उत्तर- बिलकुल ठीक है, दुर्बल पुरुष को अपने शरीर का ही पूर्ण दर्शन नहीं होता तो आत्म दर्शन कहां होगा? अपने आत्मा के दर्शन करने के लिए बड़ी योग्यता की आवश्यकता है, क्योंकि लाखों आदमी शरीर से बड़े बलवान होते हुए भी यह नहीं जानते कि हम क्या हैं? उन्होंने समझा हुआ है कि हम तो जितना भूत है-अग्नि, पानी वगैरा उसके..... हैं तो दुर्बलेन्द्रिय हैं कमजोर आदमी, वह इस प्रकार से यह कोशिश कर सकता है कि मैं क्या हूँ? मेरा आत्मा क्या है? उसको जान नहीं सकता। इसलिए जो कुछ लिखा है, वह ठीक लिखा हुआ है।

प्रश्न- क्या केवल जप करने का कोई लाभ है?

उत्तर- नहीं, बिलकुल नहीं। श्रद्धापूर्वक जप करें और तदानुकूल आचरण करें तभी कोई लाभ है, वैसे नहीं।

सभी प्रश्नों के उत्तर मार्मिक ढंग से दिए गए हैं। पाठकगण पढ़े एवं शंका समाधान के पूर्ण कलेवर को समझें। आपका ज्ञान बढ़ जाएगा। लेखक का आशीर्वाद है। हम उन्हीं के बताये मार्गों पर चल रहे हैं, चलते रहेंगे। इतिओम् ।

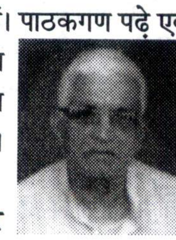

देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर

मेहतवाड़ा।

जिला-मन्दसौर: श्री गणेशराम जी-मन्दसौर

जिला-उज्जैन: श्री मुरलीदास मोहनदास जी बैरागी-सुवासा, श्री सत्यनारायण शान्तिलाल जी पांचाल-सुवासा, श्री सचिन महादेव जी पाटीदार-सुवासा, श्री रवीन्द्र कुमार कैलाशचन्द्र जी विश्वकर्मा-सुवासा, श्री रामप्रसाद बद्रीलाल जी पाटीदार-सुवासा, श्री कन्हैयालाल ईश्वरलाल जी ठन्ना-खाचरौद।

जिला-इन्दौर: श्री दिनेश रणछोड़ जी विश्वकर्मा- कदवाली बुजुर्ग।

जिला-देवास: श्री अशोक प्रभुदयाल जी चौधरी-अम्बिकापुर (डबलचौकी),

वार्षिक

मध्यप्रदेश, जिला-होशंगाबाद: श्री रामेश्वर जी आर्य (ढाका)-भैसदेही।

जिला-उज्जैन: श्री संजय श्यामलाल जी सगीतरा-खाचरौद।

जिला-नीमच: श्री जगदीशप्रसाद जी आर्य-गिरदौड़ा।

शेष आगामी अंक में...

ऐसे होते हैं आर्यः नाम से नहीं, कर्म से होते हैं आर्य

पिता के निधन पर मृत्युभोज प्रथा बंद कर सैनिक कल्याण कोष एवं सामाजिक संस्थाओं को दान कर दी राशि

सैलाना के राठौड़ परिवार में तीसरी पीढ़ी देख चुके ९५ वर्षीय प्यारचंद जी राठौड़ के निधन पर पुत्र बद्रीलाल जी व मदनलाल जी ने परिवारजनों की सहमति से मृत्यु भोज बंद करने का फैसला लिया। साथ ही समाज के वरिष्ठजनों को भी अवगत कराया। इस फैसले में सैलाना का राठौड़ समाज भी आगे आया।

बुजुर्ग प्यारचंद जी राठौड़ का निधन २८ अप्रैल को सैलाना, जिला-रतलाम (म.प्र.) में हुआ था। आपका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि द्वारा आचार्य धर्मवीर जी बामनिया तथा वरिष्ठ समाजसेवी भगवानदास जी अग्रवाल रतलाम द्वारा करवाया गया।इनकी धर्मपत्नी श्रीमती भागवंताबाई (९०) व दो पुत्र बद्रीलाल जी (६०) व मदनलाल जी राठौड़ (५५) है। १ मई को अस्थि संचय पश्चात् श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें स्वामी श्रद्धानंद जी पलवल-हरियाणा की उपस्थिति में मृत्यु मीमांसा पर प्रवचन रखे गए। स्वामीजी ने मृत्यु भोज को अनावश्यक व फिजूलखर्ची बताते कहा कि सक्षम व्यक्ति मृत्यु भोज करता है, लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग सामाजिक बंधनों के डर से मृत्यु भोज करता है। समय आ गया है कि मृत्यु भोज बंद होना चाहिए। वैदिक काल में मृत्यु भोज नहीं होता था तो अब क्यों होता है। मृत्यु भोज से अच्छा सामाजिक तौर पर किसी की मदद की जाए। श्रद्धांजलि सभा के बाद दिवंगत राठौड़ के दोनों पुत्रों के साथ पौत्र शेखर, सुमीत, दीपेश व कमलेश राठौर ने एक नई पहल व सामाजिक संदेश देने के साथ रूढ़िवादिता को खत्म करते हुए अलग-अलग कुल राशि ८७ हजार ५०० दान की। आपके सुपौत्र शेखर आर्य समाज के सक्रिय सेवानिष्ठ कार्यकर्ता है। जो सैलाना में आर्य समाज एवं धर्म प्रचार-प्रसार में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। शेखर आर्य वानप्रस्थ साधक आश्रम के सक्रिय साधक है। शेखर आर्य का मोबाइल नं. ९५८४२२६५५०

निम्न संस्थाओं को दान दिया गया

- प्रधानंत्री राहत कोष-५१०० रुपए।
- प्रधानमंत्री सेना कोष-५१०० रुपए।
- राठौड़ समाज सैलाना-५१००० रुपए।
- गौशाला बोदिना-११००० रुपए।
- गुरुकुल हरियाणा-५१०० रुपए।
- वनवासी कल्याण समिति सैलाना-५१०० रुपए।
- शांति वन समिति (मुक्तिधाम) सैलाना-५१०० रुपए।

श्रीमती अम्बादेवी जी झलौया का निधन

वैदिक संसार के आधार स्तम्भ सदस्य अभिन्न सहयोगी, वरिष्ठ समाजसेवी, जांगिड ब्राह्मण जिला सभा मन्दसौर के पूर्व जिलाध्यक्ष श्री अर्जुन जी झलौया, सेवानिवृत्त कार्यपालन यंत्री विद्युत मंडल मन्दसौर की धर्मपत्नी श्रीमती अम्बादेवी जी झलौया का निधन दिनांक ३० अप्रैल २०१७ को ७२ वर्ष आयु अवस्था में हो गया। आप पिछले कुछ दिनों से कैंसर रोग से पीड़ित होकर आपका उपचार इन्दौर में चल रहा था। आप अपने पीछे अपने पतिदेव, एकमात्र सुपुत्र श्री संजय झलौया तथा तीन सुपुत्रियां श्रीमती सुनिता प्रवीण जी शर्मा व्याख्याता सीनियर सेकंडरी स्कूल बांसवाड़ा, श्रीमती सविता पीयूष जी शर्मा शिक्षिका उज्जैन तथा कु. श्रद्धा झलौया फेशन डिजाइनर इन्दौर का भरापूरा परिवार छोड़ गई है। आप सरल, सौम्य तथा अतिथि सेवाभावी महिला थीं। ■

वैदिक संसार परिवार समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

आर्य जगत् की विविध गतिविधियों की चित्रावली

बेटी बचाओ आंदोलन का संदेश बेटी फ्रॉक प्रतियोगिता के माध्यम से

जयपुर। वैदिक वीरांगना दल के द्वारा बेटी बचाओ आंदोलन के तहत एक 'बेटी फ्रॉक प्रतियोगिता' का आयोजन राष्ट्रीय कार्यालय बी-१२३, मालवीय नगर, जयपुर पर किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनामिका शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम की शुरूआत यज्ञ, वैदिक मंत्रों व गायत्री मन्त्र पाठ के साथ की गई तथा प्रतियोगिता में शहर की अनेक महिलाओं व युवतियों ने भाग लिया। इस अवसर पर सभी महिलाओं व युवतियों ने बेटी बचाओ आंदोलन में सहयोग देने का वचन दिया। संरक्षक श्रीमती दुर्गा शर्मा ने बताया कि बेटी की उपेक्षा करना देश के ५० प्रतिशत (आधी आबादी) नागरिकों की उपेक्षा करना है। मुकुट बिहारी ने कहा कि आत्मा का स्वरूप एक है इसलिए स्त्री- पुरुष में भेदभाव करना अवैदिकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रिया अग्रवाल ने की। कार्यक्रम में सबसे अच्छी फ्रॉक बनाने वाली महिलाओं को पुरस्कार दिए गए। कार्यक्रम में बेटी बचाओ के संदर्भ में एक लघु प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसमें बेटियों के महत्व पर प्रकाश डाला गया। श्रीमती दुर्गा शर्मा की ओर से एक खेल खिलाया गया जिसमें सभी को बेटियों के महत्व पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए कहा गया। सबसे अच्छा विचार व्यक्त करने वाली महिला को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के अंत में अनामिका शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

प्यारचन्द जी राठौड़
सैलाना (म.प्र.)

विनम्र श्रद्धांजलि

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् को चरितार्थ करते हुए आप महानुभावों ने मानव जीवन को सार्थक करते हुए देवता तुल्य सुसंतानों का निर्माण किया।

शत-शत नमन तुम्हें

श्रीमती अम्बादेवी झलौया
मन्दसौर (म.प्र.)

आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर के निर्वाचन सम्पन्न

दिनांक १४ मई को वर्ष २०१७-१८ के लिए नवीन कार्यकारिणी के गठन हेतु निर्वाचन पर्यवेक्षक श्री रमेशचन्द्र जी गोयल की उपस्थिति में निर्विरोध सम्पन्न हो गए। प्रधान- डॉ. दक्षदेव गौड़, मन्त्री-डॉ. विनोद कुमार आहलूवालिया तथा कोषाध्यक्ष- सुश्री सुशीला शर्मा तथा अन्य नियुक्त किए गए।

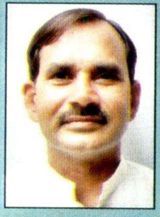

डॉ. दक्षदेव गौड़

डॉ. विनोद कुमार आहलूवालिया

इन्दौर से प्रकाशित होने वाले वैदिक संसार के पाठकों के लिए गर्व का विषय

सम्पूर्ण भारत में स्वच्छता अभियान में इन्दौर बना सिरमौर

स्वच्छता
सर्वेक्षण
२०१७

1

शीर्ष ५० शहरों
में मध्यप्रदेश के
११ शहर

इन्दौर देश का सबसे स्वच्छ शहर

हार्दिक हार्दिक बधाई

विश्वगुरुता की ओर बढ़ते चरण

प्रतिक्रिया-सन्देश

महर्षि पतंजलि के योगदर्शन के अष्टांग सूत्र यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि के दूसरे अंग नियम का उपांग 'शौच' अर्थात् शुद्धि। शौच दो प्रकार से आंतरिक और बाहरी। वर्तमान में बाहरी शुद्धि अर्थात् स्वच्छता का हल्ला मचा हुआ है। जब तक आंतरिक शुद्धि की ओर सरकार तथा देश के नागरिक ध्यान नहीं देते बाहरी शुद्धि का हल्ला मात्र पाखण्ड एवं ढोंग बनकर रह जावेगा। आंतरिक शुद्धि अर्थात् मन-मस्तिष्क की शुद्धि अर्थात् आंतरिक निर्मलता अर्थात् वैचारिक शुद्धता जो कि भोगवादी शिक्षा और अवैदिक सवैधानिक व्यवस्था की शुद्धि के बगैर सम्भव नहीं। आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से एक दिन भारत महर्षि पतंजलि के 'योग' अर्थात् आत्मा-परमात्मा के ज्ञान को आत्मसात कर आत्मिक बल के धनी चरित्रवान लोगों का देश बनकर (वर्तमान में सात करोड़ लोग मानसिकबीमारियों से ग्रस्त है। आत्महत्याओं-हत्याओं का सूचकांक बढ़ता जा रहा है। मात्र मध्यप्रदेश में गत छह वर्षों में २८ लाख प्रसवों कोई अता-पता नहीं है।) पुनः विश्वगुरु पद पर आरुढ़ होगा तब बाहरी स्वच्छता के साथ-साथ पर्यावरण प्रदूषण और अनेकानेक समस्याओं का स्वतः समाधान होगा।

आओ! महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश 'वेदो की ओर लौटो' को जाने, समझे और सार्थक करें।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित,१२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित
संपादक - गजेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७